विश्व-प्रसिद्ध

जन-कहानियाँ

विश्व-प्रसिद्ध

जन-क्रांतियाँ

लेखक
अभय कुमार दुबे

प्रकाशक

फैमिली बुक्स प्रा लिमिटेड
F 2/16 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली 110002.

वितरक

पुस्तक महल बारी बावली, दिल्ली 110006

प्रकाशक

फैमिली बुक्स प्राइवेट लिमिटेड

I 2/16 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 110002

© सर्वाधिकार 1988
फैमिली बुक्स प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली 110002

वितरक

पुस्तक महल, दिल्ली-110006

विक्रय केन्द्र

1 6686 खारी बावली दिल्ली 110006 ——— फोन 7319314 2911979
2 10 B नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली 110002 ——फोन 3268792 93 3779900

प्रशासनिक कार्यालय

I 2/16 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 110002
फोन 3276539 3272781 84

शाखा कार्यालय

22/2 मिशन रोड (रामा राव कम्पाउंड) बंगलौर 560027 फोन 334075

चेतावनी

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक के तथा इसमें समाहित सारी सामग्री (रेखा व छाया चित्र सहित) के सर्वाधिकार फैमिली बुक्स प्राइवेट लिमिटेड के पास सुरक्षित है। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम टाइटल डिजाइन पाठ्य सामग्री व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से ताड़ मरोड़ कर या अनुवाद करके किसी भी अन्य भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें अन्यथा कानूनी तौर पर वे हर्जे खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।

तृतीय संस्करण अक्तूबर 1991

सजिल्द लायब्रेरी संस्करण 36/-

मुद्रक क्वालिटी ऑफसैट प्रैस नई दिल्ली

11511
17 12-92

प्रकाशकीय

आज की दुनिया तेजी से दौड रही है। आज के पाठक को ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जो न केवल उसका मनोरजन करे अपितु उसकी ज्ञान-पिपासा को भी शात करे। हमारे प्रकाशनों मे इन्ही दोनो का सगम मिलता है। सुरुचिपूर्ण, कलात्मक एव ज्ञान-विज्ञान से युक्त हमारी पुस्तकों की प्रामाणिक सामग्री की लेखन-शैली ऐसी होती है कि एक बार उन्हें कोई पढ़ना शुरू कर दे तो पढ़ता ही चला जाये और दूसरी ओर दाम इतने वाजिब होते हैं कि साधारणतम आय वर्ग का पाठक भी उसे खरीद पाये। यही कारण है कि आज हमारी पुस्तकें पॉकेट बुक्स से बाजी लेती हुई लोकप्रियता एव विक्रय के नये प्रतिमान स्थापित करती जा रही हैं।

कुछ वर्ष पूर्व ज्ञान एव चिंतन के धरातल पर एक औसत पाठक को अतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोडकर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए, उसके ज्ञानक्षेत्र का चहुमुखी विस्तार करने के उद्देश्य से प्रारभ की गयी **विश्व-प्रसिद्ध शृखला** अब निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुकी है। लाखों-लाख पाठकों द्वारा इसे अब तक पढ़ा एव सराहा जा चुका है और उनमें जैसे इस शृखला की प्रत्येक पुस्तक को सग्रह करने की होड-सी लग चुकी है। दरअसल इस शृखला में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक अपन क्षेत्र से सबधित सभी उल्लेखनीय पक्षो का पूर्णरूप से उजागर करने वाला एक सचित्र **मिनि एनसाइक्लोपीडिया** है।

प्रस्तुत पुस्तक **विश्व-प्रसिद्ध जन-क्रातिया** इस शृखला की 25वी कडी है। पुस्तक मे 73 ईस्वी पूर्व **रोम** मे स्पार्टाकस नामक दास के नतत्व में हुए गुलाम-विद्रोह से लेकर **इग्लैंड, अमरीका, फ्रास, यूनान, भारत, इटली, सोवियत रूस, तुर्की, चीन, क्यूबा, वियतनाम** सहित 20वी शताब्दी तक की अनेक महान जन-क्रातियो की अमर-गाथाए प्रस्तुत की गयी हैं। लगभग 200 दुर्लभ चित्रो एव प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री से युक्त यह पुस्तक एक साधारण पुस्तक न होकर महान क्रातियो पर विशेष रूप से तैयार कराया गया एक अनूठा ऐतिहासिक दस्तावेज है।

इस पुस्तक की रचना में विशेषकर चित्रों एव नक्शो आदि के लिए सदर्भ ग्रन्थो के रूप में जिन विभिन्न देशी-विदेशी पुस्तकों की सहायता ली गयी है, उन सभी के लेखको एव प्रकाशको के हम हार्दिक आभारी हैं। कृपया पुस्तक के सबध में अपनी सम्मति अवश्य भेजे।

—प्रकाशक

क्रांति-क्रम

1	गुलाम-विद्रोह	9
2	इग्लैंड की क्रांति	16
3	ससदीय क्रांति	22
4	अमरीकी क्रांति	28
5	फ्रांसीसी क्रांति	36
6	यूनानी और दक्षिण अमरीकी क्रांति	43
7	जुलाई क्रांति और बेल्जियम की आजादी	48
8	भारतीय स्वतत्रता का प्रथम सग्राम	55
9	अमरीका की दूसरी क्रांति	63

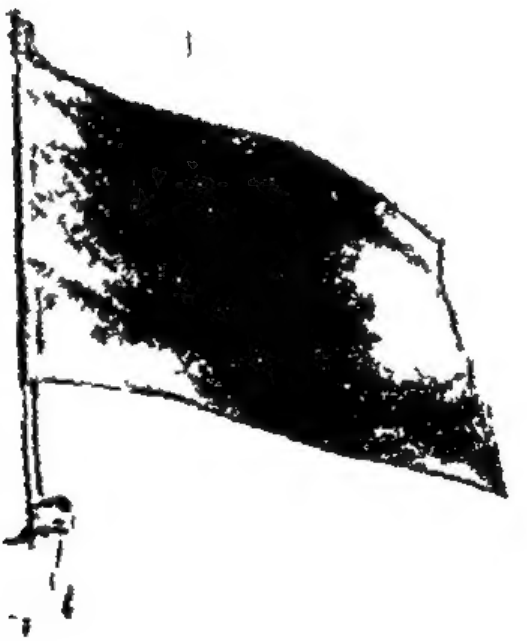

10	इतालवी क्रांति	71
11	पेरिस कम्यून	77
12	सोवियत अक्तूबर क्रांति	83
13	तुर्की की क्रांति	92
14	भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम	97
15	चीन की जनवादी क्रांति	113
16	क्यूबा की क्रांति	126
17	वियतनाम की क्रांति	131

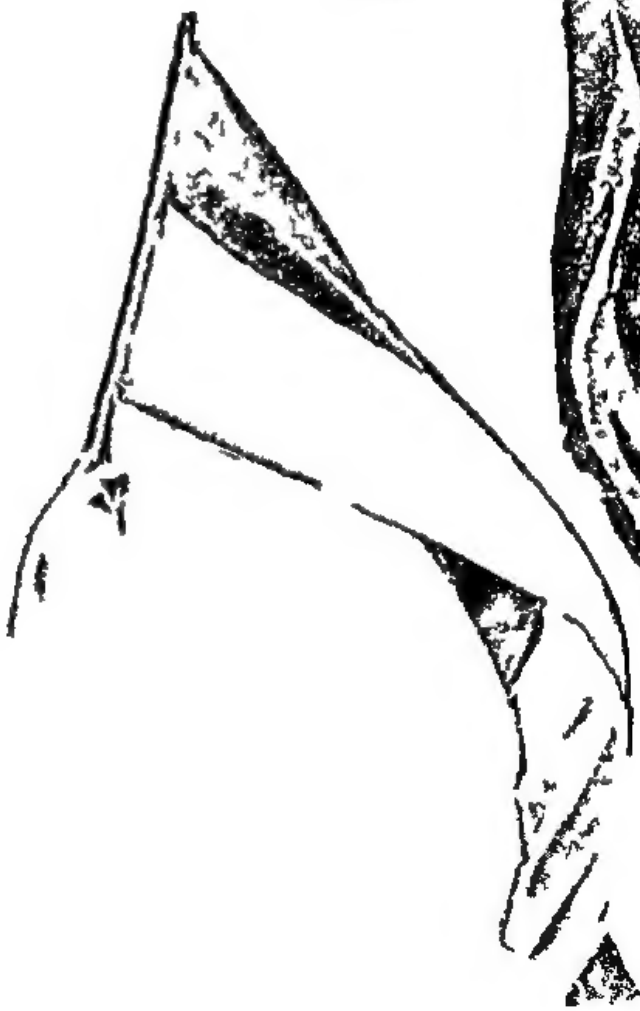

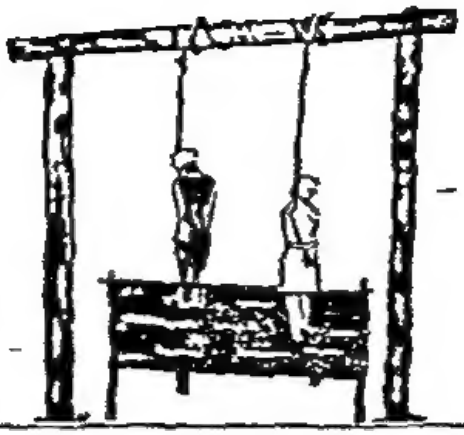

गुलाम-विद्रोह

(ईसा से 73 वर्ष पूर्व)

गृह-युद्ध में घिरे हुए पतनशील रोमन साम्राज्य के खिलाफ स्पार्टाकस नामक एक थ्रेसियन गुलाम के नेतृत्व में तीसरा गुलाम-विद्रोह दुनिया में जन-क्रांति की पहली मिसाल मानी जाती है। स्पार्टाकस ने रोमन सेनाओं को बुरी तरह शिकस्त देकर लाखों गुलामों की परतंत्रता की बेड़ियां काट डालीं। सेनापति क्रैसस के हाथों एल्पाइन दर्रों के मैदान में स्पार्टाकस को मात खानी पड़ी और छह हजार गुलाम योद्धा नृशंसतापूर्वक रोम से कापुआ जाने वाली सड़क के दोनों ओर सलीबों पर लटका दिये गये। अपनी नाकामयाबी के बावजूद स्पार्टाकस की विद्रोह की कहानी आज तक अमर है।

शोषण, अन्याय और दमन के खिलाफ बगावत और युद्ध की शुरुआत गुलामों के विद्रोह से होती है। गुलाम—जो रोमन साम्राज्य की सारी ताकत और वैभव के आधार थे। गुलाम—जो दास-मालिकों के लिए उत्पादन के चलते-फिरते औजार थे। गुलाम—जिनकी जिंदगी का एकमात्र मकसद मंडी में बिकना और अपने मालिक की आज्ञा का पालन करते हुए मर जाना मात्र था। गुलामों ने अपनी इस दारुण दशा से उबरने के लिए तीन बड़े विद्रोह किये जिनमें सबसे प्रभावशाली तीसरा विद्रोह ईसा के जन्म से 73 वर्ष पहले हुआ था। इस विद्रोह का नेता था थ्रेसियन ग्लैडिएटर गुलाम—स्पार्टाकस। स्पार्टाकस के नेतृत्व में लगभग चार साल तक गुलाम-सेनाओं ने उस समय दुनिया की सबसे शक्तिशाली मानी जाने वाली रोमन सेनाओं को पराजित कर एकबारगी तो जैसे पूरे साम्राज्य की नींव ही हिला डाली।

गुलाम-विद्रोह की पृष्ठभूमि समझने के लिए तत्कालीन रोमन साम्राज्य के चरित्र को जानना बहुत जरूरी है। ईसा के जन्म से पांच सदी पूर्व रोम के अंतिम राजा टार्क्विन द प्राउड (Tarquin the Proud) को उसके घिनौने कुकृत्यों के कारण गद्दी से उतार दिया गया। रोमनों ने तय किया कि वे राजशाही चलने ही नहीं देंगे। इसी विचारधारा के फलस्वरूप रोम

पोम्पी

तिबेरिअस व गेइअस

गणराज्य का गठन हुआ। रामन घरानो के उन मठियाओ ने, जिन्होने राजा के खिलाफ विद्रोह का नेतत्व किया था एक सीनेट बनायी जिसके दो सदस्य कौंसुल (Consul) कहलाय। य कौंसुल रोम के शासक ता थे पर उन्ह हर साल बाद बदल दिया जाता था। रोम दो भागों म बट गया। एक भाग पर पटीशियस (Petricians) अर्थात सामता का वर्चस्व था तो दूसरा भाग बहुमत वाले प्लेबियस (Plebeians) अर्थात् स्वतत्र नागरिको के अधिकार में था। प्लेबियस अपने प्रतिनिधि खुद चुनते थे। इन दोनो के अतिरिक्त रोम म एक तीसरा वर्ग भी था—गुलाम वर्ग। दरअसल यह वर्ग ही पूरे रोमन साम्राज्य के सुख और सम्पदा का आधार था पर इसे कोई अधिकार प्राप्त नही था। इस तरह रोमन प्रजातत्र हर तरह स दास मालिको के कूरूप समीकरणो पर टिका एक घिनौना प्रजातत्र था। रोमन साम्राज्य ने प्यूनिक युद्धो (Punic wars) को जीतकर अपनी ताकत काफी बढ़ा ली थी। ईसा स 133 साल पहल दो रोमन भाइयो तिबेरियस (Tiberius) और गइअस (Gaius) न कुछ समाज-सधार करने चाहे। इन दोनो का कहना था कि अमीरों को बडी-बडी जायदादे नही रखनी चाहिए। इसके पक्ष मे दोनो भाइ प्राचीन नियमों का हवाला देते। इस तरह की विद्रोही विचारधारा को भला कौन सहन करता। नतीजतन दोनों भाई अमीरो की साजिश स कत्ल कर डाल गये। इसी के साथ रोम म गृह-युद्ध छिडा जिससे रोम का सारा ढाचा चरमरा उठा। इसी जमाने म गुलामो न एक के बाद एक—तीन विद्रोह किय। दरअसल इन विद्रोहो के रूप म रोमन समाज की आतरिक टूटन और पतनशीलता को अभिव्यक्ति मिली।

साम्राज्य-लिप्सा शक्ति के मद दासों के मालिक होने के अमानवीय दभ और हर कीमत पर आनद भोगने की जिद ने विलासी रोमनों को पूरी तरह स निकम्मा, आलसी काहिल थुलथुल और लम्पट बना दिया था। अप्राकृतिक मैथुन, पशु मैथुन अजीब अजीब तरह के भोजनों के चाव और खून में तरबतर गुलाम-योद्धाओ को अखाड़े मे द्वद्वरत देखकर रोमाचित होना उस जमाने के रोमनो की जीवन-शैली बन चुकी थी। इस बबर शैली की सीढ़ पर सबसे कडी चोट स्पार्टाक्स के विद्रोह न की थी। दो गुलाम विद्रोह हो चुके थे। पहला गुलाम विद्रोह बडी आसानी स कुचला जा चुका था। दूसरे गुलाम विद्रोह को कुचलने के लिए पोम्पियस मगनस (पोम्पी) (Pompeius Magnus) जैसे जनरल को सेनाए लेकर

तत्कालीन रोमन साम्राज्य का मानचित्र

जाना पडा था। उसी समय तीसरा गुलाम-विद्राह भी रोम साम्राज्य के शरीर म भीतर-ही-भीतर विषैली गाठ की तरह पक रहा था।

एक तरह मे खुद रामनो न ही गुलामो को लडना सिखाया था। उन दिनो रोमनो का प्रिय मनोरजन युद्ध-कला मे प्रशिक्षित गुलाम ग्लैडिएटरो (Gladiators) का द्वद्व होता था। इन गुलामो को खूब अच्छा खिलाया-पिलाया जाता कसरत करवाई जाती और गुलामी के दूसर काम नही करवाये जाते। उन्हे सतुष्ट रखन के लिए उनक मालिक औरत तक मुहैया करात। गुलामो को प्रशिक्षित करन वाल प्रशिक्षक लानिस्ता (Lanista) कहलात थ। राम म जगह-जगह अखाडे बन गये थे, जहा दास-मालिक भारी कीमत चुकाकर मनचाह जोडा का द्वद्व देखते थे। लानिस्ता रामनो की रक्त-लिप्सावत्ति का लाभ उठाकर बशुमार दौलत कमा रहे थे। उन्होने गुलामो के द्वद्व-युद्धो का रोमाच की चरम सीमाओ पर पहुचा दिया था। थ्रेस (Thrace) क रहन वाले गुलाम एक छोटा-सा मुडा हुआ छुरा चलाने म बड प्रवीण होत थ ता अफ्रीका के नीग्रो मछली पकडन क जाल व त्रिशूल से लडन म। एक थ्रेसियन क छुर व अफ्रीकन हब्शी क त्रिशूल व जाल की टक्कर दखन के लिए सारे रोमन व्याकुल रहत थ। गुलामो के द्वद्व के लिए कापुआ (Capua) नगर म पत्थरो म एक बहद शानदार अखाड का निर्माण किया गया था। इसी अखाड के पास लानिस्ता लेण्टुलस बाटियाटस (Lantulas Batiatus) ने गुलामो को द्वद्व सिखाने का स्कूल खोला हुआ था जो उस जमान का अपनी तरह का सबस बडा स्कूल था।

दखन म मोट और थुलथुल लानिस्ता बाटियाटस की नजर गुलामो का चुनन म काफी

तज थी। वह उन्हे दूर-दूर से खरीद लाता। रोम की गलिया मे गुडागर्दी से अपना करियर शुरू करने वाले बाटियाटस ने इस अखाडेबाजी स इतना धन बटोरा कि वह राम के चार सबस बड़े मकाना का मालिक बन बैठा। बाटियाटस अपन काम क गुलाम खाना म ढूढ़ता। खान के दरागाआ को रिश्वत खिलाकर वह एस गुलामा का पता लगा लेता, जा विद्राही स्वभाव क होते। फिर बाटियाटस उन्हे खरीद लता। खानो का काम सबसे कडी महनत मागता था। बाटियाटस के अनुसार जा गुलाम उस कडी महनत को झलकर भी लगातार बगावत क मूड मे रहता हा उसके अच्छा याद्धा साबित हाने की सभावनाए ज्यादा रहती थी। बाटियाटस इन गुलामा को द्वद्व युद्ध का प्रशिक्षण देकर एक दिन उनकी जजीरे खोलकर अखाड़े म धकेल देता। याद्धा गुलामो को ऐसा लगता कि मानो वे थोडी दर के लिए दमघाटू कैद से आजाद हो गय हैं। वे इस लालच मे जी-जान से लडत कि अगर जीत गय तो अगली लडाई मे उन्हे फिर आजाद होने का मौका मिलेगा। तीसरे गुलाम युद्ध की जड म ग्लैडिएटरो क मन मे आजाद होने की यही भावना चिगारी के रूप म विद्यमान थी।

बाटियाटस न नूविया (मिस्र) की साने की खाना से स्पार्टाकस को खरीदा था। घुघराले बालो टूटी हुई नाक, सामान्य कद-काठी ओर गहरी काली आखो वाला यह गुलाम स्वभाव से बेहद विनम्र गभीर और नेतत्व के प्राकतिक गुणो स युक्त था। अन्य थ्रेसियन गुलाम उस उम्र म छोटा होने पर भी 'पिता कहकर सबाधित करते। स्पार्टाकस आदतन कम बालता। पर गुलामो के बीच उसके आदेश बिना किसी जोर-दबाव के माने जात।

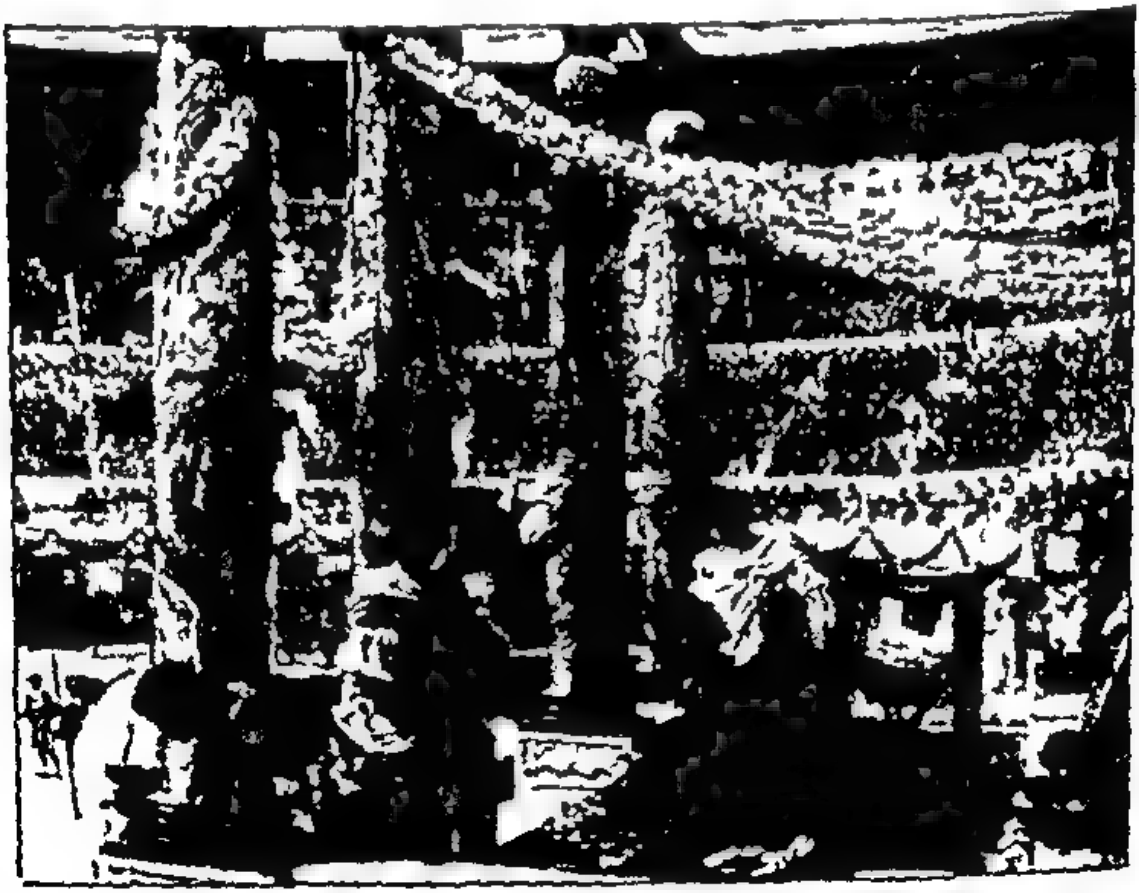

अखाड़े में द्वद्व युद्धों का आनद लेते रोमन

कापुआ म अपन स्कूल के अदर बाटियाटस ने स्पार्टाकस समत दो सौ ग्लैडिएटरा को पाल' रखा था। इनम से अधिकाश यहूदी, नीग्रा ओर थ्रेसियन गुलाम थे। कई युद्ध-कलाओ म निष्णात और शरीर स मजबूत इन ग्लैडिएटरो के दिला मे दास मालिका क प्रति गहरी घृणा भरी थी। इसी अखाडे म बाटियाटस ने स्पार्टाकस का मनारजनार्थ एक जर्मन औरत सौंपी, जिसका नाम बारीनिया था। बारीनिया ने स्पार्टाकस को अपना पति माना और अत तक उसक कधे स कधा मिलाकर लडी।

एक दिन दा रोमन नौजवान द्वद्व-युद्ध दखने की लालसा म कापुआ आय और बाटियाटस से 25 हजार दीनार म दा जाडा का आमरण द्वद्व दखने का सौदा किया। ब्रेकस और कैमस नामक इन रोमना ने ग्लैडिएटरा म स खुद स्पाटाकस, डाबा नामक एक नीग्रा और डेविड नामक एक यहूदी और एक अन्य नस्ल के गुलाम का चयन किया। पहला द्वद्व यहूदी और चौथे ग्लैडिएटर म हुआ। यहूदी विजयी रहा पर उसन पराजित ग्लेडिएटर का क्त्ल करन स इकार कर दिया। यह विद्रोह की पहली चिगारी थी। फिर बारी आयी स्पाटाकस और डाबा के युद्ध की। इससे पहल कि रफ्री की सीटी बजती डाबा ने स्पार्टाकस से लडन क बजाय अपना त्रिशूल ताना ओर भूख भडिय की तरह रामना पर झपट पडा। सैनिका न डाबा को फुर्ती से बिना चूक तत्काल भालो स गाद डाला। पर विद्राह की बुनियाद पड चुकी थी। बाटियाटस न सजा देने और गुलामा पर अपना आतक जमान के उद्देश्य स डाबा क बाद एक और बकसूर नीग्रो गुलाम का अन्य गुलामा के सामने बल्लमा से छद डाला पर इसके

ग्लैडिएटर-गुलामो का द्वद्व

बावजूद विद्राह न रुका। स्पार्टाकस ने उस विद्राह की कमान सभाली। क्रिक्सस और गानिक्स नामक दो गुलाम इस विद्राह की अगुआई म उसके दाय और बाय बाजू बने।

डाबा और दूसर नीग्रा गुलाम की लाश ग्लैडिएटरा का सबक सिखाने के लिए उनक सामन सलीब पर टाग दी गयी पर स्पार्टाकस ने ता इन लाशा म कुछ और ही सबक सीखा। उसने तय किया कि वह अब किसी ग्लैडिएटर से नही लडेगा। जैस ही उसने साथी याद्धाआ को अपना निर्णय सुनाया सभी विद्रोह करने के लिए मचल उठे। सुबह की कसरत क बाद व खान क कमर म जमा हुए। स्पार्टाकस न उन्ह एक छोटा सा भाषण दिया। सबसे पहल गुलाम याद्धाआ न अपने कोडाधारी दरागाआ और उस्तादा का सफाया किया। तीन पीढ़ी की गुलामी का जुआ अपन कधा पर ढान वाल स्पार्टाकस ने पहली बार गुलामा के साथ आजादी का अमत चखा। फिर गुलाम ग्लैडिएटर अखाड म तैनात चालीस सैनिको पर टूट पडे। भरपूर नफरत मे की गयी इस पत्थरा ओर डडा की मार के सामने य सैनिक थोडी दर भी न टिक सके।

स्पार्टाकस न अब बाकायदा ग्लेडिएटरो का नेतत्व सभाल लिया। बाटियाटस के शस्त्रागार स हथियार लकर उसन व्यूह-रचना की और कापुआ स आने वाली सैनिक टुकडियों को ध्वस्त किया। उन्होने सबसे पहले माउट वसुवियस (Mt Vesuvius) का अपने अधिकार म लिया। रोम की सीनेट न विद्राह की खबर सनने पर ज्यादा गभीरता नही दिखायी और 'मुट्ठी भर बागिया' का कुचलने क लिए बारिनियस के नतत्व मे तीन हजार सैनिक भज। रोमन सेना रास्ते मे मिलने वाल गुलामा पर जुल्म-अत्याचार करती हुई आगे बढ़ी। गुलाम सेना ने उस पर रात मे हमला किया। रोमन उस समय आमोद-प्रमोद से थके हुए सो रहे थे। एक एक रोमन बीन-बीनकर मार डाला गया। स्पार्टाकस ने पोर्थुस नामक एक सैनिक का राम का राजल्ड देकर कहा, 'जाओ, सीनट से कहो अब कोडो का सगीत सुनत-सुनते हम तग आ चके हैं अब हम गुलाम नही रहना चाहत।

स्पार्टाकस की फौज जहा-जहा से गुजरती गुलामा क हुजूम के हुजूम उसमे मिलत जाते। धीरे-धीर उसकी फौज में एक लाख आदमी हो गय।

रामनो ने स्पार्टाकस के दमनार्थ पुब्लियस के नेतृत्व म एक बडी सेना भेजी। स्पार्टाकस ने इसके खिलाफ एल्पाइन के दर्रो मे कामयाब छापामार युद्ध लडा और जीत हासिल की। स्पार्टाकस की चौथी जीत ममियस नामक अनुभवी सेनापति के खिलाफ थी। रोमन फौज खदेड दी गयी। इतिहास मे रामन फौज म कभी ऐसी भगदड न मची थी। वापस आये हर दस भगोडो मे से एक का कायरता के अपराध में मौत की सजा दी गयी। बाद मे स्पार्टाकस ने ममियस और सवियस नाम के दो रामन सैनापतियो को गिरफ्तार करके ग्लैडिएटरो की तरह आपस मे लडवाकर अपनी बदले की आग को ठडा किया। गुलामो न लडने का एक खास तरीका खाज निकाला था। वे नक्शा बनाकर अपनी रणनीति तय करते और अपने इच्छित मैदान म लडते। रोमन सेनाए अति आत्म-विश्वास के कारण अपनी व्यूह-रचना तोड देती और हार जाती। एक बडी लडाई मे तो स हजार गुलाम मारे गये पर उनमें से एक की भी पीठ पर घाव नही था। रोमना क दिलो दिमाग म गुलामो की बहादुरी की दहशत बैठ गयी।

आखिर म रामन सेनापति मार्कुस लिसीनियस क्रैसस (Marcus Licinius Crassus) क नतत्व म सबसे बडी सना गुलामा म लडन गयी और उन्ह परास्त कर दिया। स्पाटाक्स लडता हुआ मारा गया। 6 872 गुलामा को गिरफ्तार कर राम स कापुआ जान

किर्क डगलस की फिल्म स्पार्टाकस का एक दृश्य

वाले मार्ग के दोनो ओर लाइन से सलीबा पर लटका दिया गया। वे वही लटके-लटके मर गये। किवदती है कि स्पार्टाकस की बीवी वारीनिया किसी तरह स्पार्टाकस के बच्चे के साथ भाग निकली। स्पार्टाकस की नाकामयाबी गुलाम-विद्रोहों का अत नही था। उसके बाद भी कई गुलाम-विद्रोह हुए।

आदि विद्रोही स्पार्टाकस की महान स्मृति मे हावर्ड फास्ट ने 'स्पार्टाकस' नामक अमर उपन्यास लिखा और किर्क डगलस ने इसी नाम की अमर फिल्म बनायी। पर स्पार्टाकस को इससे भी बडी श्रद्धाजलि ता आने वाली उन पीढ़ियो ने दी जिन्होंने मानवीय आजादी के लिए सघर्ष किया और कुर्बानिया दी। ■■

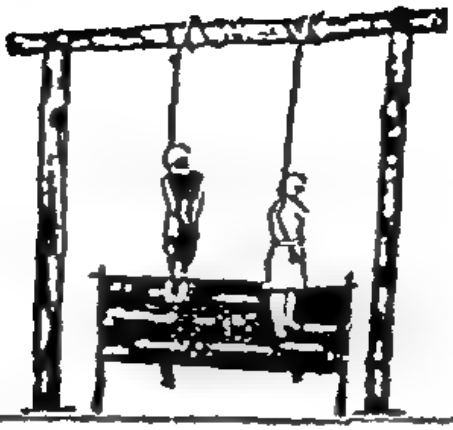

इग्लैड की क्राति

(1628 1658)

ओलीवर क्रॉमवेल के नेतृत्व मे हुई इग्लैड की क्राति ने राजशाही के उस युग मे पहली बार नागरिक सरकार की धारणा को सामने रखा। धार्मिक असहिष्णुता के युग मे इस क्राति ने उपासना-पद्धति की आजादी को अपना ध्येय बनाया। राजशाही की निरकुशता और ससद के दुरभिसधपन के खिलाफ किसानो के बेटे तलवार लेकर लडे। क्राति का पतन क्रॉमवेल की फौजी तानाशाही मे हुआ और इग्लैड ने फिर एक बार राजा को स्वीकार कर लिया। पर इस क्राति के गर्भ मे भविष्य के ससदीय लोकतत्र के बीज छिपे थे।

17वीं शताब्दी इग्लैंड की राजशाही क खिलाफ एक क्रातिकारी बेचैनी लेकर आयी। लगता था कि जैसे पूरा दश दा भागो म बट गया है। एक तरफ पुराने इग्लैंड के समर्थक थ, जा चर्च, राजा और परपरागत समाज व्यवस्था म विश्वास करते थे। दूसरी ओर धार्मिक सहिष्णुता और बाइबिल के पवित्र सूत्रो मे उद्घोषित आजादी क समर्थक थे। ऐसा होना ही था। युगप मे विज्ञान के विभिन्न क्षनो म काफी तर्कसगत अनुसधान हो रहे थे। इस वैज्ञानिक एव बौद्धिक चतना को सामाजिक अभिव्यक्ति धार्मिक कट्टरता के विरोध मे मिली। सघर्ष पहले राजशाही और ससद के बीच शुरू हुआ। फिर इसने गृह-युद्ध का रूप ले लिया।

ससदीय सेनाओ का नेतृत्व ओलीवर क्रॉमवल (Oliver Cromwell) क हाथो म था। इस फौज मे किसानो के बेटे लड रहे थे। मुकाबले म शाही सना थी जा पराजित हुई और किंग चार्ल्स-प्रथम को गिरफ्तार कर लिया गया। इस गृह-युद्ध का अत चार्ल्स के मृत्यु दड और इग्लैंड से राजशाही के सफाये के रूप म हुआ। क्रॉमवल की मृत्यु के बाद इग्लैंड की जनता ने फिर से राजशाही मे पनाह ढूढ़ी लेकिन इस क्राति की विरासत के रूप म सहिष्णुता, दास-प्रथा विरोध नारी-मुक्ति आदि विचारों को इग्लैंड क समाज म मान्यता मिल गयी। इस वैचारिक आधार पर भविष्य के इग्लैंड की नींव पडने वाली थी।

ओलीयर क्रॉमवेल और इग्लैड का मानचित्र

सन् 1628 से लेकर सन् 1658 तक चलने वाली इस सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल की पृष्ठभूमि मे फ्रास मे हुई घटनाए थी। फ्रास की जनता ने उन दिना सामाजिक और आर्थिक जीवन पर राजा का पूरा अधिपत्य स्वीकार कर लिया था। इग्लैंड क राजा ने भी इसी तर्ज पर फ्रास के नक्शे-कदम पर अपनी जनता का चलाना चाहा। पर दोना देशो की परिस्थितियो मे काफी अतर था। अग्रेज समाज ने इसे हजम करने से इकार कर दिया। ससद ने सन् 1628 मे चार्ल्स-प्रथम को याद दिलाया कि परपरागत अग्रज स्वतत्रताओ का उल्लघन नही किया जाना चाहिए। पर चार्ल्स ने इस 'पिटीशन ऑफ राइट्स' (Petition of Rights) पर कान नही धरा। उसन निरकुश भाव से ससद को भग कर दिया और अगल ग्यारह साल तक एक बार भी ससद को बुलाने की जहमत नही उठायी। इस तरह राजशाही पूरी तरह से तानाशाही मे बदल गयी। चार्ल्स का मुख्यमत्री थॉमस वेंटवर्थ (Thomas Wentworth) स्ट्रैफोर्ड का अर्ल (Earl of Strafford) था। उसने इग्लैंड मे भी वही नीतिया अपनायी, जो फ्रास म कामयाब हा चुकी थी। जनता पर से उठाये गय पुराने टैक्स फिर लगा दिये गये।

इसी समय धार्मिक क्षेत्र म एक बडी विस्फोटक घटना हुई। केंटरबरी (Canterbury) के आर्कबिशप विलियम लोड (William Laud) न अग्रेज उपासना-पद्धति (Anglican Liturgy) मे कुछ सुधार कर डाले। 23 जुलाई, 1637 को सट जाइल्स एडिनबरा के चर्च म नयी प्रार्थना पुस्तक पहली बार पढ़ी गयी। रूढ़िवाद के समर्थक तो पहले से बेहद नाराज थे। चर्च मे ही एक महिला ने पूरी ताकत से कुर्सी उठाकर आर्कबिशप के सिर पर दे मारी। स्कॉटलैंड की जनता ने एडिनबरा के किले की प्राचीरो के नीचे भारी सख्या मे जमा होकर राष्ट्रीय प्रतिज्ञापत्र (National Convenent) पर

क्रॉमवेल द्वारा लाग पार्लियामेंट का अंत

हस्ताक्षर किये। जिसका अर्थ था कि उन्ह इन धार्मिक सुधारो में आस्था है। कुछ लोगों ने तो जोश म भरकर अपने खून से दस्तखत किये थे। इस घटना स जिस युद्ध की शुरुआत हुई, उसने चार्ल्स को ससद बैठाने के लिए मजबूर कर दिया। सन् 1640 म पहली ससद बुलायी गयी, जो थोडे दिन ही चली। फिर सन् 1640 से सन् 1653 तक चलने वाली ससद बैठायी गयी, जिसे लाग पार्लियामेट (Long Parliament) के नाम से जाना जाता है।

ससद ने राजा को मजबूर किया कि वह 'एक्ट ऑफ अटेण्डर' (Act of Attainder) को मजूरी द जिसके तहत मुख्यमत्री अर्ल ऑफ स्ट्रैफोर्ड को मृत्यु दड दिया जाना था। ससद मे सरकार-विरोधी वक्ताओ ने राजशाही की धज्जिया उडा दी। दो साल बाद राजशाही ने फिर अपना रुतबा जमाना चाहा। चार्ल्स ने ससदीय नेताओ को गिरफ्तार करना चाहा पर नाकामयाब रहा। ससदीय नेताओं को लदन शहर मे पनाह मिली। इस पर चार्ल्स न लदन पर हमले का फैसला किया और वह राजधानी छाड नाटिघम (Nottingham) मे सेना तैनात करने चला गया।

यही से एक लबे गृह-युद्ध की शुरुआत हुई। उन दिना 42 वर्षीय ओलीवर क्रॉमवेल ससद में कैम्ब्रिज (Cambridge) की नुमाइदगी करते थे। क्रॉमवेल ने बाइबिल की मूल पवित्रता मे विश्वास करने वालो और पादरियो के कर्मकाण्डा व रूढ़िग्रस्तता का विरोध करने वालो के बीच खासी प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी। सन् 1641 मे राजा की अनियमितताओं और ससद के उद्देश्या को लेकर ससद में इतनी उत्तेजक बहस हुई कि सदन मे ही तलवारें खिच गयी। रक्तपात होते होते बचा। राजा के खिलाफ ग्राड

सैनिको को सबोधित करते हुए क्रॉमवेल

रिमास्ट्रस (Grand Remonstrance) यानी घोषणा-पत्र पारित हो गया। चार्ल्स ने इस अपने लिए निर्णायक चुनौती माना। उसने व्हाइट हॉल (White Hall) छोड दिया ताकि लडाई के लिए फौज तैयार की जा सके। क्रॉमवल ने ससद की रक्षा के लिए 500 पौण्ड दान किये और कैम्ब्रिज म जाकर किसानो की सेना बनायी जिसके लडाक आइरनसाइड्स (Ironsides) क नाम से जाने गये।

आइरनसाइड्स ससदीय सना के हरावल म लडे। उन्होने बेमिसाल बहादुरी और अनुशासन का परिचय दिया। पेशे से किसान आलीवर क्रॉमवेल ने अपनी घुडसवार सेना का नेतत्व करने मे अद्भुत सैन्य-कुशलता दिखायी। क्रॉमवेल के सैनिक अपने को बाइबिल क सिपाही समझते। उन्ह लडाई क मैदान म ही बाइबिल द्वारा प्रदत्त सामाजिक आजादी क ऊपर लबे-लबे प्रवचन सुनाये जाते। एजहिल (Edgehill) की पहली लडाई से क्रॉमवल ने जो सबक सीखा उसने ससदीय सेना की अगली जीतो का रास्ता खोला। सन् 1644 मे लफ्टीनेट जनरल बन चुके क्रॉमवेल न मार्स्टन मूर (Marston Moor) के मैदान में प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert) की शाही सेना को करारी शिकस्त दी। इस मुठभेड म क्रॉमवेल ने अपने घुडसवारो के साथ निर्णायक भूमिका निभायी। उन्होन शाही फौज के पिछले हिस्स पर हमला किया और कुछ ही देर मे उसे मैदान म बिछा दिया। क्रॉमवेल का दूसरा हमला राजा की सेना के केन्द्र पर हुआ और जीत हासिल कर ली गयी। सन् 1645 मे क्रॉमवल, फेयरफैक्स (Fairfax) और आइरेटन (Ireton) जैसे तीन सेनापतियो के मिले-जुले नेतत्व मे न्यू मॉडल आर्मी (New Model Army) ने जीतो का सिलसिला शुरू किया। उसने किलो, काउटियो और रेजीमटों का अपने सामने झुकने क लिए विवश कर दिया।

अगल तीन साल राजा ससद और न्यू मॉडल आर्मी के बीच त्रिकाणात्मक सघर्ष के साल थे। ससदीय नेता ढुलमुल रवैया अख्तियार कर रहे थे। फौज चाहती थी कि धार्मिक सहिष्णुता का शासन हो क्योंकि इसी धार्मिक मुद्दे पर तो किसानो के बेटे अपना खून बहाने

30 जनवरी, 1649 को चार्ल्स प्रथम की जीवन लीला समाप्त कर दी गयी।

का तैयार हुए थ। ससद ने आदश दिया कि सेना भग कर दी जाये, पर सेना ने अपनी तनख्वाह की माग की और भग होन स इकार कर दिया। इस पर ससद ने क्रॉमवेल को समझौता-वार्ता क लिए भजा।

क्रॉमवेल मना का समझाने क बजाय उनक साथ हो गये। पर सेना और ससद के विवाद ने चार्ल्स को एक बार फिर महत्त्वपूर्ण बना दिया। सन् 1647 में स्कॉटलैंड वाला ने अपनी पनाह म छिप हुए चार्ल्स को ससदीय कमिश्नरा के हवाले कर दिया और राजा ने अपनी चालें खेलनी शुरू कर दी। जनरल फेयरफैक्स की हिरासत म चार्ल्स को हर तरह की सुविधाए मिल रही थी। चार्ल्स ने पूरी कोशिश की कि वह फौज को सीधे प्रेसबिटेरियस (Presbyterians) स लडा दे। वल्स (Wales) म राजा के समर्थका न विद्रोह किया पर क्रॉमवल न सख्ती से इस विद्रोह का दबा दिया। क्रॉमवेल के नेतत्व मे फौज ने राजा के ऊपर मकद्दमा चलाने का फैसला किया। एक क्रांतिकारी न्यायाधिकरण बनाया गया जिसका नाम हाई कार्ट ऑफ जस्टिस' था। 27 जनवरी, 1649 को इस अदालत न चार्ल्स की मौत के वारट पर दस्तखत कर दिये।

क्रॉमवेल की फौजा न आइरलैंड और स्कॉटलैंड म भारी जीते हासिल की। सन् 1650 आत-आत दक्षिण इग्लैंड पूरी तरह क्रॉमवल के शासन की गिरफ्त मे आ गया। फिर चार्ल्स द्वितीय ने बगावत करन की कोशिश की। चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के बाद ससद

न फोज का आग्रह मान लिया था। क्रॉमवेल न इस बगावत का वर्मेस्टर (Worcester) की लडाई म कुचल डाला। ससद न क्रॉमवल का राजनतिक शासक ता मान लिया पर धार्मिक मसल का लकर समद और क्रॉमवल क बीच कभी नही पटी। क्रॉमवल उपासना-पद्धति की आजादी म आर ससद पुरान कर्मकाडा म विश्वास रखती थी। क्रामवल यह भी चाहत थ कि सरकार चुनी हुई नागरिक सरकार हा। ससद ही कर लगाय आर कानून बनाये। कायपालिका कानूनी दायर म रहकर काम करे। मोजूदा ससद यह सब मानन का तेयार नही थी।

अप्रेल, 1653 म ससद को अपन आग झकान के लिए क्रॉमवल न अचानक सदन म प्रवश किया। हाउस ऑफ कामस म क्रॉमवल न अपन विराधी सासदा का शराबी, वश्यागामी ओर भ्रष्ट करार दिया। क्रॉमवल क तिलगा न अदर घुसकर सभी का जबरन निकाल दिया। ससद क दरवाज पर ताला लगाकर लिख दिया गया 'दिस हाउस इज ट लट" (यह स्थान किराय क लिए खाली है)। फिर क्रॉमवेल न अपनी ससद बनान की नाकाम काशिश की आर आखिर म व 'लाड प्राटक्टर ऑफ इग्लेंड हा गय।

मई, 1660 को चार्ल्स द्वितीय गद्दी पर बैठा।

यही स क्राति की असफलता की शुरुआत हुइ। क्रॉमवल एक नागरिक सरकार स्थापित करन क बजाय फौजी तानाशाही स्थापित कर बठ। उन्हान इस क्दर किफायती रवैया अपनाया कि जनता परशान हा गयी। इग्लेंड म होन वाल परपरागत आमाद-प्रमाद बद हा गय। इन्ही परिस्थितिया मे राजशाही के ममथन की भावनाय उभरनी शुरू हुइ।

सन् 1658 म बीमारी स क्रॉमवल का निधन हा गया। एक बार फिर राजशाही ओर ससद की स्थापना हुइ क्याकि क्रॉमवेल क बटे रिचर्ड के पास न ता अपन पिता की क्रांतिकारी विरासत थी आर न ही राजकीय कुशलता। मई, 1660 म चार्ल्स-द्वितीय को गद्दी पर बैठाया गया। लगातार उथल-पुथल और युद्ध से जनता ऊब चुकी थी। लकिन इग्लैंड की राजनीति स जुड लागो मे अपन अधिकारो का कायम रखन की प्रवत्ति भी जार पकड चुकी थी। इसी प्रवत्ति ने बाद मे पश्चिमी किस्म के लोकतत्र को जन्म दिया। ■■

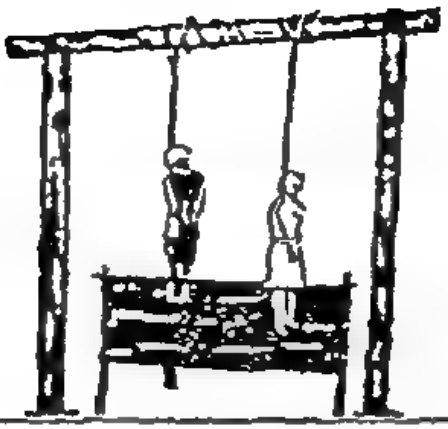

ससदीय क्राति

(1688 1689)

पहली बार 17वीं शताब्दी मे ससद ने राजा को उसके दैवी अधिकारो से वचित कर दिया। आश्चर्य की बात तो यह थी कि इतने बडे सामाजिक-राजनैतिक परिवर्तन मे खून की एक बूद भी नहीं बही। ऊपर से देखने म यह कैथोलिको और प्रोटेस्टेटो का झगडा भले ही दिखायी दे, पर यह धार्मिक विषाद परिवर्तनकामी गतिशीलता का मिजाज रखता था। जेम्स की सत्ता के बाद विलियम और मैरी को सिंहासन तो मिला लेकिन न तो वे कर लगा सकते थे और न ही सेना रख सकते थे। ससदीय क्राति ने ब्रिटेन को दुनियाभर मे व्यापार करने की दिशा मे अकेला और लोकतत्र की आधारशिला रखी।

ओलीवर क्रॉमवेल की क्राति ने इग्लैंड का एक एस रास्ते पर डाल दिया था जिस पर राजशाही न अधिकारो का कम हात जाना एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गयी थी। विज्ञान क आविष्कार युगप म पूर मानवीय चिंतन पर असर डाल रह थ। कॉस्मिक फर्नेस (Cosmic Furnace) का निर्माण करक औद्योगिक क्राति की दिशा म एक कदम और बढ़ाया जा चुका था। हालाकि मजिल अभी दूर थी पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय म सन् 1687 म एक युवक गणितज्ञ आइजक न्यूटन (Issac Newton) न अपनी पुस्तक प्रिंसिपिया (Principia) का प्रकाशन किया था, जिसम गुरुत्वाकर्षण का सिद्धात पश किया गया था। भविष्य के विज्ञान और समाज पर इस महान पुस्तक का प्रभाव पडना ही था। जाहिर था कि युराप का आदमी धार्मिक परमवाद (Religeous Absolutism) हाकर अपन अधिकारा क प्रति सजग हा रहा था।

राजनैतिक रूप स युराप उस समय फ्रास क राजा लूई चौदहवे (Louis XIV) की साम्राज्यवादी महत्त्वाकाक्षाआ क खिलाफ सघर्ष कर रहा था। लूई पूरे युराप का तानाशाही बनने का सपना बुन रहा था। उसने मैडम डि मटनन (Madame de Maintenon) से गुप्त विवाह भी रचा लिया था। इस पत्नी न लूई का कैथोलिका क

समर्थन की प्रेरणा दी। प्रोटेस्टेंटों की तो जैसे आफत ही आ गयी। उन्हें जबरन कैथोलिक बनाया जाने लगा। जैसे ही लूई को लगा कि सभी प्रोटेस्टेंट कैथोलिक बनाये जा चुके हैं उसने नांटस की राजाज्ञा (Edict of Nantes) को दोबारा लागू कर दिया। बचे हुए प्रोटेस्टेंटों को कैथोलिक बनने के लिए केवल 15 दिन दिये गये। करीब दो लाख प्रोटेस्टेंट अपने धर्म की आन पर अपना सब कुछ छोड़कर चल दिये। पिलिग्रिम फादर्स के नाम से विख्यात इन शरणार्थियों को इंग्लैंड यूनाइटेड प्रोविंस और बेडनबर्ग में पनाह मिली। इन वंचित शरणार्थियों ने हर जगह कैथोलिकवाद के प्रति नफरत फैलायी जिससे लोगों के दिमागों में उथल-पुथल मच गयी और वे सरकार के खिलाफ विद्रोह की बात करने लगे।

इसी पृष्ठभूमि में इंग्लैंड में सैनिक क्रांति का जन्म हुआ। क्रॉमवेल की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठे चार्ल्स द्वितीय का निधन 6 फरवरी 1685 को हुआ और ड्यूक ऑफ यार्क जेम्स-द्वितीय का सिंहासन मिला। जेम्स को अपनी गद्दी सुदृढ़ रखने के लिए युद्ध लड़ना पड़ा। उसके भतीजे ड्यूक ऑफ मनमाउथ (Duke of Monmouth) के विद्रोह का दमन के लिए सेजमूर (Sedgemoor) की लड़ाई हुई जिसमें हारकर मनमाउथ भागा पर मृत्यु-दंड से नहीं बच पाया। उसके समर्थकों को भी मृत्यु न्यायाधीश जेफरीज

दो लाख प्रोटेस्टेंट अपना सब कुछ छोड़कर चल दिये।

(Jeffreys) ने कड़ी सजाएं दीं। ये मुकदमे बेहद बदनाम हुए। जेफरीज पहले भी अपने रवैये के कारण एक क्रूर जज के रूप में कुख्यात हो चुका था। इसी तरह के सलाहकारों और अधिकारियों ने जेम्स द्वितीय को उद्दण्ड और जिद्दी बना दिया।

जेम्स के अंदर कई गुण भी थे। वह एक बेहतरीन नाविक था पर राजकाज के मामले में बेहद कच्चा था। तिस पर उसके ऊपर कैथोलिकवाद का भूत सवार था। पोप

जेम्स द्वितीय का राज्यारोहण समारोह

की राय के खिलाफ उसने कदम-कदम पर अपने कट्टर धार्मिक विश्वास को प्राटस्टट जनता पर थोपने की कोशिश की। प्राटस्टट शरणार्थियों ने पहले ही कैथोलिकवाद के प्रति गुस्से का माहौल बना रखा था। इसीलिए व्हाइट हॉल में खुल आम प्रार्थना सभाएं होने लगीं और जगह-जगह जिसुआइटस (Jesuits) दिखायी देने लगे। स्काटलैंड में तो और भी खराब स्थिति थी। क्रॉमवेल के जमाने में प्रमुखता पाये प्यूरिटनों (Puritons) को यातनाएं दी जाने लगीं। इस तरह राजशाही की ज्यादतियों का घड़ा भरने लगा। अप्रैल 1687 में राजा ने दडमाफन की घोषणा (Declaration of Indulgence) की। इसका मकसद था कैथोलिकों और प्राटस्टटों को उपासना की आजादी देना। जेम्स चाहता था कि प्राटस्टट एंग्लिकन चर्च से अलग हो जाय। प्राटस्टट शायद एक बार संतुष्ट भी हो जाते अगर उन्हें विश्वास होता कि जेम्स अपनी लड़की मैरी को उत्तराधिकारी बनायेगा।

मैरी का विवाह विलियम ऑफ आरेंज (William of Orange) से हुआ था। विलियम सारे यूरोप में प्राटस्टेंटों के नेता के रूप में मशहूर था। वह जेम्स में इर्ष्या और फ्रांस के लुई चौदहवें द्वारा सताये जाने से बेहद नाराज था। लुई और विलियम की शत्रुता उस जमाने में राजनीति के हर जानकार की जुबान पर थी।

जून 1688 में जेम्स की दूसरी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिस फौरन

विलियम-तृतीय

जेफरीज की गिरफ्तारी

कैथालिक धम म दीक्षित कर दिया गया। प्रोटस्टट इस नयी घटना से काफी चौंक गये। उन्ह लगा कि अब प्राटेस्टट विलियम की पत्नी मेरी इग्लैंड की गद्दी की उत्तराधिकारी नही बन पायगी। साथ म यह अफवाह भी फैल गयी कि वह बच्चा असल म रानी क गर्भ स नही जन्मा बल्कि कैथालिको की साजिश का नतीजा ह। लदनवासियो ने अपनी इन भावनाओ का प्रदशन सात बिशपो की रिहाइ का उत्सव मना कर किया। व बिशप दण्डमाचन की घोषणा का विराध करन क लिए गिरफ्तार हए थ।

क्राति की घडी नजदीक आ पहुची। प्राटेस्टटो ने मैरी और विलियम को अपना नतत्व करन क लिए आमत्रित किया। विलियम प्रोटस्टटवाद और स्वतत्रता की हिफाजत करन का उद्देश्य लेकर अग्रजो की धरती की तरफ चला। राजा की तरफ से उस रोकने और पकडन क लिए जॉन चर्चिल (John Churchill) को भेजा गया। 3 नवबर 1688 को टोरबे (Torbay) म विलियम न इग्लैंड म कदम रखा ओर चर्चिल की फौज का सामना किया। पर चर्चिल का विलियम म भविष्य का सम्राट दिखायी द रहा था। उसन अपनी फाज विलियम क नतत्व म द दी। जम्स का लगा कि उसक साथ अब काई नही रहा। उसन पलायन किया और फ्रास म शरण ली। लूई चौदहव न अपन शत्रु विलियम क शत्रु का हाथो हाथ लिया। विलियम और मरी को नय राजा और रानी क रूप म स्वीकार कर लिया गया। विलियम न जम्स चर्चिल को उसकी सेवाओ क लिए ड्यूक ऑफ मार्लबरा बनाया। यह एक स्वर्णिम रक्तहीन क्राति थी। इसमे कोई खून-खराबा नही हुआ था। जम्स क जज जफरीज जैसे सलाहकारो ने भागने की कोशिश की पर उन्ह पकड लिया गया।

इस सब के बावजूद ससद का जम्स की उद्दडताओ की कडवी याद भूली नही थी। उसन नय राजा-रानी पर सौ फीसदी विश्वास नही किया। उसने विलियम और मैरी का

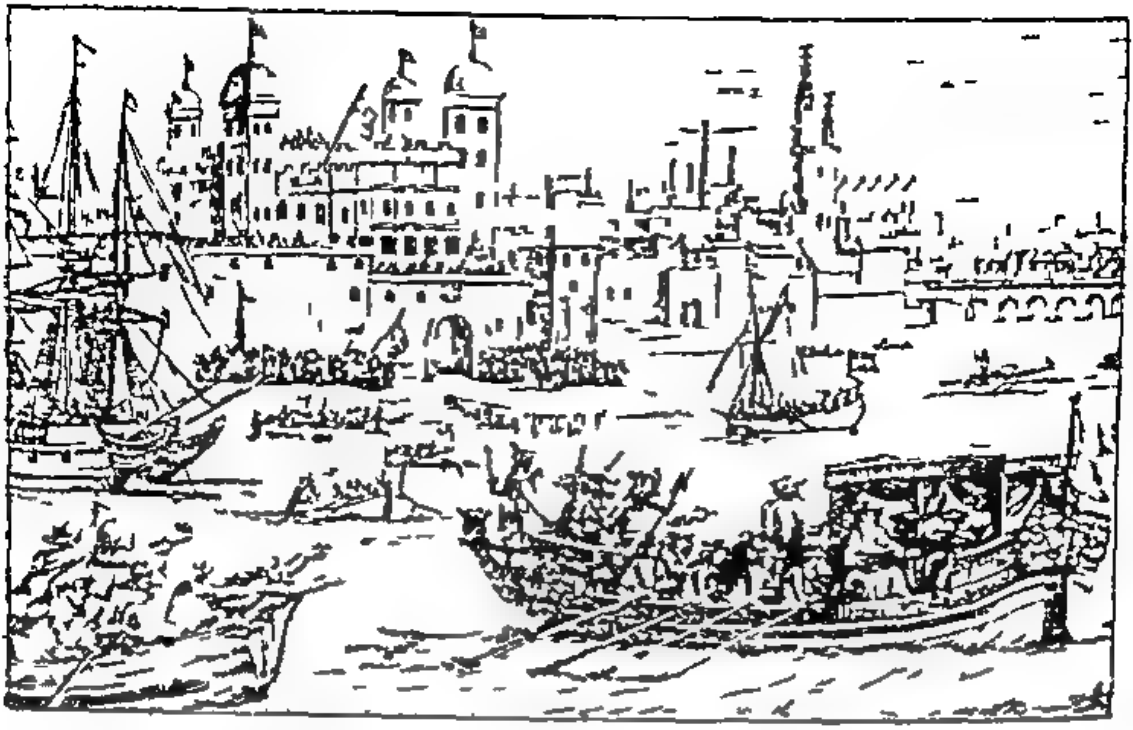

बिशपों को अप्रैल, 1688 को टॉवर पर लाया जा रहा है।

अधिकारों का विधेयक (Bill of Rights) स्वीकार करने पर मजबूर किया। इस विधेयक के अनुसार सत्ता में संसद का हिस्सा निर्विवाद हो गया। राजा की शक्तियां आनुवंशिक दैवी अधिकार की देन नहीं रह गयी बल्कि वह राष्ट्र की इच्छा के अनुकूल होने लगी। इस नये कानून से राजा संसद के नियंत्रण में हो गया। अब कोई कैथोलिक शासन नहीं कर सकता था। राजा से कर लगाने का अधिकार भी छीन लिया गया था और उसे निजी सेना रखने की आज्ञा भी नहीं थी।

सन् 1689 में सहिष्णुता कानून (Toleration Act) बना जिसने प्रोटेस्टेंटों को उपासना की स्वतंत्रता दी पर कैथोलिकों को नहीं। इस तरह से इंग्लैंड का 50 वर्षीय धार्मिक विवाद खत्म हुआ। मैरी की सन् 1695 में मृत्यु हो गयी। विलियम तो मूलतः डच था और उसकी दिलचस्पी लूई चौदहवें से निपटने में ज्यादा थी। इसलिए उसका ध्यान हमेशा यूरोप के दूसरे हिस्सों पर लगा रहा। नये कानूनों की ताकत लेकर इंग्लैंड ने संवैधानिक शासन का पहला अनुभव लिया। सन् 1702 में मैरी की बहन एन (Ann) ने गद्दी संभाली। सन् 1714 में उसके निधन के बाद जॉर्ज-प्रथम राजा बना। उस समय तक इंग्लैंड और स्कॉटलैंड यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन का रूप ले चुके थे।

सन् 1718 के बाद हाउस ऑफ कामंस (ब्रिटिश संसद) का हर सात साल बाद चुनाव होने लगा। संसद तत्कालीन भूपतियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी क्योंकि यही तबका शासक वर्ग का भी निर्माण करता था। संसदीय क्रांति के परिपक्व होने के साथ-साथ ब्रिटेन ने बड़े पैमाने पर व्यापारिक और समुद्री गतिविधियां शुरू कीं। उसके व्यापारियों ने जमकर मुनाफा कमाया। यूनाइटेड प्रोविंसेज की तकलीफों ने उनके फायदों में और बढ़ोत्तरी की। ब्रिटेन के उपनिवेशों के माल का आयात और फिर उसका निर्यात व्यापारियों के लिए जोरदार धंधा साबित हुआ। इस मुनाफे से ब्रिटिश खेती पर उद्योग के

विलियम और मैरी

महारानी एन

क्षत्र म हुई प्रगति म पूजी निवेश किया जा सका। इसी शताब्दी म व तकनीकी खाज हुइ, जा बाद की औद्यागिक क्रांति म इस्तमाल की गयी।

सन् 1694 म बैंक ऑफ इग्लेंड की स्थापना हुइ, जिसन सरकारी ऋण का एक स्थिर चरित्र प्रदान किया और कई तरह की आर्थिक गतिविधिया का नियंत्रित करन म प्रमुख भूमिका निभायी। सन् 1666 के भयानक अग्निकाड म भस्म हुए लदन का पत्थरा स निर्माण किया जा चुका था। नये युग मे उसका क्षत्रफल परिस स दागुना था और आबादी पूरी साढ़े सात लाख थी। सट पॉल का भव्य गिरजा इस शहर और ब्रिटिश साम्राज्य क धन-धान्य और अधिकार का प्रतीक लगता था।

17वी शताब्दी क इन आखिरी वर्षो ने ब्रिटिश साम्राज्य की जड मजबूत की। राजशाही के अधिकारा क खात्म ने एक नयी मिसाल का जन्म दिया। इसकी अभिव्यक्ति अगली शताब्दी म हुई। 18वी शताब्दी दो महान घटनाआ क लिए तैयार हान लगी। य थी अमरीकी स्वतन्नता का युद्ध और फ्राम की पूजीवादी क्रांति। ■■

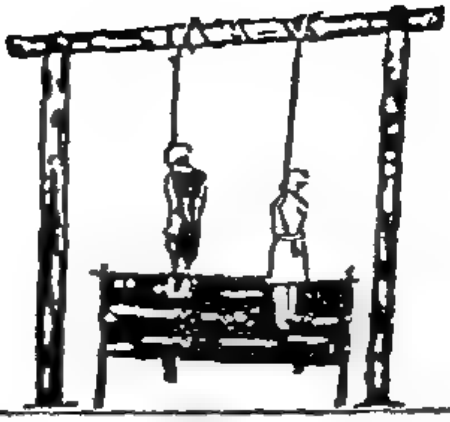

अमरीकी क्रांति

(1763 1782)

ब्रिटिश साम्राज्य को पहली गंभीर चुनौती उत्तरी अमरीका के 13 उपनिवेशों में बसे अंग्रेज नस्ल के अमरीकियों ने ही दी। उन्होंने ब्रिटिश संसद द्वारा अपने ऊपर कर लगाने के अधिकार को नामंजूर कर दिया। जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमरीका ने अपनी आजादी की घोषणा की और टामस जैफर्सन ने आजादी का घोषणा-पत्र लिखा। सन् 1775 से सन् 1781 तक चले युद्ध में फ्रांस और स्पेन की मदद से मजबूत हुए अमरीकी देश-भक्तों ने 45,000 की ब्रिटिश फौज को परास्त कर दिया। यह उपनिवेशवाद पर पड़ने वाली पहली चोट और नये युग की पदचाप थी।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन की ताकत अपनी चरम सीमा पर पहुंचने लगी थी। मशहूर था कि उनके साम्राज्य में कभी भी सूर्य अस्त नहीं होता। उत्तरी अमरीका में ही उसके 13 उपनिवेश थे। उस समय जॉर्ज-तृतीय के पास राजगद्दी थी। अपने ही साम्राज्य के सूर्य से चकाचौंध अंग्रेज यह नहीं देख पाये कि अमरीकी उपनिवेशों की अंदरूनी ताकत बढ़ती जा रही है और अब वे ज्यादा दिनों तक ब्रिटिश सिंहासन के अधीन नहीं रह सकेंगे। इन उपनिवेशों में रहने वाले भी नस्ल से अंग्रेज ही थे लेकिन वे उत्तरी अमरीका की आबो-हवा में छ: पीढ़ियां गुजार चुके थे। अब उनमें अपने अंग्रेज होने के बजाय अमरीकी होने का अभिमान पैदा होना शुरू हो चुका था। यह सांस्कृतिक अलगाव इस तथ्य से और भी बढ़ जाता था कि इन उपनिवेशों पर नियंत्रण करने वाला 'हाउस ऑफ कामंस' तीन हजार मील दूर लंदन में स्थित था।

अमरीकी अंग्रेजों के हिसाब से उनके घरेलू मामले उनकी अपनी सभाओं के जरिये सुलझने चाहिए थे। वे उनमें ब्रिटिश की टांग अड़वाना पसंद नहीं करते थे। वे चाहते थे कि ब्रिटिश सरकार विदेश नीति और समुद्री व्यापार तक ही अपने-आप को सीमित रखे। अमरीकियों की ये मांगें धीरे धीरे ताकतवर होती जा रही थीं। सन् 1761 में 63 के बीच

अमरीकी फौजा के कमाडर जॉर्ज वाशिगटन

अर्ल ऑफ ब्यूट (Earl of Bute) के मंत्रिमडल न ओर उसक उत्तराधिकारी जॉर्ज ग्रनविल (George Grenville) की प्रधानता वाली सरकार न उत्तरी अमरीका म ब्रिटिश फौजा की सख्या बढ़ा दी। ब्रिटन न अमरीकी अग्रजा से कहा कि व पश्चिम की तरफ पैर न फैलाय। रड इडियना के लिए बड-बड इलाक आरक्षित कर दिय गय। इससे अमरीकिया का माथा ठनका। उन्हान इस अपनी बढ़ती हुई आजादी के रास्त मे जानबूझकर डाला गया रोडा समझा।

ब्रिटेन का दूसरा कदम भी अमरीकिया का नाराज करन वाला साबित हुआ। उनका समुद्री व्यापार नियंत्रित कर दिया गया और उन पर ससद द्वारा कर लगा दिय गय। सन् 1764 का चीनी कानून (Sugar Act) जिसम कच्ची शक्कर पर प्रति गेलन 3 पस शुल्क लगता था और सन् 1765 का स्टाम्प कानून अमरीकिया का एक आख न भाया। अमरीकियो के लिए अपन सभी कानूनी दस्तावेजा और दूसर कागजा पर कर के रूप म स्टाम्प लगाना मजबूरी बन गयी।

अमरीकिया ने विरोध म आवाज उठायी और कहा कि जब 'हाउस ऑफ कामस' म हमारा प्रतिनिधित्व नही होता तो ससद हम पर कर कैसे लगा सकती है? नारा लगा 'नो रिप्रजटेशन-नो टैक्सेशन"। जगह-जगह सभाए ओर जलसे हान लगे, जिनमे स्टाम्प

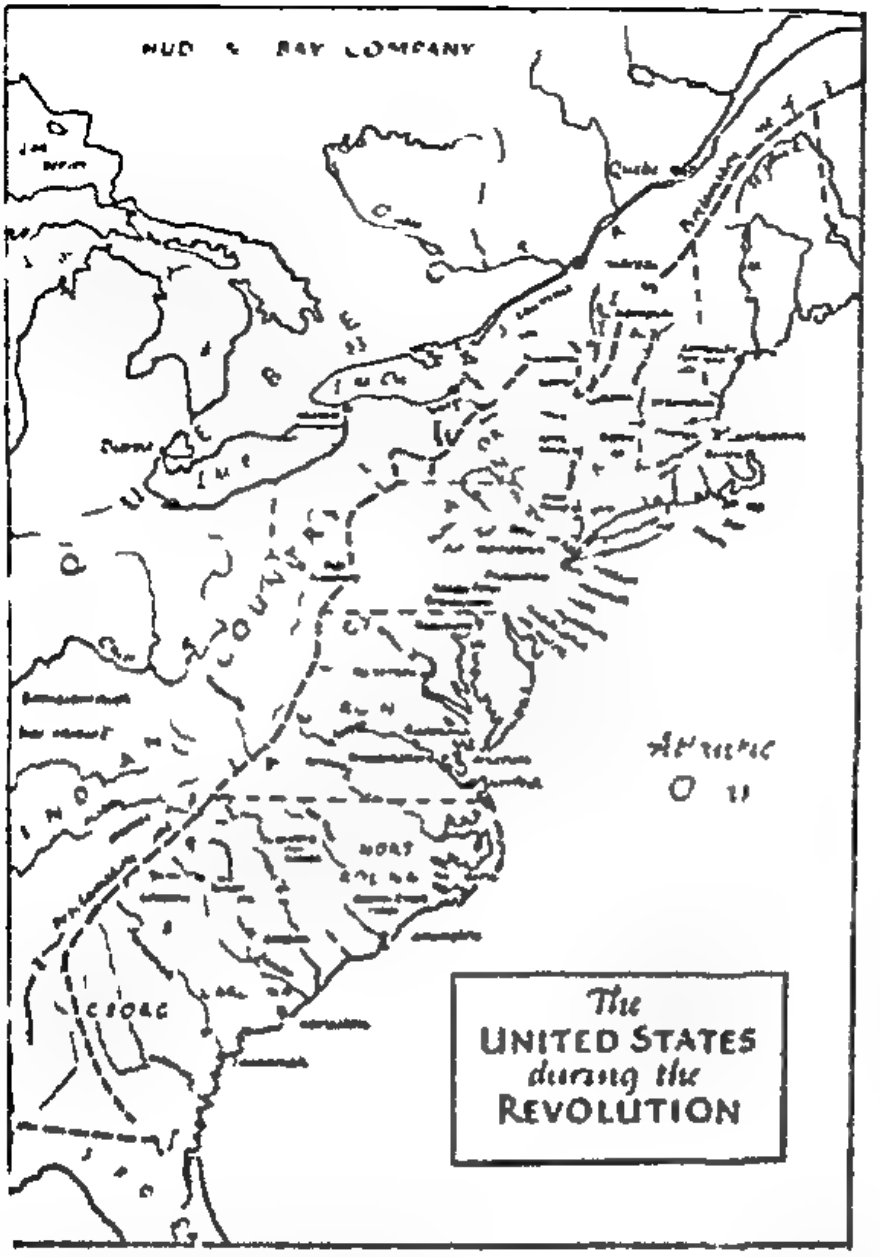

क्रांति के दिनों में अमरीका की भूगोलीय स्थिति

कानून वापस लेने की मांग की जाती थी। अमरीका भेजे गये स्टाम्प नष्ट कर दिये गये और स्टाम्प वितरकों से जबरन इस्तीफा दिलवा दिया गया। कई अमरीकी शहरों में इस कानून के खिलाफ दंगे भड़क उठे। लन्दन पर दबाव डालने के लिए अमरीकियों ने ब्रिटिश माल मंगाना कम कर दिया। ब्रिटिश व्यापारियों को भुगतान रोक दिया गया।

ब्रिटेन इस विरोध प्रदर्शन से आश्चर्यचकित रह गया। उसे स्टाम्प कानून वापस लेना पड़ा। लेकिन संसद में डिक्लेटरी एक्ट पास करके और अगले साल जॉर्ज तृतीय की सरकार ने फिर नये टैक्स लगाकर विवाद पैदा कर दिया। अब चाय, कागज, शीशा, रंग के आयात पर कर लगने लगा। इससे होने वाली आमदनी से ब्रिटेन अमरीका में अपनी फौजों का तनख्वाह देने लगा। नतीजा यह निकला कि शाही सेनाएं उन स्थानीय सभाओं के प्रभाव से मुक्त हो गईं जो उन्हें पहले वेतन देती थीं। जल्दी ही उपनिवेशों ने इन टैक्सों को हटाने की मांग शुरू कर दी। इसके बाद शुरू हुआ ब्रिटिश चीजों का बायकाट।

स्टेम्प एक्ट का विरोध

जा उपनिवश इस आदालन म शामिल नही हुए, उनका हुक्का-पानी बद कर दन की धमकी दी गयी। ब्रिटन का य कर वापस लेने पडे। केवल समद का अधिकार जतान क मकसद स चाय पर कर लगा रह गया।

तभी सन् 1768 म लाल कुर्ती क ब्रिटिश सनिक बास्टन (Boston) म नागरिका से उलझ गय। कस्टम कमिश्नरा को बचाने क चक्कर म सनिका ने पाच नागरिका का गाली स उडा दिया। अग्रजा न मामल के नाजुकपन का अहसास करके सना फारन वापस बुला ली पर इस घटना स सभी कॉलानियां म ब्रिटिश विराधी भावनाए फेल गयी।

सन् 1773 तक छिट-पुट घटनाओ म इस आक्राश की अभिव्यक्ति हाती रही। यह वर्ष प्रधानमत्री लार्ड नॉर्थ (Lord North) के चाय कानून का था, जिसके चलते ईस्ट इंडिया कपनी को अपनी चाय पर लगने वाले भारी कर से मुक्ति मिल गयी और वह उस सीधे अमरीका मे बेचने लगी। ब्रिटिश चाय एक तरह से अमरीकियो के लिए सस्ती हा गयी थी। पर अमरीकिया न महगी डच चाय खरीदना पसद किया, क्योंकि ब्रिटिश चाय खरीदन का मतलब हाता ससद द्वारा अपन ऊपर कर लगान के अधिकार को मान्यता देना। अमरीकिया ने इस्ट इंडिया कपनी की चाय बरबाद करना शुरू कर दी। सन् 1773 के दिसबर म तीन जहाजो म भरी चाय बोस्टन के बदरगाह म खराब हाने क लिए छाड दी गयी। यह घटना बास्टन टी-पार्टी क नाम स मशहूर है।

लदन म इस कार्रवाइ के खिलाफ नाराजगी पैदा हुई। नार्थ मत्रिमडल ने तय किया कि बोस्टन और मेसाचुसट्स को इसक लिए सबक सिखाया जाय। चार दमनकारी कानून पास किये गये। पाचवा कानून क्युबक कानून (Quebec Act) था। अमरीकिया ने इन पाचो कानूना का सहन न कर सकन लायक करार दिया। कानून पर अमल क लिए लाल कुर्ती क सनिक बास्टन मे भेजे गय पर मसाचुसेट्स म सन् 1774 क हेमत म शहर क

बोस्टन टी पार्टी शीर्षक से छपा प्रसिद्ध व्यंग्य चित्र

बाहर एक क्रांतिकारी सरकार की स्थापना की गयी। फाज की नयागी हान लगी। ब्रिटिश गवनर थामस गज (Thomas Gage) का लगा कि उसकी फाज इस बगावत म नहीं निपट पायगी इसलिए उसन बदन म और फाज की माग की। सन 1774 म फिलाडेल्फिया म पहली काटीनटन काग्रस हइ जिसम 12 उपनिवशा न अपन प्रतिनिधि भज। जाज वाशिगटन जान एडम्स समअल एडम्स आर पाटक हनरी जस प्रताप्ठत अमरीकी नता इस काग्रस म शामिल हए। इस काग्रस न प्रण किया कि अगर ब्रिटिश सनिका न बास्टन म आग बढकर समाचसटस पर हमला किया तो वहा क भाइया की हर कीमत पर रक्षा की जायगी। ब्रिटन म कहा गया कि वह सन 1763 म बनाय गय हर कानून का वापस ल वयोकि य मानवता प्राकृतिक अधिकार क विराधी ह। काग्रस न एक एसोसियशन बनायी जा ब्रिटिश चीजा का आयात आर उप भाग राक्न का एक जरिया थी। यह भी तय किया गया कि अगर ब्रिटन न मानता अमरीकी चावल का छाडकर हर चीज क निर्यात पर भी पाबदी लगा दी जाय। जिस जिस न इन पाबदिया का विराध किया उस अमरीकी आजादी क नय प्रवक्ताओ क गस्से का सामना करना पडा। हर जगह अमरीकी फाज परड करती हइ दिखन लगी।

सन् 1775 म ब्रिटन न अपनी प्रभसत्ता जबरन स्थापित करन की शरआत की। जनरल गज का आदश दिय गय। 18 अप्रल 1775 का गज क दस्त बास्टन स कूच (Concord) गय ताकि अमरीकी फाज की सप्लाइ का नष्ट कर सक। लक्सीग्टन (Lexington) म पहली लडाइ हुई। अग्रज फाज का बास्टन तक पीछ हटना पडा। इस तरह अमरीकी आजादी क लिए यद्ध की शुरुआत हई।

ब्रिटन जुलाइ 1776 तक अपनी फाज अमरीका पहुचा पाया। तब तक काटीनट

बोस्टन मे हुआ हत्याकाड

कांग्रस न जाज वाशिंगटन का अमरीकी फौज का कमाडर नियक्त कर दिया था। अमरीकियो न बास्टन म अग्रजो को भगा दिया और उनके समथको व प्रतिरोध को कुचल डाला। 2 जुलाइ 1776 को कांटीनटल कांग्रस न आजादी का दावा पश किया। दो दिन बाद टामस जैफसन द्वारा लिखित स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र जारी किया गया। इस घोषणा पत्र म मानवता का आतक और दशासन के खिलाफ विद्राह करन का अधिकार दिया गया था। इसी के साथ सभी उपनिवशो म ब्रिटिश सरकार बठ गयी और अमरीकी राज्यो का पहला रूप सामन आया।

ब्रिटन न इस क्राति को कचलन के लिए 45 000 सनिक भज। सन् 1776 के अंतिम छ महीना म ब्रिटन की फौज न न्यूयाक स कनाडा तक विद्राहियो की धज्जिया उडा दी। जनरल विलियम हाव के नतत्व म वाशिंगटन की फौज को न्यूयाक स डलावयर नदी तक खदड दिया गया। पर इसी के बाद अमरीकनो की जीत का सिलसिला शुरू हुआ। वाशिंगटन न सात सत्म हात हात एक बडी जीत हासल की। नय साल म ब्रिटिश हमला फिर शरू हुआ पर तब तक अमरीकनो को अग्रजो के दुश्मन फ्राम स हथियार और पसा मिलना शुरू हो गया था। जनरल हाव न फिलाडल्फिया पर तो कब्जा कर लिया पर वाशिंगटन की फौजो को नष्ट नही कर सके। अमरीकी जनरल हारातिया के नतत्व म एक

19 अक्तूबर, 1781 को वाशिंगटन के समक्ष आत्मसमर्पण करते लॉर्ड कार्नवालिस

फौज ने ब्रिटिश जनरल जॉन बरगाइन की फौज को करारी शिकस्त दी। यह पहला ब्रिटिश आत्मसमर्पण था।

इस घटना के बाद से अमरीकियों की ताकत बहुत बढ़ गयी। फ्रांस और स्पेन ब्रिटेन से सात साल के युद्ध की हार का बदला लेने का मौका तलाश रहे थे। उन्होंने बिना मांगे सहायता दी। फरवरी 1778 में फ्रांस ने अमरीकी आजादी को मान्यता दे दी और संयुक्त राज्य अमरीका से फौजी संधि कर ली। इससे ब्रिटेन और फ्रांस के बीच युद्ध शुरू हो गया। सन् 1779 में स्पेन ने अमरीकी युद्ध में हस्तक्षेप किया। ब्रिटेन का धीरे-धीरे कई यूरोपीय देशों से झगड़ा शुरू हो गया। अब पूरा यूरोप या तो ब्रिटेन का दुश्मन था या तटस्थ। यह पूरी स्थिति अमरीकी क्रांति की सफलता के हक में जाती थी। वह अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में

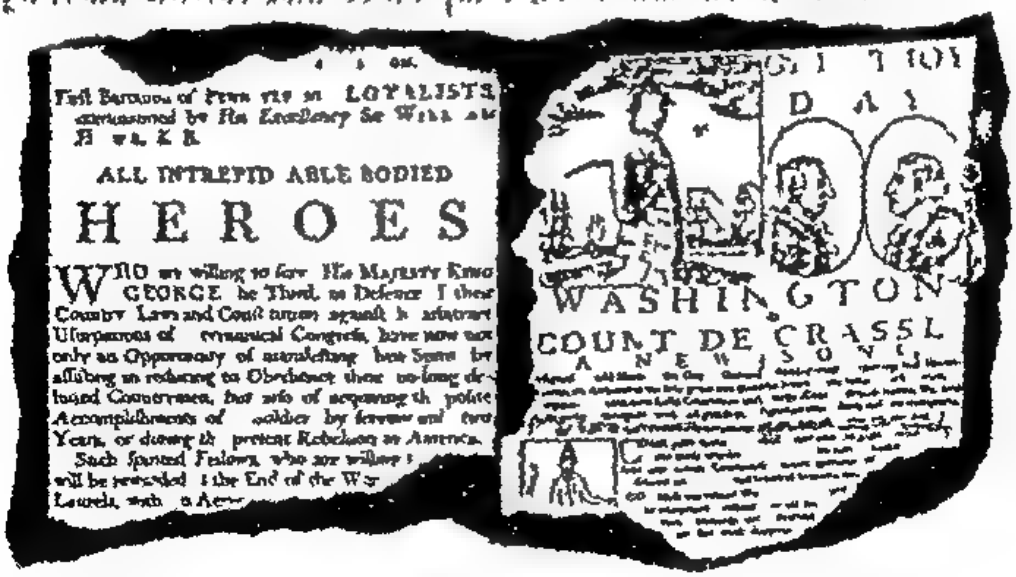

कांस्टिट्यूशनल कनवेंशन की अध्यक्षता करते हुए वाशिंगटन

बदल गयी। उसके लिए इंग्लिश चनल जिब्राल्टर और भू-मध्य सागर से लेकर अफ्री
के पश्चिमी तट, हिंद महासागर और वेस्ट इंडीज में भी लड़ाई लड़ी जाने लगी।

इस परिस्थिति में परेशान होकर ब्रिटेन ने एक आयोग भेजकर अमरीका को ब्रिटि
साम्राज्य के तहत स्वायत्तता देने का प्रस्ताव रखा पर अब देर हो चुकी थी। अमरी
कांग्रेस ने इस पर गौर तक नहीं किया। ब्रिटिश सेनापति क्लिंटन की फौज न्यूयार्क में ज
हो रही थी और वाशिंगटन की फौज चौकन्नी रहकर इस गतिविधि को परख रही थी
क्लिंटन ने दक्षिणी राज्यों पर हमला किया, जहां ब्रिटिश समर्थक टोरी ज्यादा थे। पर व
के अमरीकियों ने छापामार युद्ध शुरू कर दिया। ब्रिटिश सेनापति लॉर्ड कार्नवालिस द्वा
नॉर्थ कैरोलिना पर कब्जा करने की कोशिश जनरल ग्रीन ने नाकामयाब कर दी। इस
बाद दूसरे हमले में ग्रीन ने ब्रिटिश फौजों को दक्षिण में बहुत बुरी तरह हरा दिया

वर्जीनिया में कार्नवालिस ने 7 000 की फौज जमाकर यार्क टाउन में अड्डा जमाय
पर तभी फ्रांस ने वाशिंगटन की मदद के लिए एडमिरल डी ग्रास के नेतृत्व में अटलांटिक
अपना बेड़ा भेज दिया। बेड़े ने ब्रिटिश बेड़े को परास्त करके कार्नवालिस की सप्ल
लाइन काट दी। वाशिंगटन ने अपनी और फ्रांसीसी फौज के साथ कार्नवालिस पर दक्षिण
जमीनी हमला किया। अब 7 000 ब्रिटिश सैनिकों के मुकाबले वाशिंगटन के पास
हजार फौजी थे। मजबूरी में 19 अक्तूबर 1781 को कार्नवालिस ने हथियार डाल दिए

सन् 1782 में ब्रिटेन में नॉर्थ सरकार इसी पराजय के कारण गिर गयी और उ
संयुक्त राज्य अमरीका की आजादी को स्वीकार करना पड़ा। ब्रिटेन की सारी दुनिया में
जगह पराजय हुई। हर जगह उपनिवेशवाद को धक्का लगा। लोकप्रिय सरकारों
स्थापनाएं हुईं। अमरीकी स्वतंत्रता के घोषणा-पत्र ने कई मुक्ति-युद्धों को प्रेरणा दी। ■

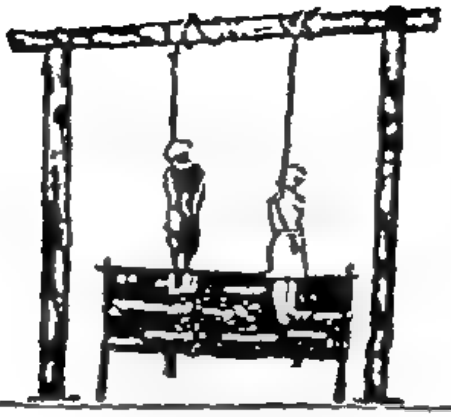

फ्रांसीसी क्रांति
(1789 1794)

फ्रांसीसी क्रांति ने प्रगतिशीलता और वैचारिक उत्थान में अमरीकी आजादी की लड़ाई को भी पीछे छोड़ दिया। 'समानता, आजादी और भाईचारे' के नारे पहली बार पूंजीवादी प्रतियोगिता बाजार पर आधारित समाज और 'मांग व आपूर्ति' की बीज रूप में रचना की। राजशाही खत्म कर दी गयी। आम जनता की हुकूमत स्थापित हुई। हालांकि यह क्रांति पांच साल बाद असफल हो गयी और नेपोलियन बोनापार्ट के युग की शुरुआत हुई पर इसके भ्रूण में भविष्य का पूंजीवादी समाज मौजूद था।

अमरीकी क्रांति की सफलता के बाद भी दुनिया का 18वीं शताब्दी से कुछ लेना बाकी था। यूरोप और दुनिया के इतिहास को एक निर्णायक मोड़ देने वाली सामंतवाद विरोधी पूंजीवादी क्रांति का बिगुल तो अभी नहीं बजा पर उसके लिए परिस्थितियां तैयार हो रही थीं। यूरोप के राजवंश अपने अस्तित्व के संकट से गुजर रहे थे। लूई सोलहवें ने सन् 1773 में गद्दी संभाली और सन् 1788 तक उसके कुशासन ने सरकारी खजाना खाली कर दिया। सन् 1789 तक आते-आते फ्रांसीसी एस्टेट जनरल (Estate General) के तीनों प्रतिनिधि तबकों में अलग-अलग कारणों से असंतोष पनपने लगा। ये तीन तबके थे—कुलीन वर्ग (Nobles) पुरोहित वर्ग (Clergy) और थर्ड एस्टेट यानी सामान्य जनता।

कुलीनों को एतराज था कि राजा के मंत्रीगण मनमानी कर रहे हैं। पुरानी प्रांतीय आजादी के वकील सत्ता के अत्यधिक केंद्रीकरण के खिलाफ थे। ब्रिटेन की संसदीय क्रांति और अमरीकी आजादी के युद्ध से प्रभावित लोग थामस पाइन (Thomas Paine) के मनुष्य के अधिकारों संबंधी विचारों से बहुत प्रभावित थे। आम आदमी के प्रतिनिधि इस बात से नाराज थे कि खजाना खाली होने का सारा बोझ करों के रूप में किसानों के कंधों पर डाल दिया गया है। सन् 1786 का औद्योगिक संकट सन् 1787 और सन् 1788 में हुई

राब्सपियरे

खराब फसलो क साथ मिलकर आर्थिक तबाही ढा रहा था। दाम बढत चल जा रह थ ओर अकाल का डर जनमानस का सता रहा था।

एसे विकट समय म लूई सालहव और मारिया थेरसा (Maria Theresa) की बटी मेरी एण्टोइनिट (Marie Antoinette) न अपन शासन म सुधार करन की तरफ बिलकल ध्यान नही दिया। राजा का चाहिए था कि वह जनता की तकलीफा का दखत हुए सुविधा-सपन्न कुलीन तबक का नियत्रण म रखता। पर एसा नही किया गया। बढत हुए आर्थिक सकट ने राजा का करीब डढ़ सौ वर्ष बाद वर्साई (Versailles) एस्टट जनरल बुलान पर मजबूर कर दिया। अपनी प्रजा के तीना तबका से राजा यह पूछना चाहता था कि राष्ट पर चढ़े कर्जे को कस उतारा जाये? अथ-व्यवस्था कैस दुरुस्त की जाय? इसस पहल सन् 1614 म एस्टेट जनरल की बैठक हुई थी। उस समय म अब तक थड एस्टट के प्रतिनिधि दागुन हो चुके थे। एस्टेट जनरल क 1 100 प्रतिनिधिया म स आध थड एस्टेट के ही थे। कई वकील और बुद्धिजीवी एस्टेट जनरल म थड एस्टेट क प्रतिनिधि बन कर गय। इनमे राब्सपियरे (Robespierre), वालनी (Volney) आर खगालविद् बली (Bailly) क नाम प्रमुख थे। कुलीना क प्रतिनिधिया क रूप म ड्यूक आफ आलियस (Duke of Orleans) और मारक्विस दि लेफायत (Marquis de Lafayette) थ। लेफायत अमरीका की आजादी क नायक जॉर्ज वाशिगटन क दास्त थ आर उ हान उस लडाइ म हिस्सा भी लिया था। पुराहित वर्ग क प्रतिनिधि थ कार्डिनल राहन (Cardinal Rohan), हनरी ग्रिगाइर (Henry Grigoir) आर चाल्स मारिस दि टालीरण्ड (Charles Maurice de Tollegrand)। इसक अलावा थर्ड एस्टट के पास मारक्विस दि

मारक्विस दि मिराब्यू

मिराब्यू (Marquis de Mirabeau) और एब्बी सीएस (Abbe Sieyes) जैसे दो नेता भी थे जो मानते थे कि कुलीन वर्ग के पास पर आम लोगों के अधिकारों की हिमायत करते थे। मीराम ने तो एस्टेट जनरल की बैठक में पहले एक पर्चा भी प्रकाशित किया था जिसमें इस पर्चे ने सीएस की लोकप्रियता काफी बढ़ा दी थी।

5 मई 1789 को एस्टेट जनरल की बैठक शुरू हुई। दो महीने तक यह बहस चलती रही कि फैसले बहुमत के आधार पर होंगे या नहीं? दूसरा तरीका सर्वसम्मति का था जिसमें हर एस्टेट को एक वोट देने का अधिकार था। 17 जून को थर्ड एस्टेट वाले ने कहा कि वे फ्रांस के 96 प्रतिशत लोगों के प्रतिनिधि हैं इसलिए वही राष्ट्रीय असेंबली हैं और वे जो टैक्स मांगें वही कानूनी होगा। थर्ड एस्टेट की ताकत देखकर पादरी वर्ग के बहुत से प्रतिनिधि थर्ड एस्टेट वालों की ओर खिसक गए। इससे घबराकर राजा ने मंत्री की और थर्ड एस्टेट वालों को मीटिंग हॉल के टेनिस कोर्ट में बैठक करने पहुंच गए। टेनिस कोर्ट में ही उन लोगों ने शपथ ली कि जब तक वे फ्रांस का नया संविधान नहीं बना देते तब तक अपनी प्रतिनिधियों को बैठक भंग नहीं करेंगे। 20 जून को यह ऐतिहासिक घटना हुई। तीन दिन बाद राजा ने उन्हें बैठकें भंग करने की चेतावनी भेजी और पीरन अपनी बैठक खत्म करने को कहा। थर्ड एस्टेट के मिराब्यू ने अपना प्रसिद्ध उत्तर दिया कि संगीन की नोक पर ही उन्हें हटाया जा सकता है। राजा ने सेना असेंबली में भेज दी। उसने बगावत में सैनिक जमा करने शुरू कर दिए। उधर पेरिस में जनता के अंदर कुलीनों के खिलाफ भावनाएं भड़क रही थीं। राजा ने असेंबली में संविधानवादी वर्ग अपनी सुविधाएं छिन जाने से और थर्ड एस्टेट

कुलीना क हमल क अदशा स डर हुए थे। परिस बराजगारा और शरणार्थिया स बजबजा रहा था। लागा का यकीन हा चला था कि कुलीन वर्ग उनक खिलाफ साजिश कर रहा है। इस माहाल म पूर दश म दग भडक उठ। इन पर काबू पा सकन का इलजाम लगाकर राजा न अपन प्रधानमत्री नकर (Necker) को बर्खास्त कर दिया। 14 जुलाई का कलीन वग म अपनी रक्षा करन क लिए हथियार तलाशती भीड न क्लेनुमा जल बस्टीले (Bastille) म घुसन की कोशिश की। जल क गवर्नर लाउन (Launay) न सैनिका स भीड पर गोलिया चलवायी। कइ नागरिक मारे गय। इसक बाद ता परिसवासिया का गस्सा भडक उठा आर उन्हान तोप घसीटकर मोर्चे पर लगा दी। बस्टील पर हमला बाल दिया। गवनर का हाथयार डालन पड। भीड उस घसीटकर लायी और उसका सिर धड स अलग कर दिया। बस्टील म कवल सात कदी थ पर उसका पतन क्राति की प्रतीकात्मक शुरआत बन गया।

परिस क ही नमून पर फ्रास क दहाता म भी सघष छिड गया। नयी म्युनिस्पलिटीज बन गयी। ग्रामीणा न हथियार उठा लिय। राजा न घबराकर नकर का दोबारा प्रधानमत्री बनाया आर परिस की क्राति का मान्यता द दी। पर राजा क अधिकार और सत्ता तकरीबन खत्म हा चुक थ। असेंबली क कदमा का कलीना आर पादरिया न भी समर्थन किया। नय कानूना न सामती सुविधाय, भूदान प्रथा आर सामता पर कर न लगान की परपरा का खत्म कर दिया। पर राजशाही समथक एक गुट का ख्याल था कि राजा क बिना पूर दश म अराजकता फल जायगी। इसी बीच पाच-छह हजार लागा न जिनम महिलाए ज्यादा थी बारसा क महल पर कब्जा कर लिया। फिर असबली परिस म बेठी। क्राति पूरी हा चुकी थी।

बैस्टील के कारागार पर भीड का हमला

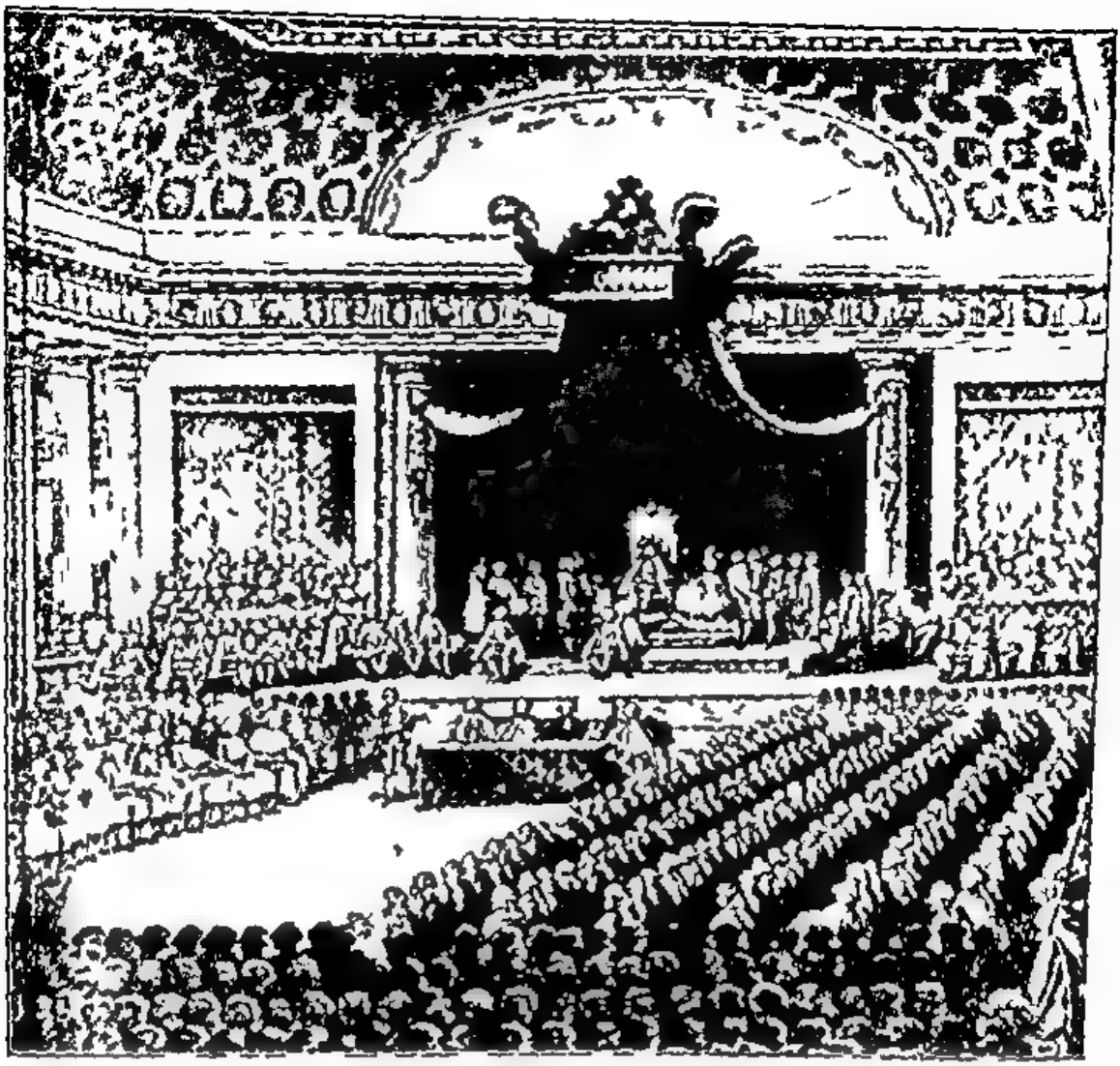

स्टेट जनरल की बैठक, जिसे नेशनल असेंबली में बदल दिया गया।

गाव गाव म 'कम्यून बन गय जिन्होन एक दूसरे स मिलकर 'फडरेशन बना डाली। "भाईचारा समानता और आजादी का नारा हर एक की जुबान पर था। राइन नदी क पुल पर तिरगा झण्डा लगा दिया गया, जिस पर लिखा था—' यहा म स्वतन्त्र धरती की शुरुआत होती ह।' नेशनल असेंबली ने नया सविधान बनाया और लूई सोलहव को कसम खानी पडी कि वह इसी सविधान को मानगा। सन् 1790 क इस दिन स फ्रास पहली बार एक राष्ट्र क रूप मे उभरा।

उधर असेंबली म खुली बहस का माहौल था। एक स एक धुरधर वक्ता एक दूसरे क विचारो को काटते हुए अपने तर्क रखते थे। इसी दौरान दक्षिण पथी और वामपथी जैसी अभिव्यक्तियो का पहली बार इस्तेमाल हुआ। जिनके जरिए आज तक राजनीति समझी जाती है। क्रांति का यह दौर काफी अव्यवस्था और भयानक सकट का था। राजा न देश छोडकर भागने की कोशिश की पर पकड लिया गया। असेंबली ने पहले उसे निलंबित किया पर फिर माफ करके गद्दी पर बैठा दिया। फ्रांसीसी सविधान की प्रस्तावना डिक्लरेशन ऑफ दि राइट्स ऑफ मैन एण्ड दि सिटीजन अमरीकी स्वतत्रता क

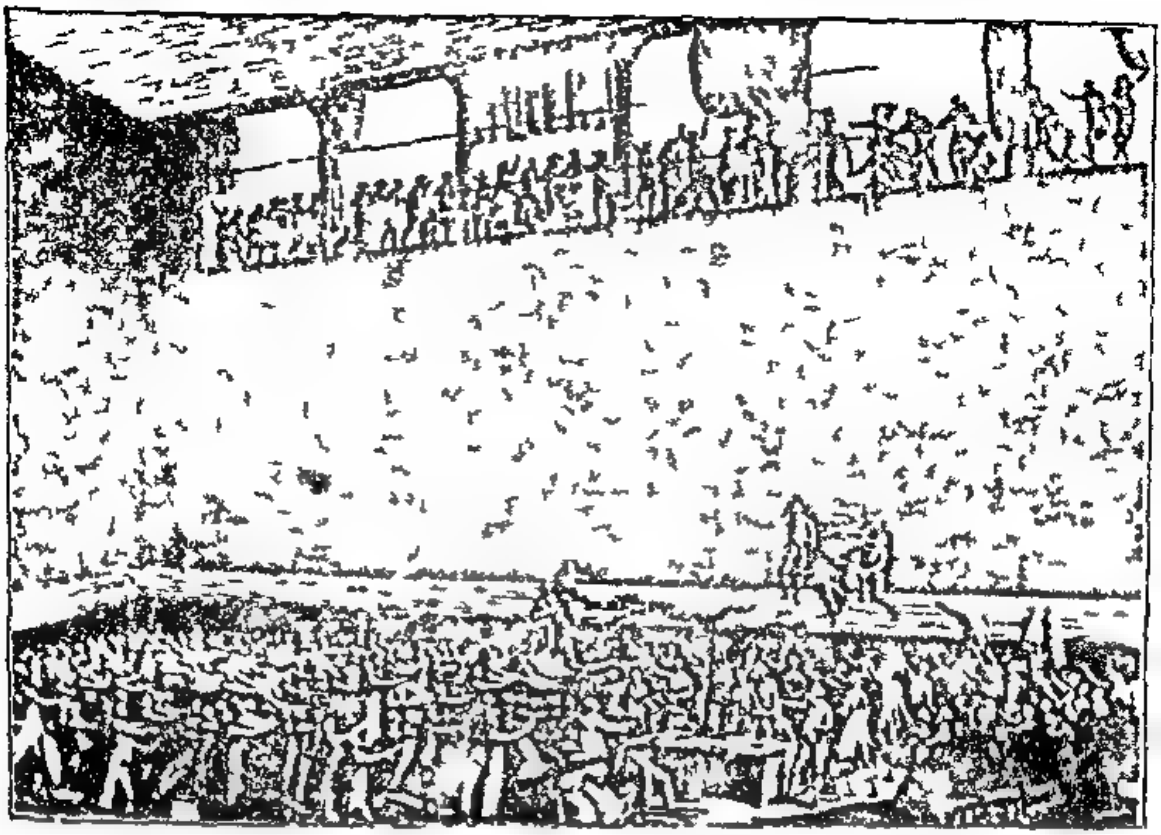

टेनिस कोर्ट मे नेशनल असैम्बली की बैठक

घोषणा-पत्र स भी आग का कदम था। यह प्रस्तावना कहती थी कि जन्म स सभी बराबर हैं। सामाजिक विभिन्नताए तो सामुदायिक उपयाग की दृष्टि स बनायी गयी हैं। कानून सब के लिए एक ह। साचन बालने ओर व्यक्ति की स्वतन्त्रता सबसे अहम है। समस्त प्रभुसत्ता राष्ट्र म निहित ह ओर कानून सभी की मिली-जुली इच्छा की अभिव्यक्ति ह। इस सविधान न विधायिका, कार्यपालिका ओर न्यायपालिका का अलग-अलग कर दिया। फ्रास ने ब्रिटिश आर अमरीका क ससदीय तजुर्बे पर चलने स इकार कर दिया। फ्रास म अधिकारा को सतुलित करन क लिए कर्तव्या का प्रावधान नही किया गया था। 'फ्रास का राजा' एक प्रभुसत्ता सपन्न राष्ट्र का कवल 'प्रथम सेवक रह गया था। पूर फ्रास को 83 भागो म बाट दिया गया। उनक एतिहासिक नामो की जगह नदिया आर पवता के आधार पर नया नामकरण किया गया। अर्थ-व्यवस्था इस तरह बनायी गयी कि बाजार पर आधारित समाज का जन्म हाने लगा। 'माग ओर आपूर्ति आर पूजीवादी प्रतियागिता' की शुरुआत हुई। यह नया ढाचा निकट भविष्य म आन वाली अराजकता का कारण बना पर यही ढाचा अपन भूण म भविष्य क परिपक्व पूजीवादी समाज क बीज भी छुपाए हुए था।

क्रातिकारी सरकार न भू कर, व्यक्तिगत सपत्ति पर कर आर धधा करन क लिए लाइसस की व्यवस्था की। एक तरह स राज्य चलान म सभी क यागदान क उसूल क लिहाज म यह सही कदम था पर व्यवहार म जनता न टक्स नही दिया। सरकार का खजाना खाली ही रहा।

धीरे-धीर नये क्रातिकारी सुधारा म लागा का माह-भग हान लगा। 10 अगस्त 1792 को भीड न ट्युलरिस पैलस (Tuilenes Palace) को घर लिया। राजा न भागकर

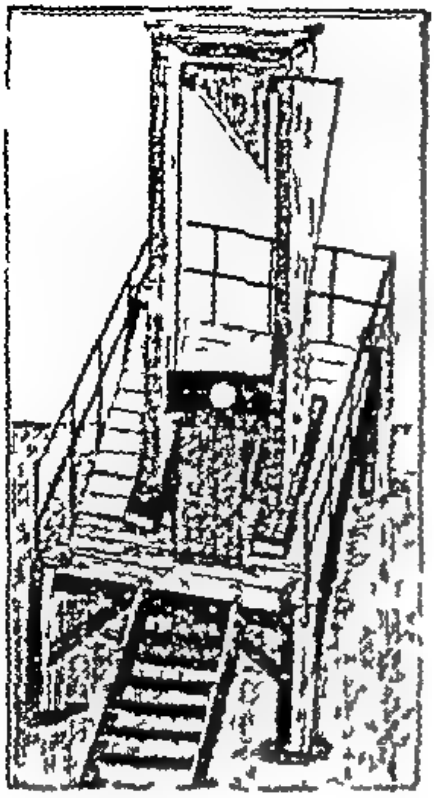

डॉ गिलोटिन द्वारा ईजाद की गयी मशीन (बाय) पर लूई (दाय) को मत्यु दड देने के लिए ले जाया जा रहा है।

लेजिस्लेटिव असेंबली म शरण ली। नागरिको न माग की कि राजा का मुअत्तल किया जाय और एक नशनल कन्वशन चुना जाय जो एक नय सविधान की योजना बनाय। 20 सितबर को कन्वशन की बैठक हुई और उसन सर्वसम्मत स राजशाही खत्म करन का फैसला किया। लइ पर गणराज्य से गद्दारी करन का मुकदमा चला और 21 जनवरी 1793 को फ्रास के राजा को मत्य दड दिया गया। नयी स्थिति यह थी कि फ्रास के दश्मन राष्ट उसकी कमजोर हालत देखकर हमला करन की योजनाय बना रहे थ। दश-निकाल के शिकार राजशाही के समर्थक साजिश कर रह थे। एसे म क्राति के नायको म स एक राब्सपियर के नेतत्व म जकोबिन (Jacobins) न गणराज्य की रक्षा का बीडा उठाया। पर उनका तरीका बडा खून खराब वाला था। डॉ गिलोटिन की इजाद की गयी मत्यु दन वाली मशीन का इस्तमाल चलकर होने लगा। सन् 1794 तक जकोबिस ने कमेटी ऑफ पब्लिक सेफ्टी के नाम पर फ्रास को तानाशाही म जकड दिया। क्रातिकारी न्यायाधिकरण न सैकडो लोगो को गिलोटिन पर चढा दिया। रानी मरी एटोइनिट को भी सिर धड स जुदा कर दिया गया। यहा तक कि भिन्न विचारो वाले क्रातिकारी भी नही बख्शे गय। बाद मे क्राति का पतन होन पर राबसपियर को गिरफ्तार करके मत्यु-दड दिया गया। यह राजशाही की वापसी की शुरुआत थी। क्राति के इसी दौर मे फ्रासीसी तापखाना रजीमट म कमीशन पाकर अफसर बनने वाले नेपोलियन बोनापार्ट के रूप में फ्रास को अपना नया सम्राट और नायक मिलने वाला था। राजनीतिक व्यवस्था का ढाचा कोई भी रहा हो, फ्रास न सन् 1789 की क्राति के रूप म दुनिया को जो दिया था वह भविष्य निर्माण करने वाला था। इसीलिए फ्रासीसी क्राति को नय युग का आगमन कहा जाता है। ■■

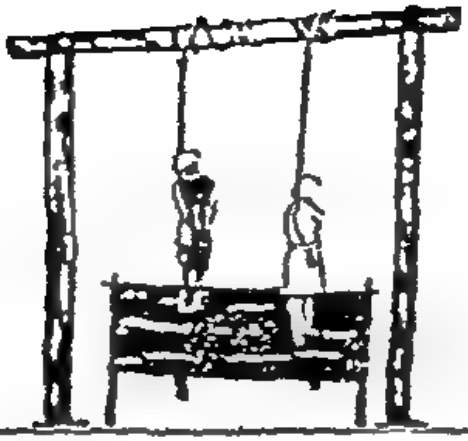

यूनानी और दक्षिण अमरीकी क्रांति

(1821 1830)

नेपोलियन के हमलो से कमजोर पडे स्पेनी साम्राज्य क खिलाफ दक्षिण अमरीका ने सैन मार्टिन और साइमन बोलीवार के नेतृत्व मे बगावत का झण्डा बुलद किया। उधर बाल्कन राष्ट्रीयताओ मे यूनान राष्ट्रवादी विद्रोह के दौर से गुजर रहा था। तुर्क साम्राज्य के डूबते हुए सूर्य की रोशनी मे यूनानी प्राचीनता और मिथक शास्त्र यूनानी नौजवानो मे आजादी की चेतना फूकने के लिए काफी थे। ब्रिटेन, फ्रास और रूस ने भी मदद दी और बस साल के रक्तरजित सघर्ष के बाद यूनानियो को अपनी स्वतन्नता नसीब हुई।

19वीं शताब्दी साम्राज्यवाद उपनिवशवाद और राजशाही क खिलाफ सघर्ष की शताब्दी कही जानी चाहिए। फ्रासीसी क्रांति क आदर्शो स अनुप्राणित होकर सन् 1821 म सबस पहल यूनानिया न तुक साम्राज्य क खिलाफ अपनी आजादी का झण्डा बुलद किया। उधर दक्षिण अमरीका क छोट-छाट देश भी स्पेनी गुलामी क जुए का उतार फक्न क लिए मचल रह थ। उन्ह साइमन बोलीवार (Simon Bolivar) जैसा नता मिला जिस दक्षिण अमरीका का जार्ज वाशिगटन माना जाता था।

यूनानी क्रांति

तुर्की का साम्राज्य दक्षिण-पूर्व युराप से लेकर मध्य पूव तक फला हुआ था। 19वी शताब्दी म इसक ढाच म दरार पडनी शुरू हुइ। सुल्तान क कमजार हान का अर्थ था मुल्ला-मोलविया का उद्दण्ड हाना आर अधीनस्थ गर-मुस्लिमा क साथ कडाई स पश आना। नतीजतन उपनिवशा म विद्राह क बीज फूटना। तुर्की की गुलामी म जक्ड यूनानी सबस पहल राष्टवादी भावनाआ म भर उठ क्योंकि परिस्थितिया उन्ह इस ओर धकल रही थीं।

यूनानिया का पुराहित वर्ग अर्से स एक राष्टवादी ढाच म सगठित था। समुद्री व्यापार

साइमन बोलीवार

लॉर्ड बायरन

म लगे होने के कारण देश स बाहर हो रही घटनाओ का यूनान पर ज्यादा असर पडता था। इसलिए फ्रासीसी क्रांति का प्रभाव सबसे पहले उन्ही पर पडा।

सन् 1821 म बिशप ऑफ पात्रास (Bishop of Patras) ने विद्रोह की अपील की और मैवरोमिशालिस (Mavro Michalis) न मोरिया (Morea) को आजाद करा लिया। उधर समुद्री युद्ध मे भी तुर्की का यनानियो न काफी परशान किया। जनवरी 1822 मे एपीडाउरस (Epidaurus) म राष्ट्रीय असेंबली बुलायी गयी जिसम यूनानी आजादी की माग की गयी। तुर्कों ने इसका बडा क्रूर जवाब दिया। उनकी फौज कहर की तरह यूनानियो पर टूट पडी। यूनानियो का भयकर कत्लआम हुआ। यूनानी आजादी के इस सघर्ष म हिस्सा लने आए ब्रिटिश कवि और रूमानी व्यक्तित्व के धनी लॉर्ड बायरन (Lord Byron) न भी अपना जीवन खोया। बायरन की भागीदारी और मौत इस तथ्य का प्रतीक थी कि यनानी सघर्ष न पश्चिम युरोप की रोमानी क्रातिकारिता को काफी आकर्षित किया था। दस वर्ष चल आजादी के इस युद्ध न पराने यूनानी किवदंतियो और मिथको को एक बार फिर लोकप्रिय बनाया और अपनी प्राचीनता की खुराक पर पल रहे यूनानी नौजवानों मे कुर्बानी का एक नया जज्बा पैदा किया।

बहरहाल तुर्कों न मोरिया पर फिर स कब्जा कर लिया। यूनानियों की एक परपरागत खराब आदत आपस म भी लडने की थी। व आपस मे भी उतनी ही शिद्दत के साथ लडते जितना तुर्कों के खिलाफ। तुर्कों को उनकी इस प्रवृत्ति स काफी मदद मिली और यूनानी बगावत का पहला दौर आसानी स कुचल दिया गया। पर यूनान तो युरोप को दर्शन देने वाला देश था। जब तुर्कों न मिस्रियो को यूनानी विद्रोह कुचलने के लिए बुलाया

दक्षिण अमरीका का मानचित्र

से बाल्वा की खाडी (Gulf of Volvo) का इलाका राष्ट्र के रूप में मिला। 3 फरवरी 1830 को यूनान एक प्रभुसत्ता सपन्न राष्ट्र घोषित हुआ।

दक्षिण अमरीका की क्रातिया

स्पेन के अमरीकी उपनिवेशों ने सन् 1816 से ही अपनी मुक्ति की घोषणाए करनी शुरू कर दी थी। सैन मार्टिन (San Martin) के नेतृत्व में अर्जेंटीना आजाद हो चुका था। मार्टिन ने एण्डीज पर्वतमालाए पारकर एक साहसपूर्ण अभियान में चिली को भी आजाद करा लिया था। चिली की आजादी के दीवानों का नेतृत्व बर्नार्डो ओहिग्गिन्स (Bernardo O Higgins) ने किया था। नेपोलियन के हमलों ने स्पेन की राजशाही को कमजोर कर दिया था इसलिए उसके उपनिवेश मौका देखकर एक एक करके आजाद होते चले जा रहे थे। जैसे ही पतगाल ने पेड्रो प्रथम को ब्राजील का सम्राट माना और लातीनी अमरीका का सबसे बड़ा देश आजाद हुआ वैसे ही महान मुक्तिदाता साइमन बोलीवार ने क्रांतिकारियों की फौज लेकर बोलीविया की आजादी के लिए मुहिम छेड़ दी। बोलीवार ने न्यू ग्रैनेडा की लड़ाई जीतने में अद्भुत सैन्य कुशलता का परिचय दिया। इस इलाके का नाम ही बाद में बोलीवार के नाम पर बोलीविया पड़ा।

एक और साहसपूर्ण फौजी अभियान में पड़ोस के वेनजुएला को भी बोलीवार ने आजादी दिलवायी। सन् 1821 में ही सैन मार्टिन ने पेरू को आजाद किया। मैक्सिको में विद्रोह की पहली कोशिश नाकाम ही होने जा रही थी कि एक स्पेनी जनरल क्रियाल

जेम्स मुनरो

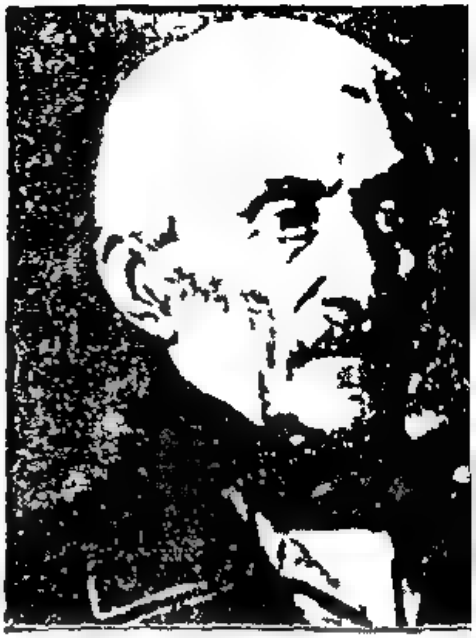

सैन मार्टिन

इटुरबाइड (Creol Iturbide) विद्राहियो स मिल गया और उसकी मदद स मैक्सिको आजाद हो गया।

इस दक्षिण अमरीका का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि साइमन बालीवार की सन् 1830 म मृत्यु हा गयी। अगर व कुछ दिन और जीवित रहत ता सन माटिन और आहिग्गिन्स क साथ मिलकर दक्षिण अमरीका क्रातिया क हिता का सुदृढ करत। सयुक्त राज्य अमरीका न सन् 1822 म ही दक्षिण अमरीका क इन नव-स्वतत्र दशा का मान्यता द दी थी। उत्तरी अमरीका न भी ता ब्रिटिश उपनिवशवादिया स इसी तरह लडकर अपनी आजादी हासिल की थी। सयुक्त राज्य शुरू स ही बालीवार और सन माटिन की कोशिशा के प्रति हमदर्दी रखता था। ज्यादर इन उपनिवेशा क आजाद हान स अमरीकी व्यापार म इजाफा हाने की सभावनाए भी थी। इन्ही मिल-जुल कारणा से सयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति जेम्स मुनरा (James Monroe) न युरापियन ताकता का चतावनी दी कि वे नयी दुनिया क दशा म हस्तक्षेप करने की जुरत न कर। इस चतावनी स कई युरापीय दशा खासकर जार की व कोशिश थम गयी जा चाहती थी कि दक्षिण अमरीका म एक बार स्पनी शासन हा जाय और अगर एसा न हा सक ता किसी न किसी तरह की राजशाही ता स्थापित हा ही जाय। मुनरा का यह कदम मुनरा डॉक्टिन (Monroe Doctrin) क नाम स जाना जाता है।

ब्रिटन शुरू स ही विद्राहिया का थाडी-बहुत मदद दता रहा था। उसन अर्जेटीना क साथ व्यापार-सधि कर ली। सन् 1824 म दक्षिण अमरीका म अतिम स्पनी सना पराजित की गयी और दा साल बाद अतिम स्पनी तापखाने ने हथियार डाल दिय। इसी के साथ दक्षिण अमरीका म स्पनी साम्राज्य का नामोनिशान मिट गया।

बोलीवार न बोलीविया क राष्ट्रपति क रूप मे पनामा म दूसर नताआ की मदद स इन नव स्वतत्र दशो का एक महासघ म गठित करन का असफल प्रयास किया। अगर एसा हा जाता तो ये छाट-छाट दश आपसी लडाइ म अपनी ऊर्जा बरबाद न करत। ■■

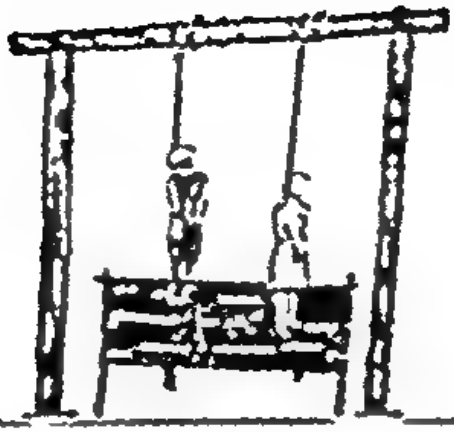

जुलाई क्रांति और बेल्जियम की आजादी

(1830-1848)

फ्रांसीसी क्रांति की पराजय जरूर हो गयी थी लेकिन उसका विचार-धारात्मक असर पूरी शिद्दत के साथ मौजूद था। नेपोलियन के पराभव के बाद फ्रांस भीतर ही भीतर एक और क्रांति के लिए तैयार हो रहा था। लुई फिलिप को सत्ता में लाने वाली इस क्रांति ने एक ऐसा राजा दिया जो 'फ्रांस' का नहीं बल्कि 'फ्रांसीसियों' का राजा था। इन्हीं परिस्थितियों के ज्वालामुखी से बेल्जियम की क्रांति का लावा फूटा। फ्रांस और हॉलैंड की तमाम नापाक कोशिशों के बावजूद बेल्जियम के रणबाकुरे क्रांतिकारियों ने अपनी आजादी हासिल करके ही सांस ली।

चार्ल्स का राज्यारोहण-समारोह

शानुतापूर्ण समीकरण आखिर कब तक चल पाता। चार्ल्स ने छाट-छाटकर अनुदारवादियो को अपनी हकूमत म भर लिया। लोगो को डर लगने लगा कि कही वह उनके छिल कधो पर तानाशाही का जआ फिर से न लाद द।

सन् 1830 मे प्रतिनिधि सभा (Chamber of Deputies) के चुनाव हुए। इसम जनता ने खुलकर अपना गुस्सा-गुब्बार निकाला और चार्ल्स चुनाव हार गया। चार्ल्स ने जनादेश की उपक्षा की और चेंबर को बेशर्मी स भग कर दिया। अब वह राजाज्ञाए निकाल निकालकर हुकूमत करने लगा। ऐसी ही एक राजाज्ञा के जरिए चार्ल्स ने प्रस की आजादी पर पाबदी लगा दी और चुनाव के नियम बदल दिय। फिर इसके बाद जस पूर राष्ट्र की इच्छाओ का अपमान करता हआ चार्ल्स शिकार खेलने चला गया।

परिस के प्रिंटस बराजगारी के अदशो से घिर गय। उन्होने विरोध म अपना धधा बद कर दिया। उनकी दखा दखी दूसरो ने भी ऐसा ही कदम उठाया। जुलाइ की भीषण गर्मी म गुस्से से खौलते हुए लोग क्राति के प्रतीक तिरगे की छाव म जमा होने लगे। नात्र डम (Notre Dame) चर्च पर तिरगा लहराने लगा। चार्ल्स की हरकतो पर यह अनापेक्षित प्रतिक्रिया देखकर सरकार भौचक्की रह गयी। उसके पास तो इस बगावत को दबाने के लिए पूरे फौजी तक न थे। 27 जुलाई को शुरू हुई यह क्राति 29 जुलाई तक आते-आते कामयाबी की मजिल तक पहुच चुकी थी।

परिस के छात्रो और मजदूरो ने बैरिकेड खड़े कर लिए और खुद को नगर का मालिक घोषित कर दिया। चार्ल्स की कुछ समझ मे न आया। उसने घबराकर गद्दी छोड दी और अपने पौत्र ड्यूक ऑफ बार्डेक्स (Duke of Bordeaux) को राजा बनाने की घोषणा कर दी। पर क्रातिकारियो ने इस समस्या का हल मानने से इकार कर दिया। क्राति म मुख्यत

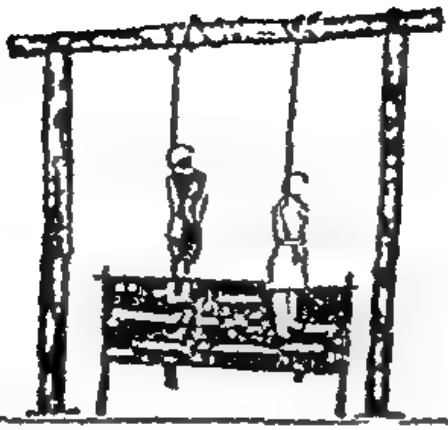

जुलाई क्रांति और बेल्जियम की आजादी

(1830 1848)

फ्रांसीसी क्रांति की पराजय जरूर हो गयी थी, लेकिन उसका विचार-धारात्मक असर पूरी शिद्दत के साथ मौजूद था। नेपोलियन के पराभव के बाद फ्रांस भीतर ही भीतर एक और क्रांति के लिए तैयार हो रहा था। लूई फिलिप को सत्ता में लाने वाली इस क्रांति ने एक ऐसा राजा दिया जो 'फ्रांस' का नहीं बल्कि 'फ्रांसीसियों' का राजा था। इन्हीं परिस्थितियों के ज्वालामुखी से बेल्जियम की क्रांति का लावा फूटा। फ्रांस और हॉलैंड की तमाम नापाक कोशिशों के बावजूद बेल्जियम के रणबांकुरे क्रांतिकारियों ने अपनी आजादी हासिल करके ही सांस ली।

फ्रांसीसी क्रांति के असफल हो जाने का यह मतलब कतई नहीं था कि उन विचारों और सपनों की मौत हो गयी थी, जो इस क्रांति के मौलिक स्रोत थे। यह ठीक है कि नपोलियन बोनापार्ट ने अपनी साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाओं का फलते-फूलते दमन की गरज से पूरे यूरोप को युद्ध की आग में झोंका। यही नहीं खुद को सम्राट बनाकर अपना गजबका चलाने तक का अधिकार भी हासिल कर लिया पर उसके शासन ने कुछ उदार कदम भी उठाये। ये सभी ऊंचे कदम फ्रांसीसी क्रांति की परंपरा में ही थे। इन्हीं के फलस्वरूप राजशाही दोबारा कभी अपनी पहले जैसी जड़ें नहीं जमा सकी। सन् 1814 में लूई अट्ठारहवें ने शासन संभाला और देखते देखते निर्वासित जीवन गुजार रहे फ्रांसीसी सामंत अपने पूरे रंग-रुतबे के साथ वापस आने लगे। उन्होंने अपनी-अपनी जागीरें संभाल लीं। आम लोगों को यह सब एक आंख न भाया पर उन्हें सही वक्त का इंतजार था।

फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव में यूनान अपनी आजादी जीत चुका था। दक्षिण अमरीका में साइमन बोलीवार के नेतृत्व में मुक्ति की आग धधक चुकी थी। लूई के बाद उसका बेटा चार्ल्स दशम गद्दी पर बैठा। राजा बनने से चार्ल्स एक अतिप्रतिक्रियावादी दल का नेता था। न उसे जनता में दिलचस्पी थी और न ही जनता को उसमें। राजा और प्रजा का यह

चार्ल्स का राज्यारोहण समारोह

शनुतापूर्ण मर्मीकरण आखिर कब तक चल पाता। चार्ल्स न छाट-छाटकर अनुदारवादिया का अपनी हुकूमत म भर लिया। लागा को डर लगन लगा कि कही वह उनक छिल कधा पर तानाशाही का जुआ फिर स न लाद दे।

मन् 1830 म प्रतिनिधि सभा (Chamber of Deputies) क चुनाव हुए। इसम जनता ने खुलकर अपना गुस्सा-गुब्बार निकाला ओर चार्ल्स चुनाव हार गया। चार्ल्स न जनादश की उपेक्षा की ओर चबर का बशर्मी से भग कर दिया। अब वह राजाज्ञाए निकाल निकालकर हुकूमत करन लगा। एसी ही एक राजाज्ञा क जरिए चार्ल्स न प्रस की आजादी पर पाबदी लगा दी और चुनाव क नियम बदल दिय। फिर इसक बाद जेसे पूर राष्ट्र की इच्छाआ का अपमान करता हआ चार्ल्स शिकार खलन चला गया।

परिस क पिटस बराजगारी के अदश स घिर गये। उन्हान विरोध म अपना धधा बद कर दिया। उनकी देखा देखी दूसरा न भी एसा ही कदम उठाया। जुलाई की भीषण गर्मी म गुस्स स खौलत हुए लाग क्राति क प्रतीक तिरग की छाव म जमा होन लग। नात्र डेम (Notre Dame) चच पर तिरगा लहरान लगा। चाल्स की हरकता पर यह अनापेक्षित प्रतिक्रिया दखकर सरकार भौचक्की रह गयी। उसक पास ता इस बगावत को दबान के लिए पूरे फाजी तक न थ। 27 जुलाई को शुरू हुई यह क्राति 29 जुलाई तक आत-आते कामयाबी की मजिल तक पहुच चुकी थी।

पेरिस के छात्रा और मजदूरा न बेरिकड खड कर लिए और खुद का नगर का मालिक घोषित कर दिया। चार्ल्स की कुछ समझ म न आया। उसने घबराकर गद्दी छाड दी और अपन पौत्र ड्यूक ऑफ बार्डेक्स (Duke of Bordeaux) को राजा बनान की घापणा कर दी। पर क्रातिकारिया ने इसे समस्या का हल मानन स इकार कर दिया। क्राति म मुख्यत

उदारतावादी और बोनापार्टवादी भाग ले रहे थे। मृत्यु के बाद नेपोलियन की छवि एक ऐसे 'पौराणिक नायक' की हो गयी थी जो न केवल फ्रांसीसी साम्राज्य की 'महाकाव्यात्मक विजय' का प्रतीक था बल्कि मुक्तिदाता के रूप में भी देखा जाता था। बोनापार्टवादियों ने सन् 1815 की शर्मनाक संधियों को मिटा देने की आकांक्षा के साथ भी क्रांति की थी। इसका मतलब था कि अगर उनकी चलती तो फ्रांस की फौज बेल्जियम को हड़पने और राइन नदी के बायें तट तक साम्राज्य फैलाने की कोशिश करती। पर क्रांति से जुड़े घटक उदारतावादियों का इरादा कुछ और ही था। थिएर (Thiers) नामक एक युवक पत्रकार और लाफित (Laffitte) नामक प्रभावशाली बैंकर ने इस संकट का हल निकालने में पहलकदमी की। उन्होंने चार्ल्स के राजवंश में ही एक ऐसा सामंत तलाशा, जो न केवल उदारतावादी विचारों का था बल्कि गणराज्य के हक में लड़ भी चुका था। ड्यूक ऑफ ऑर्लियंस (Duke of Orleans) लूई फिलिप को नया राजा बनने के लिए चैंबर द्वारा निमंत्रित किया गया। लूई फिलिप ने सार्वजनिक रूप से क्रांतिकारी झंडे में आस्था जताई और 'क्रांति के प्रतीक' बन चुके लाफायत (Lafayette) को गले से लगाया। लूई ने वायदा किया कि वह फ्रांस का राजा बनने के बजाय फ्रांसीसियों का राजा बनकर दिखायेगा।

इस तरह जिस क्रांति का बीज वपन आम जनता के असंतोष से हुआ था, वह पूंजीपति वर्ग की राजशाही में बदल गयी। उस जमाने में यही पूंजीपति वर्ग सबसे प्रगतिशील और क्रांतिकारी वर्ग था और फ्रांसीसी क्रांति के समानता स्वतंत्रता और भाइचारे के महान नारे का प्रतिनिधित्व करता था।

चार्ल्स का पलायन

लिबर्टी एट बेरिकेड्स जुलाई क्रांति का प्रसिद्ध प्रतीक चित्र

लूई फिलिप के दो चेहरे। अपनी गलत नीतियो और अलोकप्रियता के कारण उसे इस रूप मे चित्रित किया गया।

और पूजीपतिया की प्रिय सरकार देखते ही दखत अलोकप्रिय हान लगी। मजदूरा, सिपाहिया और युवा क्रातिकारिया की लूई फिलिप की सरकार मे स दिलचस्पी खत्म हा चुकी थी। जुलाई-क्राति स शुरू हुई 18 साल की राजशाही का अत धीर-धीर पास आ रहा था। सन् 1848 की क्राति ने लूई के शासन पर निर्णायक चाट मारकर उसका अत कर दिया।

बेल्जियम की क्राति

लूई क इस पूजीवादी शासन की देन एक और क्राति थी, जिस दुनिया बल्जियम की आजादी के नाम से जानती है। 16वी शताब्दी के आखिर म डचा न अपनी आजादी हासिल की थी। तब भी हॉलैंड के दक्षिण प्रात स्पेन के शासन क शिकजे म कसे रह गये थ। बाद म आस्ट्रिया के साम्राज्य ने उन पर कब्जा कर लिया था। नेपालियन की फौजा न आस्ट्रिया का ध्वस्त कर दिया पर सन् 1814 म नेपालियन की पराजय क बाद इन प्राता का हॉलैंड के साथ चस्पा कर दिया गया। य प्रात बल्जियम क नाम से जाने जात थ। डचा क साथ जुडना बेल्जियमवासिया का कभी अच्छा नही लगा। दाना के धर्म भाषा और सामाजिक रीति रिवाज एकदम अलग-अलग थे। डच राजा के शासन म बेल्जियमा का महसूस होता कि उनके साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा सौतला सलूक हो रहा है।

सन् 1830 मे डच शासन के खिलाफ दगे होने लगे जो जल्दी ही एक निर्णायक क्राति की शक्ल में बदल गये। 4 अक्तूबर को ब्रूसेल्स (Brussels) म बल्जियम की आजादी की घोषणा कर दी गयी। हॉलैंड ने घबराकर वियना की सधि' का कायम रखने की गारटी दने वाले देशों से मदद की अपील की। य देश बेल्जियम क्राति को दबाने के हक म थ क्योंकि उनके हिसाब से राइनलैंड, स्विट्जरलैंड और इटली तक इस क्राति का असर पड सकता

चार्ल्स का परिस आगमन

जाहिर था कि एम राजा क अधिकार ता ओर कम हात चल जान थ। लूइ फिलिप क समथक दा भागा म बट हए थ। प्रगतिशील गुट मूवमट क नाम स आर मध्यवर्गी गट रसिस्टस क नाम म जाना जाता था। राजा ने पहल मूवमट वाला का बढावा दिया आर फिर रसिस्टस वाला का। शासन पद्धति म सुधार हुए। तय किया गया कि राजा राजाना आ क नाम पर निरकश शासन नही चला सकता। मताधिकार का आर व्यापक तथा पना बनाया गया जिसस मतदाताआ की सख्या पहल की तुलना म दागनी हा गयी। जुलाइ क्राति क चरित्र क मुताबिक ही लूइ न खशहाल मध्यम वर्ग का आग बढ़ाया। उनकी तिजारिया म पैसा बढ़न लगा। फ्रास के इस वग की समद्धि की झलक बालजाक क उप यासा म दखी जा सकती है। फाइनसरा उद्यागपतिया और व्यापारिया न कषि रलव और विदश नीति इस तरह बनायी कि उस युद्ध म न फसना पड आर व्यापारी वर्ग फलता फूलता रह।

जिस अनपात म पूजीपति वर्ग की जब भर रही थी दूसरी आर उसी अनपात म बहसख्यक लागा की गरीबी भी बढ़ रही थी। राष्ट्रवादी इसलिए नाराज हा रह थ कि फ्रास बल्जियम और अल्जीरिया क मामल म ब्रिटन का खश करन की नीति अपना रहा था। क्रांतिकारी इसलिए चिढ हए थ कि जिस उ हान बहसख्यक लागा का राजा बनाया वह सिफ मध्यवर्गीय व्यापारिया का माउथपीस बनकर रह गया था। राजशाही क समथक मानत थ कि लूई फिलिप का ता आनवाशक रूप म राजा बनना ही नही चाहिए था। उनक हिसाब म वह राजघरान क ऊपरी तबक की सतान था ही नही। बानापाटवादी मानन लग थ कि लूई न उनकी साम्राज्यवादी आकाक्षाआ का चाट पहचाई है। इस बहवर्गीय असताष क नतीजतन मजदूरा की हडताल हान लगी सना म बगावत की चिगारिया भडकन लगी और परिस की सडक युद्ध क मदान म बदलन लगी। व्यापारियो

लूई फिलिप के दो चेहरे। अपनी गलत नीतियो और अलोकप्रियता के कारण उसे इस रूप मे चित्रित किया गया।

आर पूजीपतियो की प्रिय सरकार देखते ही दखत अलाकप्रिय होने लगी। मजदूरा, सिपाहिया और युवा क्रातिकारिया की लूइ फिलिप की सरकार म स दिलचस्पी खत्म हा चुकी थी। जुलाई-क्रांति स शुरू हुइ 18 साल की राजशाही का अत धीर-धीर पास आ रहा था। सन् 1848 की क्रांति न लूई क शासन पर निर्णायक चाट मारकर उसका अत कर दिया।

बेल्जियम की क्रांति

लूई के इस पूजीवादी शासन की देन एक और क्रांति थी, जिसे दुनिया बल्जियम की आजादी के नाम से जानती है। 16वी शताब्दी के आखिर मे डचा न अपनी आजादी हासिल की थी। तब भी हॉलैंड के दक्षिण प्रात स्पेन के शासन क शिकजे म कस रह गय थ। बाद मे आस्ट्रिया के साम्राज्य ने उन पर कब्जा कर लिया था। नपालियन की फौजा ने आस्ट्रिया का ध्वस्त कर दिया पर सन् 1814 मे नपोलियन की पराजय क बाद इन प्राता को हॉलैंड क साथ चस्पा कर दिया गया। ये प्रात बल्जियम क नाम स जान जात थे। डचा क साथ जुड़ना बेल्जियमवासिया को कभी अच्छा नही लगा। दोनो क धर्म भाषा और सामाजिक रीति रिवाज एकदम अलग-अलग थ। डच राजा क शासन म बल्जियमा का महसूस होता कि उनके साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा सौतला सलूक हो रहा है।

सन् 1830 म डच शासन के खिलाफ दग होने लगे, जो जल्दी ही एक निर्णायक क्रांति की शक्ल में बदल गय। 4 अक्तूबर को ब्रुसल्स (Brussels) मे बल्जियम की आजादी की घोषणा कर दी गयी। हॉलैंड ने घबराकर वियना की संधि का कायम रखने की गारटी दन वाले दशो से मदद की अपील की। य देश बेल्जियम क्रांति को दबाने क हक मे थ क्योंकि उनके हिसाब स राइनलैंड, स्विट्जरलैंड और इटली तक इस क्रांति का असर पड सकना

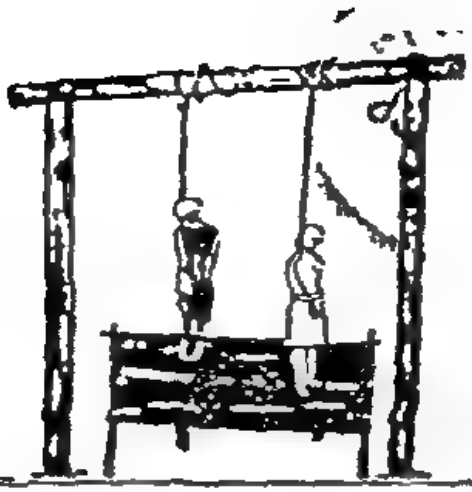

भारतीय स्वतत्रता का प्रथम सग्राम

(1857 1859)

प्लासी के युद्ध के बाद अग्रेजी साम्राज्य की जडे भारत मे गहरी जमती चली गयीं, पर भारतीय राजे-रजवाडो, जनता और सिपाहियो ने पूरे सौ वर्ष तक विद्रोह की परपरा भी कायम रखी। सन् 1857 मे एक अभूतपूर्व विद्रोह हुआ, जिसमे अभी तक के सभी विद्रोहो की प्रवृत्तिया और उनका अखिल भारतीय स्वरूप परिलक्षित हो रहा था। इसमे जमींदार, राजा, नवाब, बादशाह, पडित, मौलवी, सरकारी कर्मचारी, सिपाही, कारीगर और किसान शामिल थे। विदेशी इतिहासकार इस विद्रोह को 'सिपाहियो का गदर' कहकर अपमानित करते है, पर यह वास्तव मे भारतीय स्वतत्रता का पहला महासग्राम था। इसका नेतृत्व बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, बख्त खा, फिरोज शाह, बेगम हजरत महल, कुअर सिंह और मौलवी अहमदशाह ने जान की बाजी लगाकर किया। विद्रोह असफल रहा पर इसने अग्रेजी साम्राज्य की चूले इस दर्जा हिला दीं कि ब्रिटेन को ईस्ट इंडिया कपनी से भारत की बागडोर अपने हाथ मे लेनी पडी।

अंग्रेजो ने ससदीय क्रांति करके अपनी जनता को तो आजादी और खुशहाली का स्वाद चखाया लेकिन उसकी कीमत उनके उपनिवेशो की जनता को चुकानी पडी। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र म असाधारण उन्नति हुई। दरअसल उन्नति के कुबरमुक्त की जड मे कहीं न कहीं ब्रिटेन के उपनिवेशो के किसानों और व्यापारिक शोषण की खाद पर फल-फूल रही थी। अग्रज सौदागरो की विशाल कपनी ईस्ट इंडिया कपनी न व्यापार करने की नियत स भारत की धरती पर कदम रखा था लेकिन ढहत हुए मुगल साम्राज्य और खोखल होते हुए भारतीय सामतवाद ने उसे सत्ता पर अधिकार करने का सुनहरी मौका दे दिया। ब्रिटन के व्यापारिक हितो की हुकूमत की बागडोर अपने हाथो म रखकर और भी सुरक्षित रखा जा सकता था।

बेल्जियम का मानचित्र

था, लेकिन ब्रिटेन बुरी तरह अड गया। उसने तय किया कि वह फ्रास का इस युद्ध क पचडे मे नही पडन दगा। फ्रास की नयी सरकार भी किसी कीमत पर युद्ध क मूड म नही थी। लूर्ई फिलिप ने टेलीरैण्ड (Talleyrand) को रिटायरमेट स बुलाकर ब्रिटेन के साथ समझौता-वार्ता करने भेजा। 76 वर्षीय टलीरैण्ड ने लदन जाकर ब्रिटेन का विश्वास दिला दिया कि फ्रास बल्जियम म हस्तक्षेप करने क खिलाफ है। इसी क बाद एक फौजी सधि हुई, जिसन बल्जियम और हॉलैंड क बीच युद्ध-विराम करा दिया। बेल्जियम का एक स्वतत्र एव तटस्थ राष्ट्र घोषित कर दिया गया। रूस का जार इस घटनाक्रम से खुश नही था, पर उसी समय पोलैंड मे विद्राह शुरू हो गया। इससे उसका ध्यान बट गया और उसे इस मामले म टाग फसान का मोका ही नही मिल पाया।

अब यह समस्या मुह बाए खडी थी कि बल्जियम का राजा कान बन? काफी सोचन समझन क बाद सक्स कोबुर्ग (Sexe Coburg) के राजकुमार प्रिस लियोपाल्ड को राजा बनाया गया। पर नय राज्य की सीमाओ क सवाल पर हॉलैंड और बेल्जियम म फिर झगडा हो गया। बल्जियम का दावा था कि मास्ट्रिच (Maastricht), लिम्बर्ग (Limberg) और लुक्समबर्ग (Luxemburg) उसके दायर म होने चाहिए। फ्रास की मदद से हॉलैंड ने हमला बोलकर ब्रुसेल्स पर कब्जा कर लिया। नयी सधि हुई। इसमे हॉलैंड को मास्ट्रिच और लिम्बर्ग का एक हिस्सा द दिया गया पर उसे एण्टवर्प स अपनी फौज हटान से इकार करना जारी रखा। इस पर ब्रिटिश और फ्रासीसी फौजो ने मिलकर कार्रवाई की और हॉलैंड को बल्जियम की आजादी को मान्यता दन पर मजबूर किया।

यूरोप में क्रांतियों और विद्रोहो का दौर अभी चालू रहना था। जुलाई-क्रांति के ही साल म लिवरपूल-मैंचस्टर रेलव चालू हुई, जो खासतौर पर सवारिया ले जाने के लिए बनी पहली रेलवे सेवा थी। अगले साल माइकल फैराडे ने विद्युत-चुबकीय प्रेरण (Electro-magnetic Induction) की खोज की। मार्स (Morse) ने टेलीग्राफ की रचना की। इसी वर्ष इग्लैंड म ससदीय-सुधारों का दौर आया। सन् 1833 म पहला फैक्टरी एक्ट बना जिसम मजदूरो के अधिकारो का झडा बुलद हुआ। कला और साहित्य क क्षेत्र म भी यह क्रातिकारी रचनाओ का काल था। बालजाक पुश्किन, स्टण्टाल और विक्टर ह्यूगो जैस महान लेखक इसी दौर की पैदावार थ। समग्रत क्रातियो क इस युग को राजनैतिक परिवर्तन क समानातर ही सास्कृतिक और सामाजिक बदलाव का युग भी कहा जा सकता है। ■■

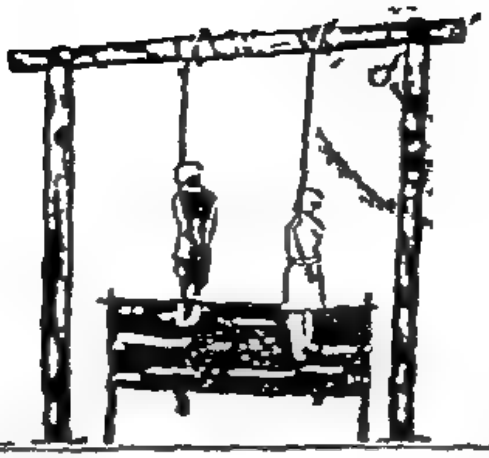

भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम सग्राम

(1857 1859)

प्लासी के युद्ध के बाद अग्रेजी साम्राज्य की जडे भारत मे गहरी जमती चली गयीं, पर भारतीय राजे-रजवाडो, जनता और सिपाहियो ने पूरे सौ वर्ष तक विद्रोह की परपरा भी कायम रखी। सन् 1857 मे एक अभूतपूर्व विद्रोह हुआ, जिसमे अभी तक के सभी विद्रोहो की प्रवृत्तिया और उनका अखिल भारतीय स्वरूप परिलक्षित हो रहा था। इसमे जमींदार, राजा, नवाब, बादशाह, पडित, मौलवी, सरकारी कर्मचारी, सिपाही, कारीगर और किसान शामिल थे। विदेशी इतिहासकार इस विद्रोह को 'सिपाहियो का गदर' कहकर अपमानित करते है, पर यह वास्तव मे भारतीय स्वतत्रता का पहला महासग्राम था। इसका नेतृत्व बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, बख्त खा, फिरोज शाह, बेगम हजरत महल, कुअर सिंह और मौलवी अहमदशाह ने जान की बाजी लगाकर किया। विद्रोह असफल रहा पर इसने अग्रेजी साम्राज्य की चूले इस दर्जा हिला दीं कि ब्रिटेन को ईस्ट इडिया कपनी से भारत की बागडोर अपने हाथ मे लेनी पडी।

अंग्रेजा न ससदीय क्रांति करके अपनी जनता को तो आजादी और खुशहाली का स्वाद चखाया लेकिन उसकी कीमत उनके उपनिवेशो की जनता को चुकानी पडी। ब्रिटन मे औद्योगिक क्रांति हुई और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे असाधारण उन्नति हुई। दरअसल उन्नति के कुकरमुत्ते की जड मे कही न कही ब्रिटेन के उपनिवशा के किसाना और व्यापारिक शोषण की खाद पर फल फूल रही थी। अग्रेज सौदागरो की विशाल कपनी 'इस्ट इंडिया कपनी' ने व्यापार करने की नियत से भारत की धरती पर कदम रखा था लेकिन ढहते हुए मुगल साम्राज्य और खोखले होते हुए भारतीय सामतवाद न उस सत्ता पर अधिकार करने का सुनहरी मौका दे दिया। ब्रिटेन के व्यापारिक हितो का हुकूमत की बागडोर अपने हाथा म रखकर और भी सुरक्षित रखा जा सकता था।

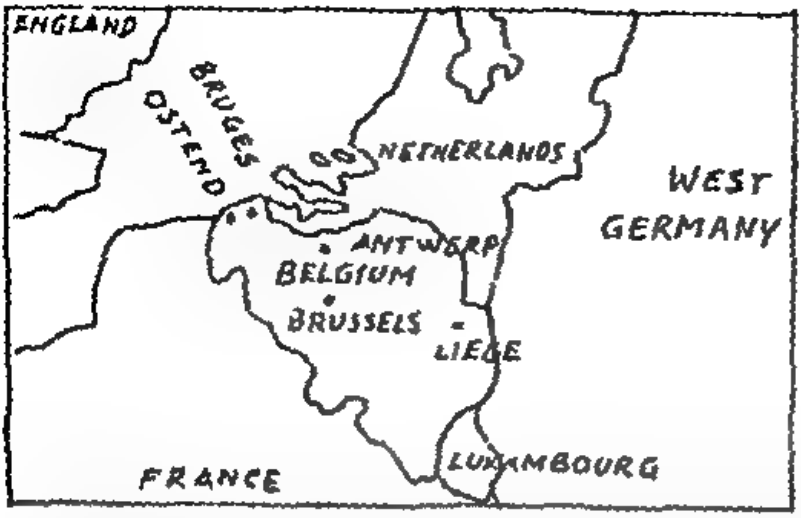

बेल्जियम का मानचित्र

था, लेकिन ब्रिटेन बुरी तरह अड गया। उसने तय किया कि वह फ्रास को इस युद्ध के पचड म नही पडने दगा। फ्रास की नयी सरकार भी किसी कीमत पर युद्ध के मूड में नही थी। लूई फिलिप ने टलीरैण्ड (Talleyrand) को रिटायरमेट से बुलाकर ब्रिटेन के साथ समझौता वार्ता करने भेजा। 76 वर्षीय टलीरैण्ड ने लदन जाकर ब्रिटेन को विश्वास दिला दिया कि फ्रास बेल्जियम म हस्तक्षेप करने के खिलाफ है। इसी के बाद एक फौजी संधि हुई, जिसने बेल्जियम और हॉलैंड के बीच युद्ध-विराम करा दिया। बेल्जियम को एक स्वतत्र एव तटस्थ राष्ट्र घोषित कर दिया गया। रूस का जार इस घटनाक्रम से खुश नही था पर उसी समय पोलैंड म विद्रोह शुरू हो गया। इससे उसका ध्यान बट गया और उस इस मामले म टाग फसाने का मौका ही नही मिल पाया।

अब यह समस्या मुह बाए खडी थी कि बेल्जियम का राजा कौन बने? काफी सोचने-समझने के बाद सेक्स कोबुर्ग (Sexe Coburg) के राजकुमार पिंस लियोपाल्ड को राजा बनाया गया। पर नये राज्य की सीमाओ के सवाल पर हॉलैंड और बेल्जियम म फिर झगडा हो गया। बेल्जियम का दावा था कि मास्ट्रिच (Maastricht), लिम्बर्ग (Limberg) और लुक्सेमबुर्ग (Luxemburg) उसके दायरे म होने चाहिए। फ्रास की मदद से हॉलैंड ने हमला बोलकर ब्रूसेल्स पर कब्जा कर लिया। नयी संधि हुई। इसम हॉलैंड को मास्ट्रिच और लिम्बर्ग का एक हिस्सा दे दिया गया पर उसे एण्टवर्प से अपनी फौज हटाने से इकार करना जारी रखा। इस पर ब्रिटिश और फ्रासीसी फौजो ने मिलकर कारवाई की और हॉलैंड को बेल्जियम की आजादी को मान्यता देने पर मजबूर किया।

युरोप म क्रांतियो और विद्रोहो का दौर अभी चालू रहना था। जुलाई-क्रांति के ही साल म लिवरपूल-मैंचेस्टर रेलवे चालू हुई, जो खासतौर पर सवारियो ले जाने के लिए बनी पहली रेलवे-सेवा थी। अगले साल माइकल फैराडे ने विद्युत चुबकीय प्रेरण (Electro-magnetic Induction) की खोज की। मार्स (Morse) ने टेलीग्राफ की रचना की। इसी वर्ष इग्लैंड म ससदीय-सुधारो का दौर आया। सन् 1833 म पहला फैक्टरी एक्ट बना जिससे मजदूरो के अधिकारो का झडा बुलद हुआ। कला और साहित्य के क्षेत्र म भी यह क्रांतिकारी रचनाओ का काल था। बालजाक पुश्किन स्टेण्टाल और विक्टर ह्यूगो जैसे महान लेखक इसी दौर की पैदावार थे। समग्रत क्रांतियो के इस युग को राजनैतिक परिवर्तन के समानातर ही सास्कृतिक और सामाजिक बदलाव का युग भी कहा जा सकता है। ■■

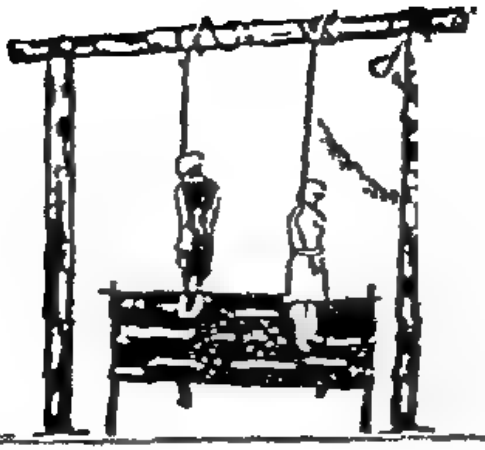

भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम

(1857 1859)

प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजी साम्राज्य की जड़े भारत मे गहरी जमती चली गयीं, पर भारतीय राजे-रजवाड़ो, जनता और सिपाहियो ने पूरे सौ वर्ष तक विद्रोह की परपरा भी कायम रखी। सन् 1857 मे एक अभूतपूर्व विद्रोह हुआ, जिसमे अभी तक के सभी विद्रोहो की प्रवृत्तिया और उनका अखिल भारतीय स्वरूप परिलक्षित हो रहा था। इसमे जमींदार, राजा, नवाब, बादशाह, पंडित, मौलवी, सरकारी कर्मचारी, सिपाही, कारीगर और किसान शामिल थ। विदेशी इतिहासकार इस विद्रोह को 'सिपाहियो का गदर' कहकर अपमानित करते है, पर यह वास्तव मे भारतीय स्वतत्रता का पहला महासग्राम था। इसका नेतृत्व बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, वल्लभ खा, फिरोज शाह, बेगम हजरत महल, कुअर सिंह और मौलवी अहमदशाह ने जान की बाजी लगाकर किया। विद्रोह असफल रहा पर इसने अंग्रेजी साम्राज्य की चूले इस दर्जा हिला दीं कि ब्रिटेन को ईस्ट इंडिया कपनी से भारत की बागडोर अपने हाथ मे लेनी पड़ी।

अंग्रजो ने ससदीय क्राति करके अपनी जनता को तो आजादी और खुशहाली का स्वाद चखाया लेकिन उसकी कीमत उनके उपनिवेशा की जनता को चुकानी पड़ी। ब्रिटन म औद्योगिक क्राति हुई और ज्ञान-विज्ञान क क्षत्र मे असाधारण उन्नति हुई। दरअसल उन्नति क कुकरमुत्ते की जड म कहीं न कहीं ब्रिटन क उपनिवेशा के किसानों और व्यापारिक शोषण की खाद पर फल-फूल रही थी। अंग्रेज सौदागरों की विशाल कपनी ईस्ट इंडिया कपनी न व्यापार करने की नियत से भारत की धरती पर कदम रखा था लेकिन ढहते हुए मुगल साम्राज्य और खोखले होते हुए भारतीय सामतवाद न उसे सत्ता पर अधिकार करने का सुनहरी मौका दे दिया। ब्रिटेन क व्यापारिक हितों या हुकूमत की बागडोर अपने हाथो म रखकर और भी सुरक्षित रखा जा सकता था।

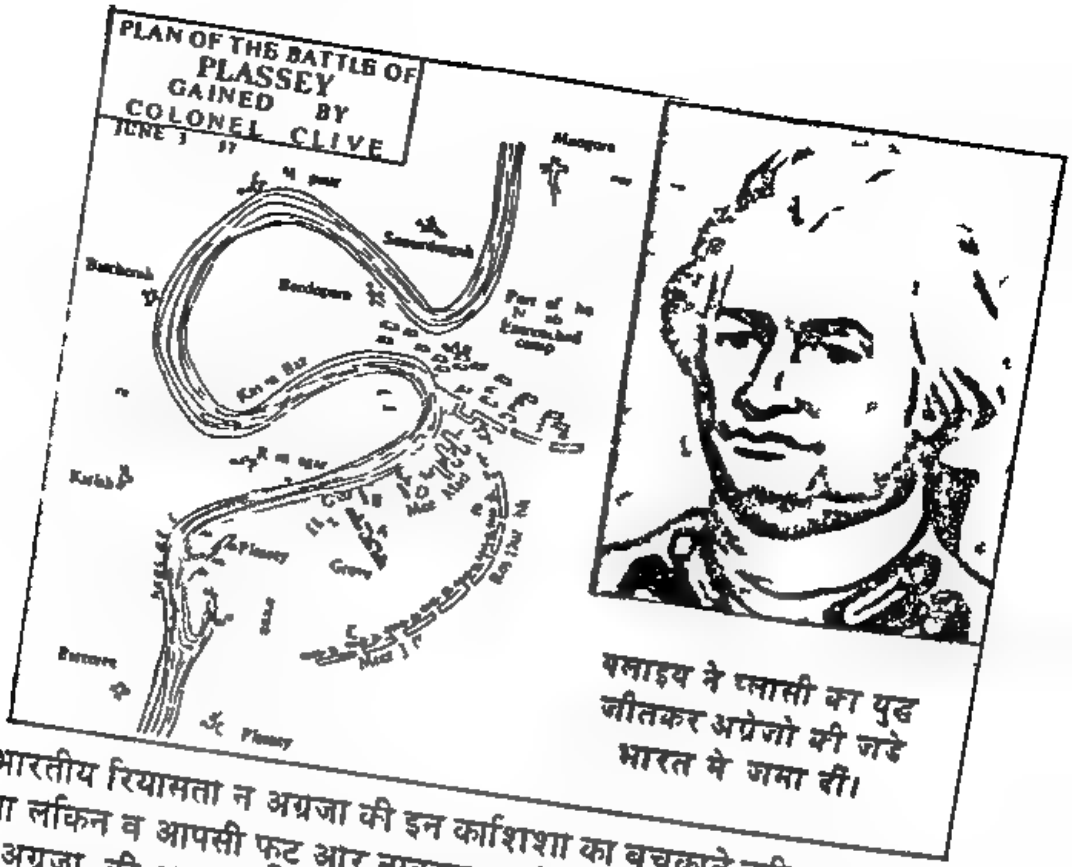

क्लाइव ने प्लासी का युद्ध जीतकर अंग्रेजों की जड़े भारत में जमा दीं।

भारतीय रियासतो ने अंग्रेजो की इन कोशिशो का बचकाने तरीके से काफी विरोध किया लेकिन वे आपसी फूट और नाकारापन के कारण गोरो की चालो को नही काट सकी। अंग्रेजो की सैन्य शक्ति कम होने के बावजूद प्लासी के मैदान में स्थानीय बहुसंख्यक फौजो की हार हुई। सन् 1764 में दिल्ली के बादशाह शाह आलम बक्सर के मैदान में हार गये। सन 1765 में उन्होने बंगाल बिहार और उडीसा की दीवानी अंग्रेजो को सौंपकर उनकी राजसत्ता को स्वीकार कर लिया और उसे कानूनी स्वीकृति दे दी। सन् 1772 में वारेन हेस्टिंग्स (Warren Hastings) ने इन सूबो की हुकूमत संभाली और ब्रिटिश शासन व्यवस्था की शुरुआत हुई। धीरे धीरे मैसूर, हैदराबाद अवध सहित मराठा जाटो और सिक्खो की रियासत भी ब्रिटिश हुकूमत के मातहत होती चली गयी।

इस पराजय के बावजूद भारतीय जमींदारो सामंतो राजाओ, व्यापारियो और आम जनता ने ब्रिटिश शासन को कभी चुपचाप बर्दाश्त नही किया। प्लासी की लडाई और सन् 1857 के बीच के पूरे सौ साल अनगिनत विद्रोहो और बगावतो के साल थे। मीर-कासिम का विद्रोह पहाडी जातियो का विद्रोह, चुआर के विद्रोह कोल विद्रोह संथालो का विद्रोह, उडीसा के जमींदारो का विद्रोह खोंड विद्रोह असम के विद्रोह खासी विद्रोह मजनूशाह के नेतृत्व मे मुसलमान फकीरो का विद्रोह सन्यासियो का विद्रोह मद्रास प्रेसीडेंसी की उथल-पुथल, विजय नगर के राजा का विद्रोह दीवान वेलुतांपी का विद्रोह ढाढ जी बाघ का विद्रोह राजा महीपतराम का विद्रोह मुबारिज्जुद्दौला का विद्रोह रामोसी विद्रोह गडकरी विद्रोह गोरखपुर हाथरस और रुहेलखण्ड के विद्रोह वहाबी आंदोलन और समय समय पर ब्रिटिश फौज के भारतीय सिपाहियो में फूट पडने वाली बगावत इस बात का प्रतीक थीं कि इस देश ने अंग्रेजो को कभी मन से अपने मालिक के रूप मे स्वीकार नही किया था। फिर इसमें क्या ताज्जुब कि इन तमाम विद्रोहो का चरमोत्कर्ष एक महाविद्रोह के रूप में हुआ। सन् 1857 का महाविद्रोह एक ऐसी ही घटना थी जिसका स्वरूप अखिल भारतीय था और जिसमे अभी तक की सभी अंग्रेज विरोधी प्रवृत्तियां अपनी

मुगल शहशाह से व्यापार की आज्ञा मागते अग्रेज सौदागर

पूरी शिद्दत के साथ मौजूद थी और यह उस जमाने म हुआ था जब भारत म ब्रिटिश शासन अपने चरम-वैभव पर था। कुछ इतिहासकारो ने इसे केवल 'सिपाही गदर' कहकर इसका महत्त्व कम करने की कोशिश की है पर वास्तव म यह भारतीय आजादी का पहला स्वतत्रता सग्राम था, जिसम अमख्य भारतीयो ने अपनी कुर्बानी दी। यह पहली घटना थी जिसम भारतीयो के मानसो म विद्यमान एक प्रबल राजनैतिक राष्ट्रीयता एक दुर्दम्य धारा के रूप म बहती हुई दिखाइ दी।

सिधु नदी के पूर्व मे इरावती तक और उत्तर मे हिमालय से दक्षिण म हिद महासागर तक अपना साम्राज्य स्थापित करके अग्रेज काफी गलतफहमी का शिकार हो गये थे। उन्होने ज्यादातर लडाइया भारतीय सिपाहियो के दम पर ही जीती थी। राजस्व बढ़ाने के चक्कर म उन्होने मनमानी और छल-कपट से भारतीय रियासतो को हडपना शुरू किया। सन् 1856 म कपनी के तीन लाख सैनिको की फेहरिस्त म केवल 23 000 गोरे नामजद थे। भारतीय सिपाहियो पर खर्चा एक गोरे के मुकाबले केवल एक तिहाई बैठता था। इसलिए अग्रेज ज्यादा माल बचाने के चक्कर म भारतीयो को ही अपनी फौज म रखना पसद करते थे।

सन् 1857 के विद्रोह का राष्ट्रीय और जन-क्रातिमय स्वरूप उन पाच आरोपो से साफ हो जाता है, जो अतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर ने अग्रेजो पर लगाये थे। उन्होने कहा था कि ब्रिटिश सरकार ने जमींदारो पर बहुत मालगुजारी लादी बकाया के लिए उन्हे नीलाम तक पर चढ़ाया और अदालती फीस के जरिए उन्हे तबाह कर दिया।

टीपू सुल्तान के खजाजो का अग्रेजो को सन् 1792 मे आत्मसमर्पण

व्यापारियो म कपडा नील और जहाजी माल क व्यापार का अधिकार छीन लिया गया। उनके हाथ म जो व्यापार बचा भी उसक बदल म भी लागा स शुल्क स्टम्प फीस टैक्स, चगी आदि वसल किया गया। नाकरी करन वाल भारतीयो का ऊची मयादा और वतनमान म वचित करक यह अधिकार भी अग्रजा का द दिया गया। विलायत म बना माल भारतीय मडिया म चाककर स्थानीय जुलाहा धुनिया बढइया लोहारा और माचिया का भिखारी बना दिया। पडिता मौलवियो और दूसर पढ लिख लागा को सरआम अपमानित किया गया।

बहादुर शाह जफर क इन आरापा क परिप्रक्ष्य मे यह साफ हो जाता है कि 1857 के विद्राह की बागडोर भल ही राजा-नवाबा के हाथ म रही हो और उसकी मुख्य लडाकू शक्ति भल ही सिपाही रह हो पर उसक लिए भारतीय जनता क सभी तबको का गोलबद किया गया था। नाना साहब ने फ्रास क सम्राट नेपोलियन को पत्र लिखकर इन आरापा का समर्थन किया और कसम खाई, 'हम तब तक लडते रहेग जब तक हममे ताकत रहेगी और जब तक कि हममे से एक भी आदमी जीवित रहगा। ऐसी प्रचण्ड शपथ तब तक नही खाई जा सकती थी जब तक कि शपथ उठान वाली शक्तियो क पीछ किसी नैतिक आवेग का बल काम न कर रहा हो। कवल अपनी रियासत या अपन धम क सकीर्ण स्वार्थ तमाम भारतीयो को इस महासग्राम म नही धकेल सकत थ। इसके लिए जिस व्यापक आधार की जरूरत थी वह स्वय अग्रजा क दमनकारी और लुटेरे शासन न दे दिया था।

अग्रेज अपनी गलतफहमी म मान चुके थे कि उनकी शक्ति इतनी ठोस हो चुकी है कि उन्ह दिल्ली के बादशाह क नाम के सहार की जरूरत नही रह गयी है। व अपन नाम पर ही शासन चलान लायक हो गय हैं। पजाब, अवध नागपुर और सिध की रियासतो को हडपने के साथ-साथ सरकारी लगान वसूली म आम किसानो स मारपीट तक की जान लगी। और तो और भारतीय धर्मों का भी खुलआम अपमान किया जाने लगा।

सन् 1857 क विद्राह क बार म प्रचलित है कि कारतूसो मे गाय और सुअर की चर्बी होने और उन्हें चलाने स पहल दात से काटने की अनिवार्यता ने सिपाहियो का भडका

वारेन हेस्टिंग ने भारतीयो के प्रति थोडा उदारतावादी रवैय्या अपनाया परतु उसके बाद अग्रेजो का साम्राज्यवादी शिकजा उत्तरोत्तर कसता गया और सारा भारत दमन की चक्की मे पिसने लगा।

दिया। पर असल म यह वजह उन तमाम वजहो म से एक थी जिनका ऊपर वर्णन किया जा चुका है। बगावत की पहली चिगारी फूटन से पहल विद्राह की एक माटी याजना तैयार करने की कोशिश भी की गयी थी। राटी आर लाल कमल क फूला क जरिए बगावत का सदेश एक रजीमट से दसरे म ले जाया जाता था। नाना साहब के मुख्य सलाहकार अजीमुल्ला, अवध क मौलवी अहमदुल्ला शाह, मुगल-सम्राट बहादुर शाह जफर और दूसर राजे-नवाबा मे पत्र-व्यवहार और बैठका क जरिए 31 मई का दिन विद्रोह के लिए तय किया गया था। इन लागो ने मान लिया था कि व मुगल-सम्राट के झडे तले सगठित होगे और अग्रेजा को अपन मादर-वतन से मार भगायगे।

पर तय तारीख से पहले ही 29 मार्च, 1857 को कलकत्ता से 16 मील दूर बैरकपुर म सिपाही मगलपाडे न विद्रोह कर दिया। उसने अपन साथियो को ललकारा और अपने अग्रेज अफसर को ताबडतोड गाली से उडा दिया। अग्रेज डर के मारे काप गये। वीरभूमि, बसकडा, जसोर, कृष्णनगर मालदा, ढाका, फरीदपुर, बाकरगज, त्रिपुरा, सिलहट, चटगाव, खाती और जयतिया पहाडियो म विद्रोह के अखुए फूट पडे। मई के पहले हफ्ते मे मेरठ छावनी ने बगावत का झडा बुलद कर दिया। असम, उडीसा और छोटा नागपुर म बागिया ने अग्रेजा को नाको चने चबवा दिये। उत्तर भारत म अवध, रुहेलखण्ड इलाहाबाद, आगरा, मेरठ डिवीजन और पश्चिमी बिहार मे अधिकाश जनता ब्रिटिश शासन के खिलाफ उठ खडी हुई। दिल्ली मे विद्रोही सिपाहियो ने बहादुर शाह जफर को ताज पहनाया। दिल्ली के आसपास गुडगाव हिसार और रोहतक के आमो-खास ने भी

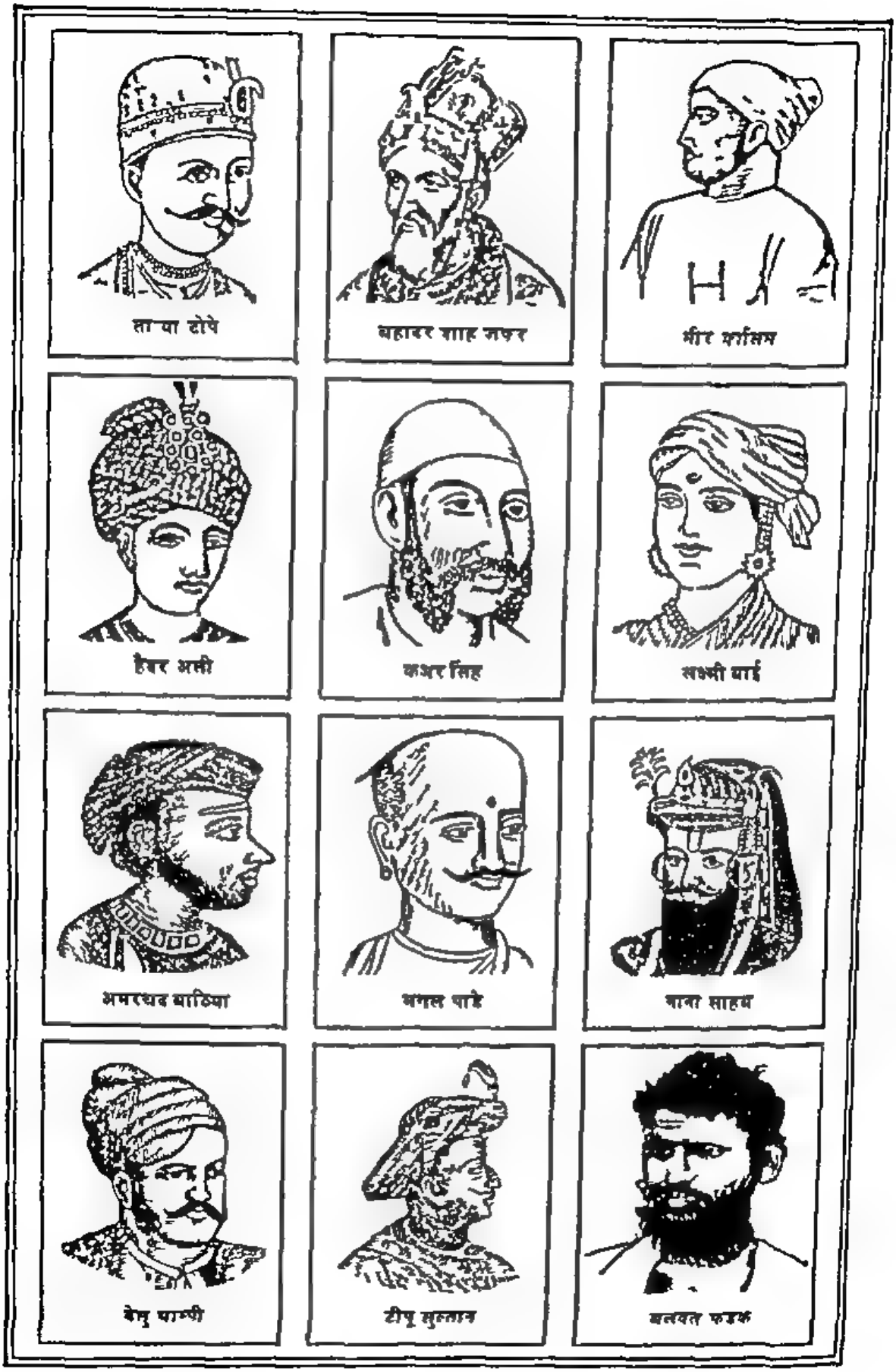

आजादी जिनके खून की हर बूंद में रची बसी थी।

सन् 1857 का सिपाही विद्रोह

बादशाह का साथ दिया। 11 और 12 मई को सरदाना और बागपत म बगावत हुई। 13 मई का रुडकी आजाद हा गया। 26 मई का बुलदशहर म एक मुगल सूबेदार ने प्रशासन सभाल लिया। 14 मई को मुजफ्फरनगर म 20 मई का अलीगढ़ म ओर 30 जून का सहारनपुर म विद्राह हुआ। बरली म विद्राह के बाद रामपुर मुरादाबाद, अमरोहा, बिजनार बदाय, शाहजहापुर, फर्रूखाबाद फतेहगढ़ सीतापुर इटावा, मैनपुरी, आगरा, मथुरा ओर इलाहाबाद म अग्रजा को ध्वस्त कर दिया गया। फतहपुर, हमीरपुर आर बादा भी विद्राह म शामिल हा गय।

4 जून का कानपुर म विद्राहिया न खजान पर कब्जा कर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। नाना साहब पेशवा घापित हुए। 4 जून का ही झामी की रानी लक्ष्मी बाई की सेना क सिपाहिया न अपन अफसरा पर हमला बालकर रानी क शासक हाने की घापणा कर दी। बनारस डिवीजन क चप्पे-चप्प स कपनी बहादुर क हाथ स सत्ता फिसलती चली गयी। जून क अत तक अवध प्रात का प्रत्यक जिला विद्राहिया की गिरफत म पहुच चुका था। सन् 1857 क सितवर तक आत-आत पूर दश का बगावत न अपन आगाश म ले लिया था।

इस विद्रोह क पीछ काम कर रही याजना का पता इस तथ्य स भी लगता है कि कानपुर की मुहिम म शहजादा फिराज की मना ग्वालियर की सना बाबू कुवर सिह की बिहारी सना आदि न नाना साहब की मदद की थी। बहादर शाह जफर न राजस्थान पजाब ओर उत्तर भारत क राजाआ ओर नवाबा का पत्र लिखकर अपन यड क तल जमा करन की काशिश की थी। राज-रजवाडा न सौ वष पुरान आपसी बगड खत्म कर दिये थ।

5 मार्च 1858 को लखनऊ मे जमकर खून की होली हुई।

दो साल तक यह तथाकथित गदर चलता रहा। नेतृत्व के अनुपम गुणो से युक्त दिल्ली के शहजादे फिरोज ने रुहेलखण्ड मे खान बहादुर खान ने अवध की बेगम हजरत महल ने बिहार केसरी कुअर सिंह ने महान सेनापति रामचद्र पाडरग उर्फ तात्या टोप ने बदेलखड मे झासी की रानी लक्ष्मी बाई ने दिल्ली की सेना के मुख्य सेनापति जनरल बख्त खा ने विद्रोही नेता महान शायर और मुगल वश के अतिम चिराग बहादुर शाह जफर ने और पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने विद्रोह मे शानदार भूमिकाए निभायी और बलिदान दिये। इन महान योद्धाओ का इस महाविद्रोह मे दिया गया अशदान कभी भुलाया नही जा सकता।

एकता के साथ साथ भयानक विश्वासघात की मिसाल भी सामने आयी। तात्या टोप विश्वासघात के कारण पकडे गये। रानी लक्ष्मी बाई ने अपना किला विश्वासघात के कारण खोया। बहादुर शाह जफर के कुछ चाटकारो ने उनके साथ धोखा किया। विद्रोहियो मे अनुशासन और सगठन की कमी रणनीति के लिहाज से अग्रजो की श्रेष्ठता, विद्रोह के कुछ नेताओ का ढुलमुलपन इस महाविद्रोह के पतन के कारण बने।

असफलता के बाद अग्रजो ने सपूर्ण प्रतिशोध क्षमता एव पाशविकता के साथ विद्रोहियो की नशस हत्याए की। उन्हे फासी पर चढ़ाया और जर्माने किये। पर यह तय हो चुका था कि भारतीय जनता हमेशा हमेशा के लिए उनकी गुलाम होकर नही रहेगी। सन् 1859 के गवर्नमेट ऑफ इडिया एक्ट के तहत ब्रिटिश राज को भारत का शासन इस्ट इडिया कपनी से ले लेना पडा। महाविद्रोह ने उन्हे बता दिया था कि अब वे पुराने ढग से शासन नही चला सकते। ठीक 90 साल बाद सन् 1947 मे भारतीय आजादी के सग्राम के दबाव और सारी दुनिया मे अपने साम्राज्य के पतन के कारण अग्रजो को भारत छोडना पडा। ■■

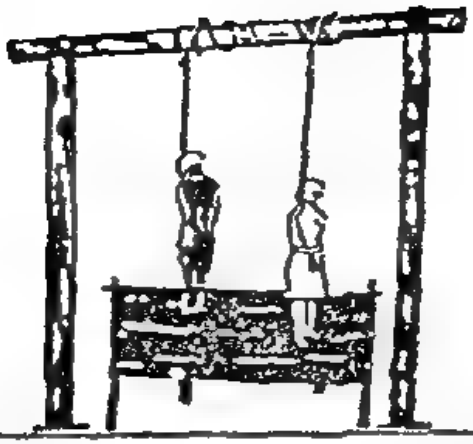

अमरीका की दूसरी क्रांति

(1860 1865)

अमरीकी गृह-युद्ध की बिसात पर भविष्य का औद्योगिक विश्व भी दाव पर लगा हुआ था। लिंकन ने शुरू में दासों से कपास की काश्त कराने वाले मालिकों की चुनौती को ठीक से नहीं समझा, पर जब उन्होंने एक बार दासों की मुक्ति का संकल्प लिया तो हर मोर्चे पर दक्षिण की सेनाओं की पराजय होने लगी। अमरीका की दूसरी क्रांति ने न केवल नीग्रो गुलामों को उनकी बुनियादी आजादी और नागरिक अधिकार दिलवाये अपितु पूरे देश को एक औद्योगिक महाशक्ति बनने की राह पर भी डाल दिया।

जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में संयुक्त राज्य अमरीका ने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के हाथों से आजादी तो हासिल कर ली थी लेकिन अभी वहां पूरे संसदीय लोकतंत्र की स्थापना होनी बाकी थी। टामस जेफरसन के लिखे हुए 'स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र' ने दुनिया के कई देशों पर असर डाला पर अमरीका के 'नीग्रो गुलाम अभी भी उस सौभाग्य और सर्वोच्च स्वतन्त्रता से वंचित थे जिसके सैद्धांतिक मूल्यों ने अमरीका को आजादी की राह का यात्री बनाया था।

उस समय अमरीकी समाज और राजनीति एक तरह से दो भागों में बंटी हुई थी। इनमें से एक धड़ा औद्योगिक क्रांति का समर्थक था। यह धड़ा यूरोप के इस विश्वास में भागीदार था कि दास-प्रथा संपूर्ण मानवता के माथे पर लगा बदनुमा कलंक है और इसे जैसे भी संभव हो मिटा दिया जाना चाहिए। दूसरी ओर अमरीका के परंपरागत दास मालिक और सामंत थे जिनका मुख्य धंधा खेती और खासतौर से कपास की खेती करना था। दास-प्रथा के विरोधियों का उत्तर के 23 राज्यों पर प्रभुत्व था और कपास के दास-मालिक उत्पादकों के पास दक्षिण के ग्यारह राज्य थे। वस्तुत: इस भौगोलिक विभाजन की पृष्ठभूमि को समझे बिना अमरीका की दूसरी क्रांति को पूरी तरह समझा भी नहीं जा सकता। यह केवल एक छुटभैये किस्म का गृह युद्ध नहीं था बल्कि इसमें विश्व की पूरी औद्योगिक सभ्यता का भविष्य भी दाव पर लगा हुआ था।

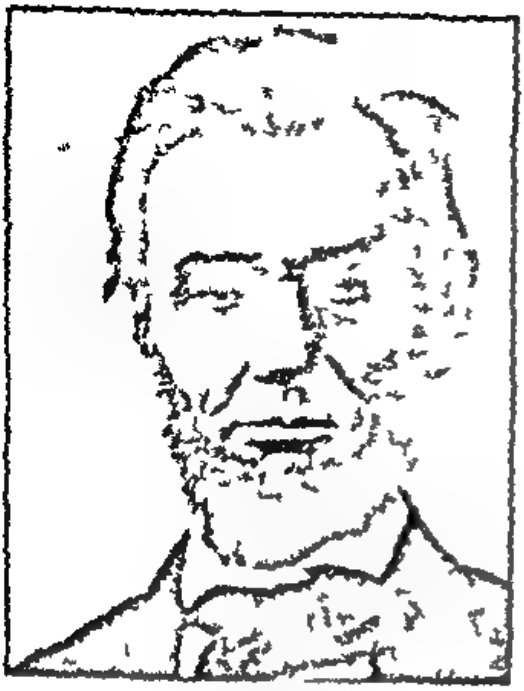

अब्राहम लिंकन

टामस जैफरसन

अमरीका के पास धन धान्य की कोइ कमी न थी। 19वी शताब्दी के मध्य मे वहा उद्योग धंधो का पूरी तेजी से विकास हआ था। इसी विकास से आकर्षित होकर अंग्रेज आईरिश और जर्मन आप्रवासी अपने स्वर्णिम भविष्य की खोज मे अमरीका आते जा रहे थे। उन्हे लगता था कि अमरीका के खेल मैदानो मे खुशहाली के खजाने छिपे हुए हैं। सन् 1850 से सन 1860 के बीच इस आवजन ने अमरीकी आबादी को दो करोड तीस लाख से तीन करोड बीस लाख कर दिया। उद्योगो के विकास के लिए श्रम शक्ति की जरूरत होती है। दुर्भाग्य से वह श्रम शक्ति उस समय दास प्रथा के दानवी बंधनो मे जकडी हुइ थी। दक्षिण के चार राज्यो मे चालीस लाख नीग्रो दास थे जो केवल कपास के बगीचो मे अपने मालिको की इच्छानुसार जिंदा कठपुतलियो की तरह काम करते थे। उन्हे जिंसो की तरह खरीदा-बेचा जाता था। बोली लगाकर सामान की तरह नीलाम पर चढाया जाता था। जबकि युरोप मे काफी पहले ही दास प्रथा खत्म करके कानून बन चूका था।

सन 1850 से ही दक्षिण के कपास-किसान जिनकी जीवन-शैली पुराने सामंतो जैसी थी अपने आपको एक अलग समुदाय के रूप मे देखने लगे थे। नीग्रो दास उनके लिए उत्पादन और एशो-आराम के बोलते औजार थे। उत्तर की औद्योगिक क्रांति उनकी प्रेम कहानी मे एक खलनायिका के समान थी जो उनके स्वर्ग को नष्ट कर डालना चाहती थी। दक्षिण वालो का एक गम और भी खाये जा रहा था--और वह गम था अमरीकी सीनेट मे उत्तर वालो का प्रतिनिधित्व लगातार बढ़ना। इसी साल दोनो पक्षो के बीच एक समझौते की कोशिश की गयी और दास प्रथा संगठित राज्यो मे खत्म कर दी गयी। पर दक्षिण से भाग कर आये दासो को वापस उनके गुलाम मालिको के पास भेज जाने का नियम भी बना दिया गया। इस परिस्थिति ने ऐसी कई दुखांत घटनाओ को जन्म दिया जिनके ऊपर हैरियट बीचर स्टो (Harriet Beecher Stowe) ने अपना अमर उपन्यास अंकल टाम्स केबिन लिखा। सन् 1852 मे प्रकाशित इस उपन्यास ने सारी दुनिया के सामने

राष्ट्रपति चुने जाने के बाद मदा फहराते सिक्न

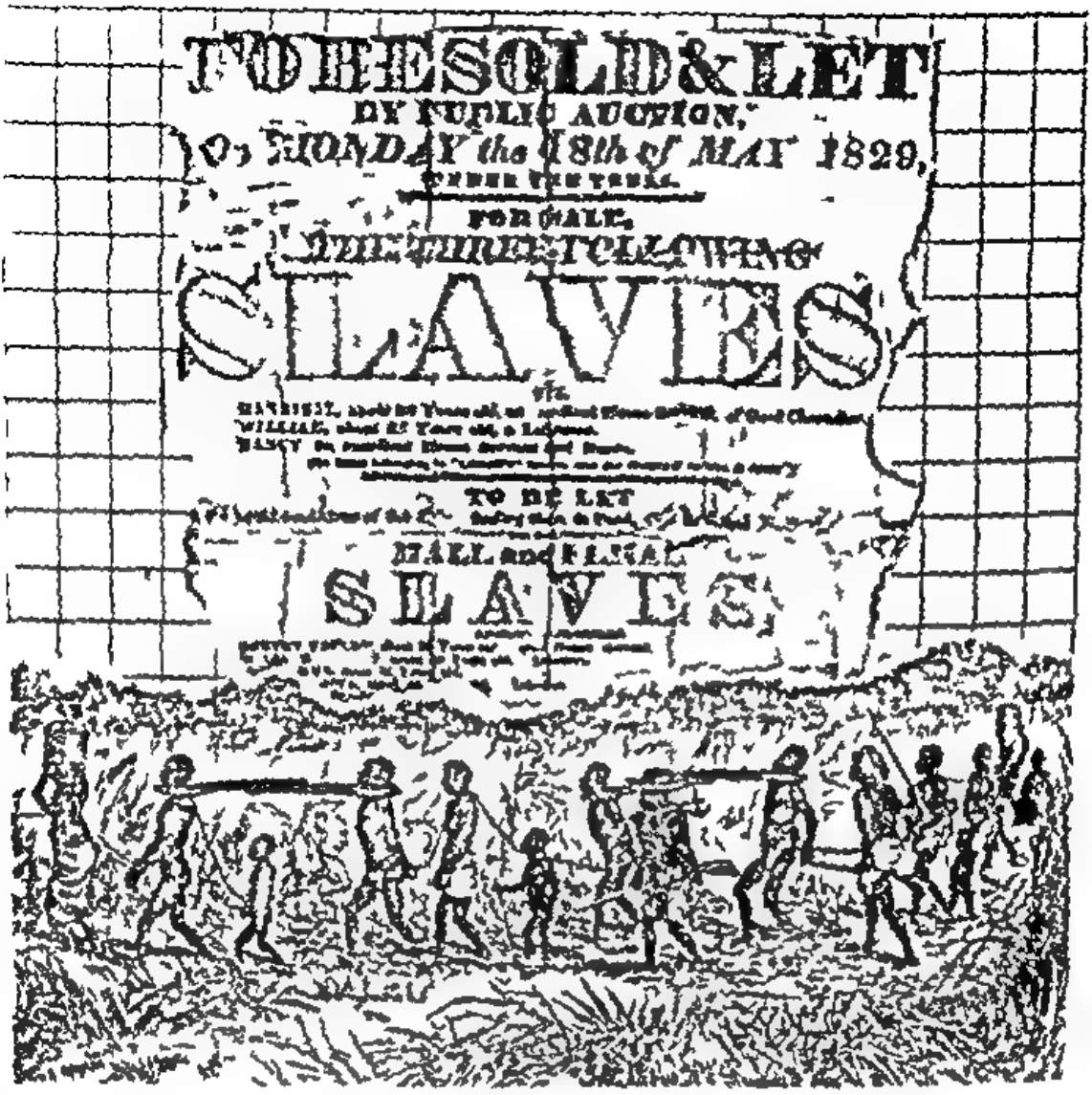

ऐसे शर्मनाक विज्ञापनो से होती थी गुलामो की बिक्री

दास-प्रथा के समर्थक दक्षिण अमरीकी राज्यो के चेहरो पर कालिख पोत दी।

धीरे-धीरे राष्ट्रपति चुनावो और नये बनने वाले राज्यो (कंसास नेब्रास्का उटाह और न्यू मैक्सिको) के कारण दास-प्रथा के सवाल पर एक भौगोलिक विभाजन सा होता चला गया। मानवीय मूल्यो के अतिरिक्त इसके पीछे बड़े प्रबल आर्थिक कारण भी थे। उत्तरी इलाके उद्योगो और लोकतंत्र के हामी थे और विदेश व्यापार पर तरह तरह के नियंत्रण लगाते थे। इसके विपरीत दक्षिण वाले मुक्त व्यापार चाहते थे ताकि उन्हे कपास निर्यात करके बदले मे विदेशी माल खरीदने की सुविधा मिलती रहे। कपास-उत्पादको को यह भी लगता था कि जिन युरोपीय देशो का माल वे खरीदते हैं वे अपने फायदे को मद्दे नजर रखते हुए उनकी मदद करेंगे। उत्तर के सामने यह समस्या खड़ी थी कि अगर विदेशी माल के आने पर प्रतिबंध नही लगे तो उसके कारखानो मे बनी चीजो का क्या होगा?

सन् 1860 मे राष्ट्रपति का चुनाव हुआ। चार उम्मीदवार लड़े पर जीते रिपब्लिकन

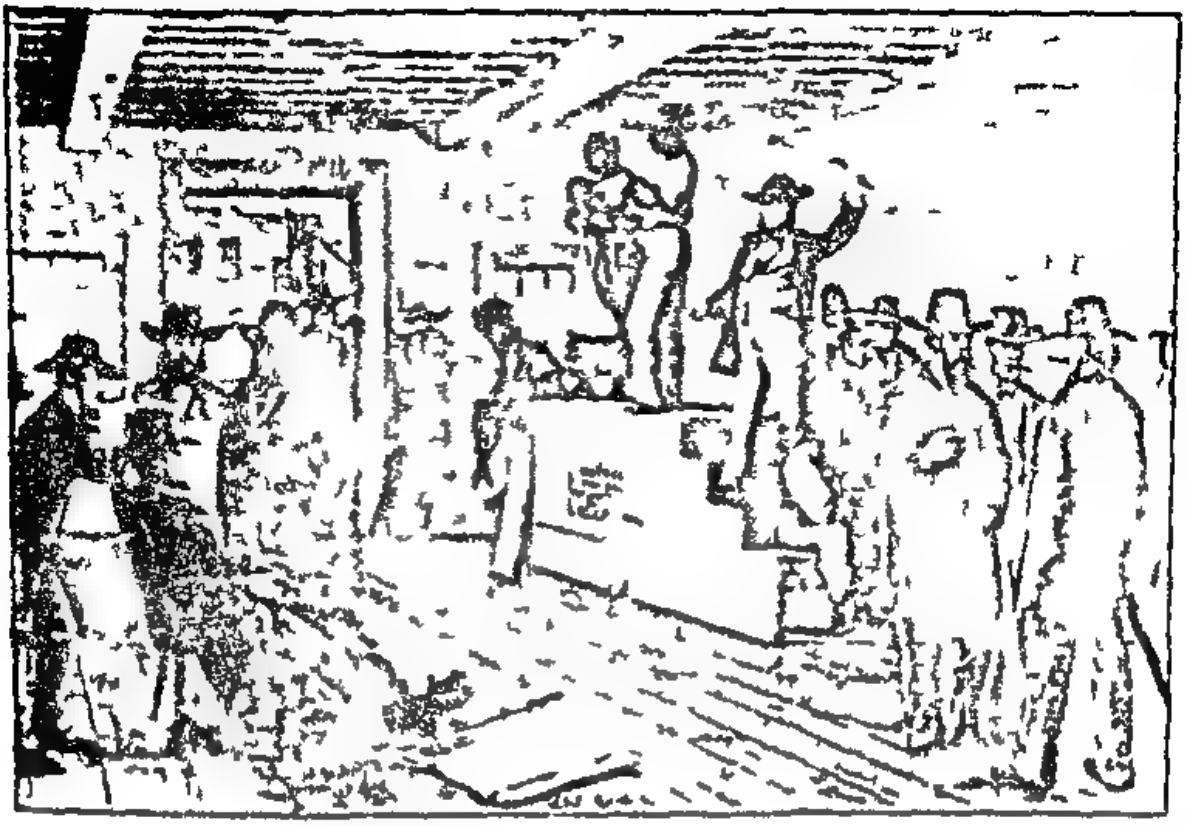

मंडी में गुलामों की बिक्री

उम्मीदवार अब्राहम लिंकन की हुई। लिंकन एक गरीब किसान परिवार के बेटे थे। उन्हें औपचारिक शिक्षा भी नाम-मात्र के लिए ही मिली थी पर उन्होंने खुद को एक लोकप्रिय नेता और अद्भुत वक्ता के रूप में विकसित कर लिया था। लंबे कद के लिंकन ने अपने जीवन में लकड़हारे का काम भी किया था। इसलिए उन्हें गरीबों और मध्यवर्ग का खासा समर्थन हासिल था। वे शुरू से ही दास प्रथा का खत्म करने के कट्टर हिमायती थे। कहा जा सकता है कि दास-प्रथा का सवाल उत्तर और दक्षिण के बीच एक विभाजक रेखा बन गया था। लिंकन के चुनाव जीतने का अर्थ ही दक्षिण के दास मालिकों का नाराज हो जाना था।

दिसंबर, 1860 में दक्षिण साउथ कैरोलिना ने खुद को संयुक्त राज्य अमरीका के यूनियन से अलग घोषित कर दिया। जनवरी आते-आते मिसीसिपी, अलबामा, फ्लोरिडा जोर्जिया और लुइसियाना ने भी यूनियन से अलग होकर अपनी आजादी घोषित कर दी। अगले महीने टेक्सास ने भी बगावत कर दी। 12 अप्रैल, 1861 को दक्षिण की सेनाओं ने फोर्ट सम्टर पर हमला कर दिया। यहीं से चार्लसटन के बंदरगाह को नियंत्रित किया जाता था। इस तरह अमरीकी गृह-युद्ध की शुरुआत हुई, जिसने अमरीका को दूसरी क्रांति के मार्ग पर प्रशस्त किया। देखते ही देखते वर्जीनिया, टेक्सास, नॉर्थ कैरोलिना और टेनेसी ने दक्षिण के महासंघ की सदस्यता स्वीकार कर ली। अब दो अमरीका बन चुके थे। एक यूनियन समर्थक कहलाता था और दूसरा कनफेडरेशन समर्थक। कनफेडरेशन ने रिचमण्ड को अपनी राजधानी बना लिया था। जेफरसन डेविस इस नये देश के राष्ट्रपति बन गये थे। यह अब्राहम लिंकन के सामने सीधी चुनौती थी।

जनरल ली का आत्मसमर्पण

लिंकन ने इस पहल हल्के और ढुलमुल ढंग से लिया। शुरू में उनका रवैया कुछ बागियों को मौका मिलान जैसा था। इसलिए उन्होंने युद्ध प्रयासों पर खास जोर नहीं दिया। संभवतः यह गलतफहमी दोनों पक्षों के शक्ति संतुलन के कारण पैदा हुई थी। यूनियन वाले राज्यों की जनसंख्या दो करोड़ दस लाख थी और कनफेडरेशन वालों की केवल एक करोड़ बीस लाख। उसमें भी 40 लाख तो दास ही थे। यूनियन के पास वित्तीय और नौसैनिक ताकत भी दक्षिण की तुलना में काफी बढ़ी चढ़ी थी। लिंकन ने दक्षिण के बागियों को परास्त करने के लिए 75 हजार स्वयं सेवक इकट्ठे किये। इनकी बागडोर भी कोई खास कुशल हाथों में नहीं दी गयी। उधर दक्षिण वाले तो करो या मरो की लड़ाई लड़ रहे थे। उनके पास रॉबर्ट ई ली जैसा जोरदार सेनापति था। एक बूढ़ा और चरित्रवान व्यक्ति के रूप में ली की प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर दक्षिण की फौजों ने इन 75 हजार स्वयं सेवकों का रौंद डाला। दो साल तक एक के बाद एक जीत हासिल करके दक्षिण की फौजों ने लिंकन की मीठी स्वप्न दर्शी आँखों को भड़भड़ाकर खोल दीं।

अब लिंकन ने गृह युद्ध को पूरी गंभीरता से लेना शुरू किया। मई 1863 में फौजी सेवा अनिवार्य कर दी गयी। अब समस्या यह थी कि यूनियन की फौजों की कमान किसके हाथ में दी जाय। लिंकन जनरल मैकलिलन, ग्रांट के हक में थे पर लोगों ने कहा कि जनरल ग्रांट पियक्कड़ है। आखिर लिंकन ने ग्रांट को ही सेनापति बनाया। नतीजा फौरन

लिंकन की फौजों के कमांडर जनरल यूलिसिस एस ग्राट

मिल। जनरल शरमन की मदद से जनरल ग्राट ने दक्षिण की फौजों को मात देनी शुरू कर दी। पहली शिकस्त न्यू आर्लिएंस की लड़ाई में दी गयी और 3 जुलाई 1863 को गेटिसबर्ग (Gettysberg) की निर्णायक लड़ाई में तो पलड़ा पूरी तरह लिंकन की तरफ झुक गया।

जनरल ग्राट ने जोरदार फौजी अभियान चलाकर अगले ही दिन विक्सबर्ग (Vicksberg) को जीत लिया और वर्जीनिया को पश्चिमी इलाके से काट दिया। सन् 1864 के आते-आते शेरमन और ग्राट की फौजों ने दक्षिण की फौजों को पूरी तरह से घेर लिया था। दक्षिण समुद्रतटीय अड्डों से रसद बंद हो गयी। अब थलीय सीमाओं पर भी कोई परिंदा पर नहीं मार सकता था। आखिर रिचमंड पर भी कब्जा हो गया। जनरल ली की फौज ने हथियार डाल दिये। 9 अप्रैल 1865 को फौजी संधि हुई और गृह-युद्ध खत्म हो गया।

सन् 1864 में अपने राष्ट्रपतित्व का दूसरा कार्यकाल गुजारते वक्त लिंकन तय कर चुके थे कि हार हुए दक्षिण के साथ नरमी का बर्ताव किया जायेगा। उन्होंने सन् 1863 में ही कानूनन दास-प्रथा खत्म कर दी थी। सन् 1865 में दास-प्रथा व्यावहारिक रूप से भी खत्म हो गयी लेकिन दक्षिणी राज्यों में कालों की आजादी सीमित किये जाने की कोशिशें होती रहीं। लिंकन की हत्या के बाद सन् 1866 में अमरीकी कांग्रेस ने एक नागरिक अधिकार कानून पारित किया जिससे कालों को वोट देने, जनसभा पर हस्ताक्षर करने मुकदमा चलाने और गवाही देने के अधिकार मिल गये।

तत्कालीन अमरीकी मानचित्र

युद्ध से दक्षिण बरबाद हो चुका था। इसी कारण काला को अपनी नयी आजादी का फौरी लाभ नहीं मिला। उन्हें तुरंत बराबरी का दर्जा भी नहीं मिल पाया। गोरों ने उन्हें हमेशा गंदे और गड़बड़ी करने वाले लोगों के रूप में देखा। लेकिन की कोशिशों से कालों को कानूनी आजादी तो मिल गयी थी पर अभी अपनी असली आजादी हासिल करने के लिए उन्हें न जाने कितनी कुर्बानियां देनी थीं।

यह जरूर है कि गृह-युद्ध के बाद शुरुआती परेशानियों के दिन बीत जाने के बाद अमरीका एक बार फिर खुशहाली की राह पर चल पड़ा। 20वीं शताब्दी में अमरीका को विश्व की महाशक्ति बनाने का काफी कुछ श्रेय इस गृह-युद्ध को ही दिया जाना चाहिए। अगर दास-प्रथा के समर्थक पराजित न होते तो वे उत्पादक शक्तियों को मुक्त न हो पाती, जो किसी भी राष्ट्र को औद्योगिक महाशक्ति बनाने के लिए जरूरी होती हैं। ■■

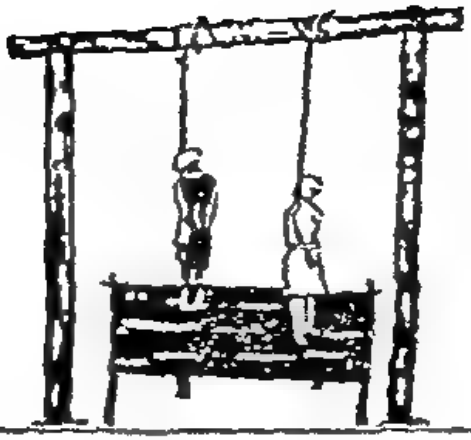

इतालवी क्रांति

(1860 1867)

इतालवी क्रांति को दुनिया इटली के एकीकरण आंदोलन के नाम से जानती है। यह एक तरह से त्रिकोणीय संघर्ष था। एक ओर आस्ट्रियाई और फ्रांसीसी फौजों की ताकत थी, दूसरी ओर राजा इमानुएल और प्रधानमंत्री काउण्ट कैवर की शकुनि बुद्धा चाले थीं और तीसरी ओर गैरीबाल्डी और मेजिनी जैसे समर्पित क्रांतिकारी थे। इटली की किसान जनता ने गैरीबाल्डी को अपना भरपूर प्यार दिया। जहा-जहा उनके लाल कुर्ती के सवार गये, उनका खुले दिल से स्वागत हुआ। गैरीबाल्डी की तलवार, मेजिनी के विचारों और जनता के समर्थन ने आखिरकार फ्रांसीसी और आस्ट्रियाई शिकंजे से इतालवी द्वीपसमूह को मुक्त कराकर एक एकीकृत एवं स्वतंत्र राष्ट्र बनाने में सफलता प्राप्त कर ही ली।

सन् 1815 में वियना की कांग्रेस में आस्ट्रिया ने इटली के छोटे राज्यों पर अपने प्रभुत्व का अधिकार हासिल कर लिया। इन राज्यों पर छोटे-छोटे राजवंशों का शासन था। स्वतंत्रता भाईचारे और समानता जैसे शब्दों का इन राजाओं के लिए कोई अर्थ नहीं था। हर तरह के क्रांतिकारी विचारों का क्रूरतापूर्वक दमन कर देना उनके खून में था। इसी दौरान इटली के विभिन्न द्वीपों को एक करके एकीकृत देश बनाने का सपना देखने वाले क्रांतिकारी इतालवियों का एक संगठन 'यंग इटली' सक्रिय हुआ। इस संगठन के नेता थे–गिसेपी मेजिनी (Giuseppe Mazzini) और इस संगठन में पहली बार गिसेपी गैरीबाल्डी (Giuseppe Garibaldi) ने भी आजाद और एकताबद्ध इटली के लक्ष्य के लिए खुद को समर्पित किया।

यंग इटली की क्रांति करने की महत्वाकांक्षी योजना बुरी तरह असफल हो गयी। यहां तक कि मेजिनी और गैरीबाल्डी को भागना पड़ा। पीडमाट (Piedmont) में गैरीबाल्डी को उनकी गैरहाजिरी में मौत की सजा दी गयी। गैरीबाल्डी ने अगले कई साल

मेजिनी

गैरीबाल्डी

दक्षिण अमरीका की क्रांतिकारी परिस्थितिया म अपन साथिया के साथ ब्राजील और उरुगुए की आजादी क लिए सघर्ष करते हुए गुजार। इसी बीच म इटली म पूरी तजी क साथ क्रांतिकारी परिस्थितिया तैयार हाती रही।

सन 1840 आते आत सभी महत्त्वपूण इतालवियो का यकीन हा चला था कि पीडमाट और उसक युवक राजा विक्टर इमानएल द्वितीय क तहत इटली का एकीकरण किया जा सकता है। इस राजा क पास एक बढ़िया फौज ब्रिटन की हमदर्दी और काउण्ट सेमिला कवर (Cavour) क रूप म एक चतर राजनयिक विद्यमान था। सन् 1852 म राजा न काउण्ट को प्रधानमत्री बनाया। काउण्ट यह ता चाहता था कि इटली एक हा पर वह इसका श्रय मजिनी और गरीबाल्डी जैसी रडीकल क्रांतिकारिया का नही लन दना चाहता था। काउण्ट न धरल मार्च पर उदार नीतिया अपनायी और विदश म राजा और पीडमाट का ज्यादा स ज्यादा महत्त्व दिलान की जी-ताड काशिश की। क्रीमिया क यद्ध म हइ पेरिस काग्रस म आस्ट्रिया की आपत्ति क बावजूद काउण्ट न अपनी कशलता स पीडमाट की भागीदारी सुनिश्चित कर दिखायी। फ्रास क सम्राट नपालियन तृतीय की कोशिशा और इच्छा क बावजूद भी इस काग्रस म इटली क सवाल पर गौर नही किया गया पर काउण्ट का इस मुद्दे पर एक रिपोर्ट तैयार करक प्रतिनिधिया म बाटन का मौका मिल गया।

सन् 1858 म काउण्ट न नपालियन क साथ एक सधि कर ली। सारत इस सधि म इन मुद्दा पर सहमति प्रकट की गयी थी। आस्ट्रिया द्वारा हमला होन की स्थिति म फ्रास और पीडमोट मिलकर लडग। जीत की हालत म पीडमाट क राजा का लाम्बार्डी (Lombardy) और वनेशिया (Venetia) का इलाका मिलगा। इसम पीडमाट की

काउण्ट केवर

विक्टर इमानुएल

हुकूमत का विस्तार एल्प्स (Alps) स एंडियाटिक (Adriatic) तक फैल जायगा। सवॉय (Savoy) आर नीस (Nice) फ्राम क अधिकार म हाग। इटली क शष बच इलाका म मध्य इटली की रियासत बना दी जायगी। राम आर नपल्स के साथ मिलकर य चारा इलाक महासघ बना लेग।

सन् 1859 की शुरूआत हात ही आस्टिया क साथ युद्ध शुरू हा गया। फ्रासीसी सना की मदद स पीडमोट न मिलान तक का रास्ता साफ कर लिया। नेपालियन न पाया कि मध्य इटली क कई राज्य पीडमाट म विलय हा जान क इच्छुक हैं। इस तरह इटली म स्वत स्फूत ढग स एकीकरण का आदालन शुरू हा गया।

उधर गेरीबाल्डी की छवि एक अत्यत लाकप्रिय गुरिल्ला सनापति क रूप म स्थापित हाती जा रही थी। व सन् 1848 म दक्षिण अमरीका स काफी ख्याति अजित करक लाट थ। आस्ट्रियाई फौजा क खिलाफ मुट्ठी भर सैनिका क दम पर गेरीबाल्डी न महान सफलताए प्राप्त की थी। इटली की जनता की निगाह म व मुक्तिदाता आर नायक थ। इसक विपरीत गेरीबाल्डी की प्रतिष्ठा आर लाकप्रियता स घबराकर राम म उन्ह कवल 500 सैनिका की कमान सौंपी गयी थी। गेरीबाल्डी न किसी तरह कोशिश करके अपने सैनिका की सख्या एक हजार की ओर उन्ह छापामार-युद्ध का प्रशिक्षण देना शुरू किया। इसी प्रशिक्षित सना क बलबूत पर गेरीबाल्डी न राम की हिफाजत म दा बार अपन स दस दस गुनी बडी सनाआ का पीठ दिखाकर भागन क लिए विवश कर दिया।

इटली क एकीकरण की माग से चौंककर नपोलियन ने आस्ट्रिया क साथ सधि कर ली। इससे इटली क राष्ट्रवादिया को गहरा धक्का लगा। प्रधानमत्री काउण्ट कैवर न ता विराध म अपना इस्तीफा तक द दिया। काउण्ट न खफिया तौर पर गैरीबाल्डी का बुलाया और उन्ह अपन साथ मिल जान की दावत दी। गैरीबाल्डी को लगने लगा कि इटली क एकीकरण का वक्त आ गया है। उन्होंने एक बार फिर अपने मशहूर लाल कुर्ती के सवारा

एकीकृत इटली का मानचित्र

को भर्ती करना शुरू किया। गैरीबाल्डी की राजा विक्टर इमानुएल से भी भट हुई। फ्रांस और आस्ट्रिया की संधि से इमानुएल भी कतई खुश नहीं थे।

असलियत यह थी कि काउण्ट और राजा दोना गैरीबाल्डी का जनता का समर्थन हासिल करन के लिए एक मोहरे की तरह इस्तेमाल करना चाहत थे। व नही चाहते थ कि किसी भी जीत का श्रय इतालवी किसानो क इस बहादुर मसीहा को मिले। दूरदर्शी गैरीबाल्डी न इसे तुरत भाप लिया और इतनी तजी स फौजी कार्रवाई शुरू की कि काउण्ट की सारी याजना धरी का धरी रह गयी। मई 1860 म गैरीबाल्डी क लाल कुर्ती के हजार सवारा न सिसली (Sicily) पर हमला किया और स्थानीय विद्रोहिया की मदद स फतह हासिल कर ली। गैरीबाल्डी ने आस्ट्रियाई फौजा को एक क बाद एक जोरदार शिकस्त

11 मई, 1860 को गैरीबाल्डी का आगमन

देना जारी रखा। जहा-जहा स उनक फौजी निकलते, जनता उनका खुल दिल म स्वागत करती। गैरीबाल्डी का सदेश हाता, आआ दास्ता मैं तुम्ह तकलीफ कठिनाई और थकान दूगा। हम जीतगे या मर जायग। 'गेरीबाल्डी म डरकर आस्ट्रियाई सैनिक अपनी चौकिया छाडकर भाग जात। इस अद्‌भुत क्रातिकारी पराक्रम क लिए गैरीबाल्डी को राजा न स्वर्ण-पदक प्रदान किया।

सिसली पर कब्जा करने क बाद गैरीबाल्डी की फौज न नपल्स की आर रुख किया। नपालियन ने ब्रिटन म आग्रह किया कि वह गैरीबाल्डी का राकन क लिए फ्रासीसी सना की मदद करे पर ब्रिटन न एसा करने स इकार कर दिया। गैरीबाल्डी न सितबर म नपल्स का दरवाजा भी पार कर लिया। उनका अगला निशाना रोम था। गैरीबाल्डी का ख्याल था कि राम को फतह कर लन के बाद इटली के एकीकरण का महान लक्ष्य पूरा हा जायगा, पर राजा इमानुएल और काउण्ट न गैरीबाल्डी को एसा करन स राका। गैरीबाल्डी न देशभक्ति के महान लक्ष्यो स प्रेरित हाकर राजनीति छाड दी और सती करन चल गये। इसके बाद राजा न उन्ह काफी प्रलोभन दिय पर उन्हान अपना निर्णय नही बदला।

गैरीबाल्डी की शानदार जीता म राम और वनिस का छाडकर बाकी सभी राज्य पीडमोंट मे विलीन हा गय थ। इटली के एकीकरण मे भी थाडी ही कमी बाकी थी। फरवरी 1861 मे टयूरिन म पहली राष्ट्रीय ससद बैठी। 14 मार्च का इस ससद न राम का इटली की राजधानी घोषित किया। चूंकि राम वास्तविकता में नयी सरकार क पास नही था, इसलिए प्रतीकात्मक रूप म राम की दिशा में फ्लोरस का राजधानी बना लिया गया।

नेपोलियन बोनापार्ट

अब इटली के एकीकरण में मात्र रोम ही बाधक था इसलिए सारी दुनिया के कैथोलिकों का इस मसले में दिलचस्पी हो गयी। सन् 1862 में गरीबाल्डी ने रोम पर हमला करके उसे जीतना चाहा पर इस बार उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा।

सन् 1866 तक आते-आते इटली ने प्रशा से संधि कर ली। प्रशा ने आस्ट्रिया को युद्ध में हराकर इटली को मजबूत किया। नवंबर 1867 में गैरीबाल्डी ने एक बार फिर रोम पर हमला बोला। पर इस बार उन्हें ब्रीच-लोडिंग चेसपाट (Breech loading Chesspot) राइफलों से लैस फ्रांसीसी सैनिकों का सामना करना पड़ा। गैरीबाल्डी के फौजी एक बार फिर अपने चेहरों पर हार लिए लौट आए। इस पराजय के बावजूद इटली के एकीकरण को ज्यादा समय तक रोके नहीं जा सकता था। दरअसल उस समय अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां बड़ी तेजी से बदल रही थीं।

फ्रांस और जर्मनी के युद्ध में फ्रांस का पलड़ा हलका पड़ रहा था। इसलिए फ्रांस को रोम से अपनी वह गैरीसन बुलानी पड़ी जिसने गैरीबाल्डी को आगे नहीं बढ़ने दिया था। नवंबर 1867 में इस गैरीसन की अनुपस्थिति में इतालवी सैनिकों ने रोम में कदम रखे और इटली के एकीकरण का महान लक्ष्य पूरा हो गया।

इतालवी क्रांति ने दुनिया को दो नायाब हीरे दिए—मेजिनी और गैरीबाल्डी। मेजिनी जिसने इटली के एकीकरण और आजादी का स्वप्न देखा और गैरीबाल्डी जिसने किसान जनता की मदद और हमदर्दी से इस सपने को धरती पर उतारा। ■■

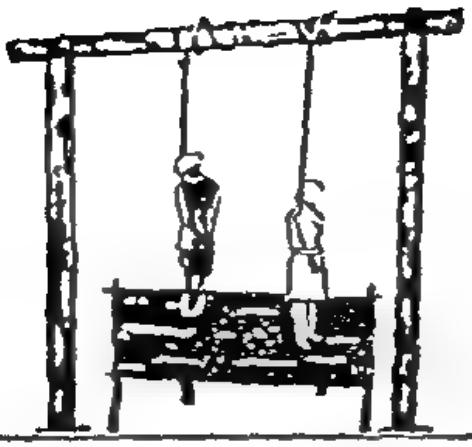

पेरिस कम्यून

(1871)

राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा और शोषण से मुक्ति के लिए सन् 1871 मे पेरिसवासियो ने 'दुनिया के पहले सर्वहारा राज्य' की स्थापना की। 'पेरिस कम्यून' के नाम से दुनिया भर मे मशहूर इस क्राति की मात्र 72 दिन की अल्पायु मे ही मत्यु हो गयी। पूजीपतियो की नरभक्षी फौज ने इसे पनपने से पहले ही कुचल दिया। 26 हजार पेरिसवासियो ने क्राति के इस महायज्ञ म अपने प्राण होम कर दिये। असफलता के बावजूद भी पेरिस कम्यून ने मजदूरो को सिखाया कि व्यावहारिक रूप से क्राति कैसे की जाती है। कम्यून की असफलता के सागर का मथन करके ही विश्व कम्युनिज्म के सस्थापक कार्ल मार्क्स ने 'सर्वहारा की तानाशाही' का स्वर्णिम सिद्धात निकाला, जिस पर चलकर भविष्य की अनेक क्रातियो को नाकामी के अधे कुए मे फिसलने से बचाया जा सका।

सन् 1850 के बाद सारे यूराप म औद्यागिक क्राति अपने लब-लब डग भरती हुई द्रुतगति स आगे बढ़ रही थी। इसी के साथ-साथ कारखाना म काम करने वाले असख्य मजदूर स्पष्टत एक अदम्य शक्ति के रूप मे उभरते हुए दृष्टिगोचर होने लगे थे। दार्शनिक और सिद्धातवेत्ता इसी सवहारा वर्ग को समाज की धुरी म स्थित परिवतनकारी शक्ति मानकर अध्ययन मनन म लगे हुए थे। पूजीवादी शोषण के खिलाफ ब्रिटेन, फ्रास और जर्मनी मे मजदूरो के आदोलन पूरे उफान पर थे। कार्ल मार्क्स और फ्रेड्रिक्स एगल्स ने 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' की रचना करके लदन म सन् 1864 म पहला अतराष्ट्रीय मजदूर सघ गठित कर लिया था। इस इटरनेशनल की पहली काग्रेस सन् 1866 म जिनेवा म हुई। इस सब के बावजूद मैद्धातिक रूप मे पुष्ट कम्युनिस्ट विचारो और लक्ष्यो को अभी व्यावहारिक कसौटी पर कसा जाना बाकी था। सन् 1871 म पेरिस म स्थापित हुए पहले समाजवादी राज्य ने मार्क्स तथा एगल्स को अपने सिद्धातो की सफलता-असफलता का विश्लेषण करने के लिए समुचित निकष प्रदान किये। मार्क्स ने पेरिस कम्यून की

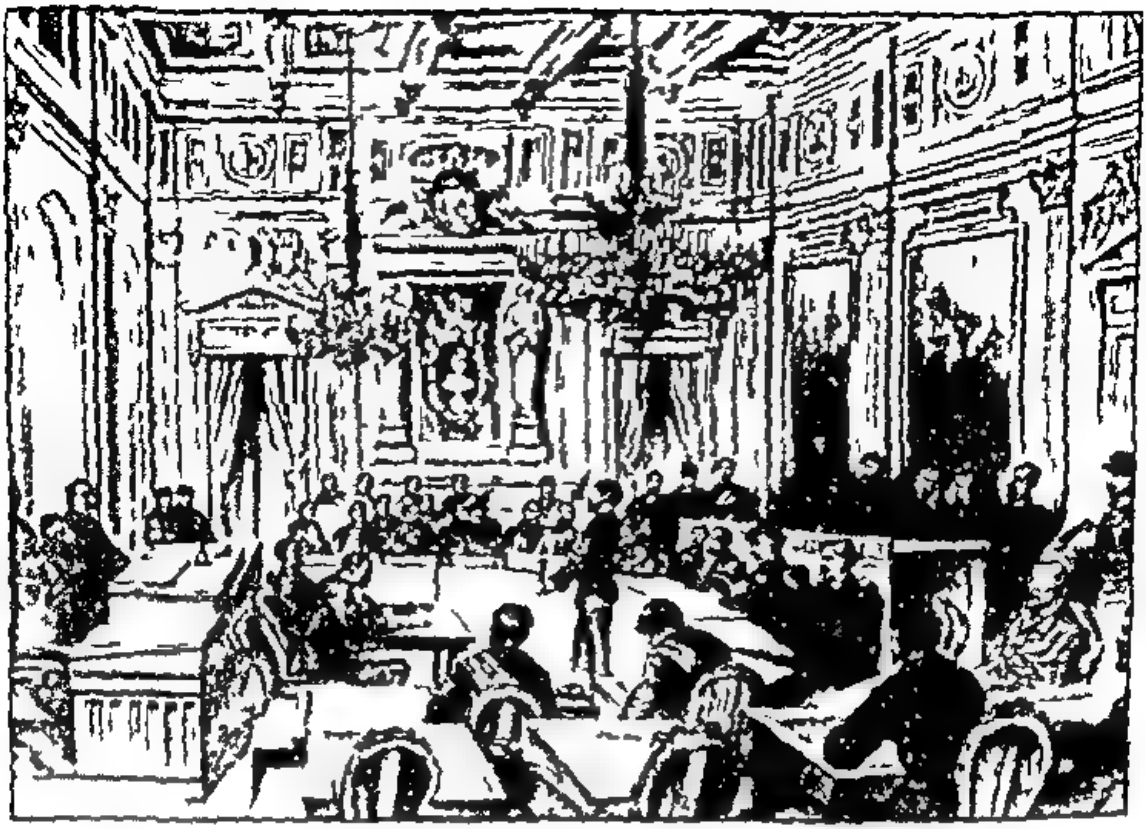

टाउन हॉल मे पेरिस कम्यून की बैठक

नाकामयाबी स सर्वहारा का अधिनायकत्व जैसे सिद्धात को खोज निकाला। दरअसल, 'पेरिस कम्यून के नाम स मशहूर मन् 1871 की जनक्रांति ने युरोपीय मजदूर वर्ग का न केवल क्रांति करना सिखाया बल्कि क्रांति की रक्षा करने की दिशा मे भी निर्णायक माग दर्शन प्रदान किया।

फ्रास और प्रशा क बीच चल रह युद्ध के अत न पूर फ्रास के दशभक्तो की आत्माआ पर बरी तरह चोट की थी। यह लडाई प्रशा के शासक बिस्मार्क की जर्मनी का एकीकरण करने की महत्त्वाकाक्षा की देन थी। फ्रास की पराजय के बाद हुई सधि के कारण जर्मन फौजा का परिस मे हाकर विजय मार्च करना था। परिस की जनता भला इसे कैसे बर्दाश्त करती? सन् 1789 मे जिन परिसवासिया न लगातार कई क्रातिया मे भाग लेकर खुद का युराप भर क क्रातिकारिया का अगुआ बना लिया था, उनके सामन अब राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा करन की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी आ गयी थी।

युद्ध की पूरी अवधि के दौरान फ्रासीसी हमशा दो भागो म बटे रह। एक हिस्सा प्रशा के साथ शाति चाहता था भले ही वह कैसी भी अपमानजनक शर्तों पर क्यो न हो। दूसरा हिस्सा युद्ध चाहता था और गणराज्य की स्थापना की माग करता था। फरवरी 1871 म युद्ध खत्म होने के बाद हुए पहल चुनाव मे 600 प्रतिनिधि चुने गये। इनम 400 एसे थे, जा शाति चाहत थे और 200 ऐसे जो गणराज्य के समर्थक थे और 'मरते दम तक लडना' चाहत थ। इन प्रतिनिधियों की राष्ट्रीय असेंबली न अपनी पहली बैठक म एडाल्फ थिएर (Adolf Thiers) का सरकार का अध्यक्ष चुना।

बौने कद का थिएर गिरगिट की तरह रग बदलने मे माहिर, अत्यत वाक्पटु और फ्रास के पूजीपति वर्ग का पक्का प्रतिनिधि था। 26 फरवरी को असैंबली ने प्रशा क साथ शांति-सधि कर ली, जिसकी शर्तें काफी कडी और सीधे-सीधे राष्ट्रीय सम्मान को आहत करने वाली थी। प्रशा के सामने हथियार डालने के बावजूद पेरिस के नेशनल गार्डो न अपनी तोप अपने पास ही रखी थी। जर्मन सैनिको की हिम्मत नही हुई कि वे पेरिस मे घुस सके। उन्होने पेरिस क एक छोटे से कोने मे अपन कदम जमाये। खास बात यह थी कि जिस फौज नें फ्रासीसी साम्राज्य को डरा दिया था वह पेरिस के मजदूरो से बने नेशनल गार्डो से उलझने की हिम्मत नही दिखा पा रही थी।

मजदूरा की यह ताकत और धाक देखकर सरकार क अध्यक्ष थिएर को लगा कि उन्हे जैस भी हो निहत्था कर दना चाहिए वरना वे कभी भी मौका लगन पर पूजीपति वर्ग पर भी हमला बाल सकत हैं। 18 माच को थिएर न राष्टीय गार्डा से उसका तापखाना छीनने क लिए नियमित सना की दा टुकडिया भजी। इस पर परिस न प्रतिराध किया। थिएर क दा जनरल मार गय। वह अपनी सरकार के साथ वर्साई (Versailles) भाग गया और उसन वही राष्ट्रीय असेंबली की बैठक बुलायी। 18 मार्च को हुई इस कार्रवाई के वक्त थिएर का अदाज यह था कि प्रशा की फौज उसका साथ दगी पर बिस्मार्क के इशारे पर

28 मार्च, 1871 मे कम्यून की घोषणा

एसा नही हुआ। वसाई आकर थिएर न परिस क साथ सधि का बहाना किया और हमला करन क लिए अपनी सना जमा करनी शुरू कर दी।

26 मार्च का पेरिस म मजदूरा का कम्यून यानी उनकी सरकार निर्वाचित हुइ और 28 मार्च को नगर के टाउन हॉल म उसकी विधिवत घोषणा हुइ। अभी तक सरकार चलान वाली राष्ट्रीय गार्ड की केन्द्रीय समिति न परिस की बदनाम पुलिस को भग कर दिया और कम्यून को इस्तीफा सौंप दिया। कम्यून ने राष्ट्रीय गाड को एकमात्र सशस्त्र सना घोषित किया। 30 मार्च का कम्यून न अनिवाय भर्ती' जैस अलोकप्रिय कानूना का उन्मूलन कर दिया।

कार्ल मार्क्स न परिस कम्यून की स्थापना क बाद उठाय गये कदमा का वणन इस प्रकार किया है कम्यून न अक्तूबर 1870 स अप्रेल, 187। तक का सभी मकाना का किराया माफ कर दिया। इस अवधि का जा किराया दिया जा चुका था उसे आग के लिए पेशगी मान लिया गया तथा नगर पालिका ऋण-कार्यालय म गिरवी रखी वस्तुआ की बिक्री बद कर दी गयी। उसी दिन कम्यून म निर्वाचित विदशिया क पदा की पूर्ति की गयी क्याक कम्यून का परचम विश्व-जनतत्र का परचम ह।' एक अप्रल का तय किया गया कि कम्यून क किसी भी कर्मचारी का ओर इसलिए कम्यून क सस्था का भी वतन 6 000 फ्रैंक स अधिक नही हागा। अगल दिन कम्यून न चर्च का राज्य स पथक करन की आज्ञाप्ति जारी की धार्मिक कार्यों क लिए सभी राजकीय अुगतान बद कर दिये गय। चर्च की सारी सपत्ति राष्ट्रीय सपत्ति घोषित कर दी गयी। परिणामस्वरूप 8 अप्रल को विद्यालया स सभी प्रकार क धार्मिक प्रतीका चिना और उपदशा तथा प्रार्थनाआ सक्षप म, उन सभी चीजा का हटा दन का आदश जारी किया गया और क्रमश उस पर अमल किया गया जा व्यक्ति क अत करण का क्षत्र ह । 6 तारीख को राष्ट्रीय गाड की 137वी बटालियन न मृत्यु दड म प्रयाग आन वाल यत्र गिलोटिन का बाहर निकालकर उसे सावजनिक

पेपर लाचेज कब्रिस्तान में कम्यूनार्डों की बेसाद यादों से अंतिम भिड़त

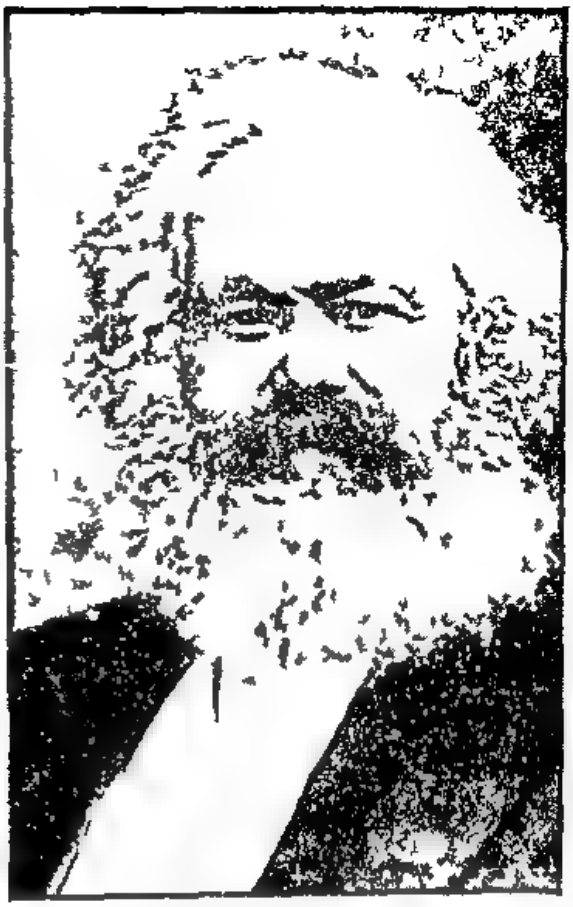

कम्यून की असफलता के विश्लेषण से ही कार्ल मार्क्स (दाय) और एंगेल्स (बाय) ने सर्वहारा-सिद्धांतों की रचना की।

हर्पोल्लास के साथ बड़ी धूमधाम से जला दिया। 12 तारीख को कम्यून ने निर्णय किया कि प्लास वादोम के विजय-स्तंभ को जो 1809 के युद्ध के बाद नपोलियन द्वारा लड़ाई में जीती गयी तोपों को गलाकर बनाया गया था, गिरा दिया जाये क्योंकि वह अंधराष्ट्रीयता और दूसरे देशों के प्रति वैर तथा द्वेष-भावनाओं को भड़काने का प्रतीक था। 16 मई को यह कार्य संपन्न किया गया। 16 अप्रैल को ही कम्यून ने कारखानों के मालिकों द्वारा बंद किये गये कारखानों के सांध्यकीय कारीगरों के लिए और उन्हीं मजदूरों द्वारा, जो पहले उनमें काम करते थे उन्हें फिर से चालू करने की योजना बनाने के लिए, उन्हें सहकारी-संघों में संगठित करने और इन सहकारी-संघों को एक बहुत बड़ी यूनियन में संयुक्त करने की योजना बनाने के लिए हुक्म जारी किये। 20 अप्रैल को उसने नानबाइयों के लिए रात के काम की मनाही कर दी। रोजगार कार्यालयों को भी बंद कर दिया गया। ये कार्यालय द्वितीय साम्राज्य के समय में पुलिस द्वारा नियुक्त श्रम के प्रथम कोटि के शोषक दलालों की इजारेदारी के रूप में चलाये जा रहे थे। इन्हें अब पेरिस के 20 जिलों की नगरपालिका-व्यवस्था में सम्मिलित कर दिया गया। 30 अप्रैल को कम्यून ने गिरवी-गोठों की दुकानों को इस कारण बंद करने के आदेश दिये क्योंकि वे निजी लाभ के लिए मजदूरों का शोषण करती थीं और श्रमिकों के ऋण प्राप्त करने के अधिकार के प्रतिकूल थीं। 5 मई को कम्यून ने प्रायश्चित-गिरजे को गिरा देने का आदेश दिया, जो लूई 16वें का सिर काटने के लिए प्रायश्चित करने के स्मारक के रूप में बनवाया गया था।

इस तरह 18 मार्च के बाद पेरिस आदालन का वर्ग-स्वरूप, जो पहल विदशी हमलावरा के खिलाफ युद्ध की वजह स पृष्ठभूमि म दबा हुआ था, खुलकर और उग्र रूप म प्रकट हो गया। चूंकि कम्यून म लगभग केवल मजदूर अथवा मजदूरा के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि बैठते थे इसलिए उनक फैसला का स्वरूप निश्चत रूप स सवहारा हिता के अनुकूल था। इन फैसला ने या तो एसे सुधारा की घापणा की जिन्ह जनतत्रवादी पूजीपतियो न मात्र कायरता की वजह से पास नही किया था। दरअसल य सुधार मजदूर वर्ग के स्वतत्र क्रिया-कलापा के लिए आवश्यक सुधार प्रस्तुत करत थ। उदाहरणार्थ इस सिद्धात का अमल कि जहा तक राज्य का सबध है, धर्म पूणत एक व्यक्तिगत प्रश्न है। इसके अतिरिक्त कम्यून ने ऐसी आज्ञाप्तिया जारी की जो सीधे मजदूर वर्ग के हित म थी और जो कुछ सीमा तक पुरानी सामाजिक व्यवस्था की जडा पर गहरी चाट पहुचाती थी। उस समय पूरा नगर शत्रु स घिरा हुआ था एस समय म अधिक स अधिक इन चीजा का अमल म लान की शरआत ही की जा सकी। मई क प्रारभ स ही कम्यून की सारी शक्ति वर्साई सरकार की सना स जिसकी सख्या नित्य बढती जा रही थी युद्ध करने म लग गयी।

अब कम्यनार्डो क सामन दुनिया क पहल क्रातिकारी राज्य की रक्षा की चनोती थी। थिएर की सेना ने पेरिस पर आक्रमण कर दिया था। कम्यूनार्डा न भाड क सनिका और तरह तरह क प्रतिक्रियावादी तत्त्वा द्वारा बनायी गयी वर्साई की इस सना क साथ अत्यत वीरतापूर्वक युद्ध किया। 7 अप्रैल को सनाआ न पेरिस क पश्चिमी मार्चे पर "यइ क पास सन नदी के दोनो तरफ वाले रास्तो पर कब्जा कर लिया। लेकिन कम्यूनार्डा न उस पीछ धकेल दिया। फिर पेरिस पर वर्साई की तोप गाल बरसान लगी। प्रशा न कुछ युद्ध बदी रिहा कर दिय ताकि व थिएर की फाजो की ताकत द सक। 1 मई का दक्षिणी मार्चे पर मूल-साके के दुर्ग पर थिएर का कब्जा हो गया। 9 मई का फार्ट इस्सी उसक हाथ आ गया। अब थिएर की फौजा की पदचाप पेरिस की सफीला तक सुनायी देन लगी। 21 मई को सैनिका न पेरिस म प्रवश किया। प्रशा की फौजा न जा नगर के एक हिस्से पर काबिज थी वर्साई की फोजा का अपन बीच म से चुपचाप मार्च कर जाने दिया। यह सहयाग उस मौन सहमति का प्रतीक था जा युराप के पूजीपति और सामत वग क बीच विश्व क पहल मजदूर राज्य का कुचलन क लिए हो गयी थी।

पर जेस-जैस फौज पेरिस क मजदूरा वाने इलाक म पहची उनका प्रतिराध और कडा होता गया। एक एक इच आग बढ़न के लिए फौजा को मजदूरा की चट्टानी दीवारा स जूझना पडा। कम्यूनार्ड पूरे आठ दिन तक बेमिसाल बहादुरी क साथ लड। खूनी हफ्ते क नाम स मशहूर यह अवधि जब खत्म हुई तो 26 हजार पेरिसवासी 'मजदूरा क प्रथम गणराज्य' की बलिवदी पर अपनी बलि चढा चुक थे। वर्साई की फौजा न प्रतिराध टूटन क बाद मजदूरा पर अत्याचार किये। सारी दुनिया क पूजीपतिया ने खुशी क दीपक जलाय। आखिर क्यो न जलात? उन्होन क्राति की पहली कोशिश को कुचल जो दिया था। पर उनकी यह प्रसन्नता ज्यादा दिना तक टिकन वाली नही थी क्योकि सन् 1871 म पेरिस कम्यून मे सुलगी चिगारी सन् 1917 म एक दावानल म बदल जान वाली थी और आग की लपटो से सोवियत अक्तूबर-क्राति का जन्म होन वाला था। ■■

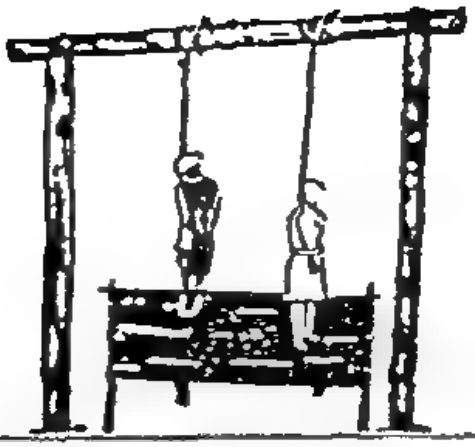

सोवियत अक्तूबर क्रांति
(1917)

प्रथम विश्व-युद्ध का जन्म ब्रिटिश और जर्मन पूंजी के बीच के अंतर्विरोध के गर्भ से हुआ था। रूस मित्र राष्ट्रों के साथ था पर उसे युद्ध से कोई लाभ नहीं हुआ। पूरे रूस में मजदूरों के आंदोलन जोर पकड़ते जा रहे थे। जार निकोलस-द्वितीय की दूमा (संसद) जनता की समस्याएं हल करने में असफल सिद्ध हो चुकी थी। देश की दुर्दशापूर्ण स्थिति को सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी के बोल्शेविकों ने जन-आंदोलनों का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया। इन बोल्शेविकों के नेता थे—लेनिन। फरवरी-क्रांति ने जार को गद्दी छोड़ने पर मजबूर कर दिया पर सत्ता में अस्थायी सरकार के रूप में केरेन्स्की जैसे पूंजीपतियों के प्रतिनिधि आ गये। बोल्शेविकों ने अक्तूबर में अस्थायी सरकार के खिलाफ बगावत करके सत्ता अपने हाथ में ली और जर्मनी व मित्र राष्ट्रों के हस्तक्षेप के बावजूद नयी क्रांति की दृढ़तापूर्वक रक्षा की।

20वीं शताब्दी की शुरुआत में पूंजीवाद दुनिया के सामने दो रूपों में पेश हुआ। एक ओर पूंजीवाद व्यक्तिगत आजादी की वकालत करता था और सामंतवाद के मुकाबले काफी प्रगतिशील बातों के साथ सामने आता था। दूसरी ओर उसकी 'व्यक्तिगत आजादी' मजदूरों की आर्थिक आजादी की मांग के साथ अपना तालमेल नहीं बैठा पाती थी। मजदूर अपना श्रम बेचने के लिए स्वतंत्र थे और पूंजीवाद उस श्रम के अपने मुनाफे के हक में मनमाने दाम लगाने के लिए स्वतंत्र था। इस वर्गीय अंतर्विरोध ने सारी दुनिया में समाजवादी-साम्यवादी आंदोलन को जन्म दिया। 19वीं शताब्दी का पेरिस कम्यून इसी आंदोलन की एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति था। कम्यून के कुचले जाने के बाद पहली सफल साम्यवादी क्रांति की जिम्मेदारी 20वीं शताब्दी को उठानी थी।

प्रथम विश्व-युद्ध के रूप में पूंजीवाद ने अपना और भी घिनौना चेहरा दिखाया।

हत्या से कुछ समय पूर्व फर्डीनाड और उनकी पत्नी

कहने के लिए इस बडी लडाई की शुरुआत एक सर्बियाई छात्र द्वारा आस्ट्रिया हंगरियाई महाराजकुमार फर्डीनाड की हत्या कर देने से हुई थी। पर यह घटना तो केवल बहाना मात्र थी। दरअसल तो दुनिया की बडी बडी पूंजीवादी ताकतें अपना मुनाफा बढ़ाने और बाजार तलाश करने के लिए दुनिया का नये सिरे से बटवारा करना चाहती थीं। युद्ध का प्रमुख कारण था जर्मन और ब्रिटिश पूंजी का अंतर्विरोध। एक तरफ मित्र राष्ट्र थे। इस खेमे में थे—रूस ब्रिटेन और फ्रांस। दूसरी तरफ जर्मन गठजोड था, जिसमें जर्मनी के अलावा आस्ट्रिया और हंगरी थे। मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति से अनुप्राणित इस युद्ध में 95 लाख लोग या तो मारे गये या बुरी तरह घायल होकर अधमरे हो गये। दो करोड लोग घायल हो गये और 35 लाख लोग हमेशा के लिए अपंग हो गये।

इस युद्ध में 38 देश शामिल हुए। इसके फलस्वरूप जर्मनी तथा ब्रिटेन की आमदनी क्रमशः छः और पांच गुना बढ़ गयी। अमरीका मित्र राष्ट्रों के साथ बाद में आकर जुडा, पर उसने भी बेतहाशा और शायद सबसे ज्यादा मुनाफा कमाया। रूस को क्या मिला—तबाही और सिर्फ तबाही। जार निकोलस द्वितीय द्वारा युद्ध में अंधाधुंध रूसी जवानों को झोंका गया। मोर्चे पर तैनात हर रूसी सैनिक के दिमाग में यह सवाल बार-बार उठता कि आखिर वह किसकी खातिर यह युद्ध लड रहा है?

सन् 1911 में रूस के एक लाख से ज्यादा मजदूरों ने हडतालों में हिस्सा लेकर अपने बदल हुए तेवर जतला दिये थे। सन् 1912 में दस लाख से भी ज्यादा मजदूरों ने हडताल की। सन् 1914 के पहले छः महीनों में 13 लाख 37 हजार मजदूर हडताल पर थे। रूसी सर्वहारा की ताकत साफ तौर पर बता रही थी कि वे जार और जारीना के कुशासन के तहत और अधिक दिनों तक घुटन पिसन के लिए तैयार नहीं थे। मजदूर ग्रामीण गरीब

जारीना और जार कुशासन ले डूबा

और मझाल किसान रूस की कुल आबादी का एक बहुत बडा हिस्सा थे। जनता मे व्यापक रूप स असताष फैला हुआ था। जार और जारीना कुशासन की हालत यह थी कि व एक ज्यातिषी और तांत्रिक ग्रिगारी यफिमाविच रास्पुतिन क हाथ की कठपुतली मात्र बनकर रह गय थ। रास्पुतिन न जारीना और दरबार पर अपना असर जमा लिया था। युद्ध की वजह स फौजी खर्चा बढ़ता जा रहा था। महगाइ छलाग मार-मारकर आम जनता की कमर तोड रही थी। विदशी पूजी पर निभरता बढ़ रही थी। अगस्त, 1914 स फरवरी, 1917 के बीच 30 महीना म मत्रिपरिषद् क चार अध्यक्ष छ गृह-मत्री आर चार युद्ध मत्री बदल गय। राजनैतिक अस्थिरता और अनिश्चितता की इससे बडी मिसाल और क्या हो सकती है?

दूमा (Duma) यानी रूसी समद म कडट(सवधानक-जनवादी पार्टी) का लक्ष्य राजतत्र और समद का जाडकर रखना था। समाजवादी-क्रातिकारी पार्टी कृषि सुधारा का लाग करने पर जार द रही थी। प्रगतिवादी पार्टी बडी पूजी क फलन-फूलन आर इजारदारिया का मजबूत करन की पक्षधर थी। त्रुदाविक पार्टी ग्रामीण पूजीपतिया की पार्टी थी। पर कुल मिलाकर य सभी दल रामानाव वश क जारा का अपन रास्त की बाधा नही समझत थे। हा रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी का जारशाही मे सख्त घणा थी। इस पार्टी का जन्म 1898 म हुआ था। यह पार्टी ब्लादीमिर इलिच उल्यानाव लनिन द्वारा स्थापित श्रमिक मुक्ति सघर्ष सघ म निकली थी। लनिन का मानना था कि जारशाही और पूजीपति वर्ग क खिलाफ सघर्ष करने के लिए एक एकल और कन्द्रीकृत जुझारू पार्टी की जरूरत है, जो भाषा और जाति के भद-भाव क बिना पूरे सवहारा वर्ग का अपन पीछ ला सक।

सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी म दा गुट थे। बाल्शविक (बहुमत वाल) और मशेविक (अल्पमत वाल)। सन् 1903 म पार्टी की दूसरी काग्रस सपन्न हुई। लनिन क

रास्पुतिन

केरेस्की

नेतत्व म बालशविका ने अपना फौरी कार्यक्रम जारशाही यानी एकतत्र का खात्मा और अधिकतम कायक्रम समाजवादी क्राति रखा। बोल्शेविका ने जनता को जगाकर क्रातिकारी आदालन मे खीचने की मुहिम शुरू की। देश के कोन-कान म बोल्शविको ने क्राति का सदेश फैलाया। लोगा को बताया कि उनकी बदहाली की असली वजह क्या है?

10 फरवरी 1917 को पेत्राग्राद म मजदूरा क प्रदर्शन शुरू हा गय। 14 फरवरी का 90 000 मजदूरो ने काम बद कर दिया। पुराने पचाग के अनुसार 23 फरवरी को अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। महिलाआ के प्रदर्शन के समर्थन म सवा लाख मजदूरा न हडताल कर दी। बालशविका न इस अवसर पर अपनी कुशल नतत्व क्षमता का परिचय दकर जनता के सच्चे रहनमा बनन का अधिकार प्राप्त कर लिया। 24 फरवरी तक हडतालिया की सख्या बढ़कर सवा दा लाख हो गयी ओर 25 फरवरी का हुई राजनतिक हडताल न नगर की सभी आर्थिक गतिविधिया ठप्प कर दी। जार ने कमाडर जनरल खाबालोव को राजधानी म हो रही गडबडिया को खत्म करन और जलसे-जलूसा पर पाबदी लगान का हुक्म दिया। जनता का कचलने गयी टुकडियो स मजदूर जूझ गये। घमासान युद्ध छिड गया। 27 फरवरी को 10 000 सैनिक विद्राही मजदूरो से मिल गये। अगले दिन तक बागी फौजियो की सख्या सवा लाख हा चुकी थी। मजदूरो और सैनिका ने मिलकर पत्राग्राद सावियत बना ली। सोवियते मजदूरा किसानो और सैनिका क निर्वाचित राजनैतिक सगठन थी। इनका ज म प्रथम रूसी क्राति (1905 1907) क दौरान हआ था। फरवरी मे हुई क्रातिकारी घटनाआ का पूजीपति वर्ग क प्रतिनिधिया ने फायदा उठाया। जारशाही की दूमा म बैठने वाले इन प्रतिनिधिया न चालाकी स खुद का दूमा की अतरिम समिति घोषित कर दिया ताकि व खुद का क्रातिकारिया क गले उतार सक। 2 मार्च का इसी अतरिम समिति के कहने पर जार न अपन भाई क पक्ष म गद्दी छाड दी पर जार के भाई न घबराकर अतरिम समिति की अस्थायी सरकार का सत्ता सौंप दी।

जनसभा को सबोधित करते लेनिन

इस अस्थायी सरकार का पूजीवादी देशा न हाथा-हाथ लिया और मान लिया कि युरोप की तरह रूस भी उदारतावादी पूजीवादी जनतत्रो की राह पर चल पडा है। पर इस सरकार के प्रमुख कारकुना का ध्यान से अध्ययन करने पर ही इसका पतनशील चरित्र साफ हो जाता था। पूजीपति गुचकाव इस अस्थायी सरकार का सैन्य और नौसैनिक मत्री था। इस न सन् 1905 स सन् 1907 के बीच हुई रूसी क्राति की पराजय का स्वागत किया था। प्रिंस ल्वोव शासनाध्यक्ष था। वह हर तरह के क्रातिकारी आदालन को कुचल देन का पक्षधर था। व्यापार और उद्योग मत्री कोनोवलोव अपने मिल-मालिक चरित्र के अनुरूप ही मजदूरा क खिलाफ कडे रवैये की वकालत करता था। वित्तमत्री तेरेश्चको रूस को लगातार युद्ध म झोके रखने क पक्ष मे था। जाहिरा तोर पर यह अस्थायी सरकार उन क्रातिकारी ताकता का सतुष्ट नही कर सकती थी जो फरवरी-क्राति क दौरान पैदा हुई थी। वैसे भी अस्थायी सरकार को सत्ता हाथ मे लेने का मौका मेंशिविको ने दिया था। बाल्शेविक इस नीति क पक्ष म कतई नही थे।

इस तरह से अब तक रूस म दो सरकार बन चुकी थी। एक तरफ अस्थायी सरकार थी ता दूसरी तरफ पत्राग्राद सोवियत थी। 3 अप्रैल, 1917 का लेनिन निर्वासन से लौट। पेत्रोग्राद मे उनका जारदार स्वागत किया गया। जनता के दबाव ने अस्थायी सरकार क गठन म कई बार परिवर्तन किये। इन अस्थायी सरकारा म स कोई भी सरकार जन-समस्याआ को ता हल नही कर सकी लेकिन वह जनता के आदालनो का दमन करन मे भी कतई पीछ नही रही। 4 जुलाई 1917 को पाच लाख शातिपूर्ण प्रदर्शनकारियो पर अस्थायी सरकार की फौजा न गालिया चलायी जिसस 50 लाग मार गय। बोल्शेविका की हत्याए भी की गयी। लेनिन की गिरफ्तारी की याजनाय बनन लगी। लनिन को फिर विदेश चले जाना पडा। पार्टी साहित्य छापन वाल प्रसा पर छापे पडने लग। बाल्शेविक पार्टी और उसक नेता भूमिगत हो गये। उसका मुख-पत्र 'प्राव्दा राबेची ई सल्दात राबोची पूत इत्यादि के नामो से प्रकाशित हाता रहा।

बोल्शेविकों ने 26 जुलाई से 3 अगस्त तक अपनी छठी कांग्रेस भूमिगत रूप से की। इसमें हथियारबंद बगावत की तैयारी करने और मौके का इन्तजार करने की नीति तय की गयी। उधर अस्थायी सरकार के नये प्रधानमंत्री करेन्स्की ने तय किया कि बोल्शेविकों का काबू में करने के लिए सैनिक तानाशाही लागू कर देना ठीक होगा। प्रधान सेनापति कार्नीलोव भी इसी पक्ष में थे। पर वे खुद को तानाशाह घोषित करना चाहते थे। 21 और 31 अगस्त 1917 के बीच जनरल कार्नीलोव की फौजी टुकड़ियां पेत्रोग्राद में लामबंदी करने लगीं। कार्नीलोव को बड़े पूंजीपतियों और मित्र राष्ट्रों का समर्थन हासिल था लेकिन कार्नीलोव का यह विद्रोह पनपने से पहले ही कुचल दिया गया। इससे लोगों की समझ में आ गया कि रूसी जनता के सच्चे प्रतिनिधि करेन्स्की या कार्नीलोव के बजाय बोल्शेविक ही हैं।

सैनिकों ने मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ने की शपथ तो ली लेकिन वे समझ नहीं पा रहे थे कि उनकी लड़ाई का उद्देश्य क्या है?

सन् 1917 के पतझड म लनिन फिनलैंड स भेस बदलकर पत्रोग्राद पहुचे। उन्ह 1/32 सर्दोबाल्स्काया राड पर बन एक मकान म गप्त रूप स ठहराया गया। यही उन्हान हथियारबद विद्राह की योजना बनायी। विद्राही दस्ता का मुख्यालय बनाना तारघरा टलीफान क न्द्रा ओर रलव स्टशना पर कब्जा कर लना सना क जनरला व अस्थायी सरकार क सदस्या का गिरफ्तार कर लना आदि बात इस याजना का मुख्य अग थी। बाल्शविका की पार्टी न इस याजना का मजूरी द दी।

पत्राग्राद गरीसन क क्रांतिकारी सनिका बाल्टिक जहाजी बड क नासनिका व रड गार्डों की मिली-जुली फाजी न क्रातिकारी सनिक कन्द्र क नतत्व म तयारी कर ली। इस समिति म बुबनोव, दज्ञरझीस्की स्वदलव स्तालिन आर उरीत्सकी जसे लनिन क विश्वस्त शिष्य आर साथी थ। पत्राग्राद म अक्तूबर 1917 म हुए इस सशस्त्र विद्राह म 40 000 क्रांतिकारिया न हथियार उठाय।

दूसरी तरफ युद्ध म परशान सनिक मार्चा छाडकर भाग रह थ। मजदूरा ने कारखाना की बागडोर अपन हाथा म लनी शुरू कर दी थी। किसाना न भी जमीदारा का खदडना आर लतियाना शुरू कर दिया था। एस म करस्की न पहला वार किया। 24 अक्तूबर का सरकार न क्रांतिकारिया क मख पत्र रावीची पूत क प्रस पर छापा मारा। पर इसी दिन क्रांति क मुख्यालय स्माल्नी इस्टीट्यूट म सारी तयारी पूरी हा चुकी थी। 24-25 अक्तूबर की रात का एक-एक चरक कन्द्रीय डाकघर निकालायवस्की रलवे स्टेशन बिजलीघर इत्यादि पर क्रातिकारिया का कब्जा हा गया। अगली सुबह बैंक वारसा रलव स्टशन आर टलीफान एक्सचज उनक हाथ म आ गय। क्रांतिकारिया का समथन करने वाला यद्धपात अर्वारा नवा नदी म आ गया। अब शिशिर प्रासाद (केरेन्स्की का

सन् 1917 मे क्रेमलिन मे प्रवेश करते लाल सैनिक

लेनिन

स्तालिन

मत्र्यालय) सीध उसकी तापा की मार क अदर था। 25 अक्तूबर को क्रातिकारी सैनिक समिति ने रूस के नागरिका क नाम अपील प्रसारित की। 26 अक्तूबर की रात 2 10 बजे अस्थायी सरकार क प्रतिनिधिया को गिरफ्तार कर लिया गया। सोवियता की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस हुई जिसन भूमि और शाति सबधी विज्ञप्तिया निकाली। इनम युद्ध खत्म करने और भमि पर जमीदारा का मालिकाना खत्म करने की घोषणाए की गयी थी। इस कांग्रेस म दुनिया म मजदूरा किसाना की पहली सरकार जन कमिसार परिषद् गठित हुई। लेनिन सरकार क प्रधान चने गये। उद्योगा का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। शापका से वोट डालने के अधिकार छीन लिय गय। 31 दिसबर 1917 को फिनलैंड को आजाद घोषित कर दिया गया।

दूसरी तरफ क्रातिकारी सरकार क खिलाफ साजिश हो रही थी। सत्ता से हटाये गये पूजीपतिया और सामता ने मातृभूमि तथा क्राति उद्धारक समिति जैसे आकर्षक नामा स बोल्शविका के खिलाफ मुहिम शुरू कर दी। पेत्राग्राद स आठ किमी दूर केरस्की इस बात का इतजार कर रहा था कि कब उनकी फौजे पेत्राग्राद पर कब्जा कर और व अपने सफेद घोडे पर सवार होकर शिशिर प्रासाद म जाय। पर बोल्शेविका न जनरल क्रास्नाव और उसके स्टाफ का गिरफ्तार कर लिया। कई घटो की लडाई के बाद क्रातिकारी दस्ता की जीत हुई। करस्की फिर भाग निकला।

अब बारी आयी मित्र राष्ट्रा के हस्तक्षेप करन की। ब्रिटन और फ्रास ने 10 दिसबर 1917 को सैनिक कार्रवाई क क्षेत्रा म बटवारा करके जल्दी से जल्दी बोल्शेविकों का उखाड फेकने की साजिश की। अमरीका ने तमाम क्राति विरोधी ताकता की भरपूर आर्थिक मदद की। 25 अक्तूबर स 2 नवबर तक घनघोर सघर्ष चलाकर बोल्शविका ने मास्को को जीत लिया था। बाल्टिक राज्या के आधे से अधिक भू भाग पर सोवियता की सत्ता कायम हो गयी थी। देश क पुनर्निर्माण के लिए शाति की जरूरत थी। इसलिए थोडी कडी और अपमानजनक शर्तों पर भी 3 मार्च, 1918 को ब्रेस्ट-लितोव्स्क म सोवियत प्रतिनिधिमडल न जर्मना के साथ सधि कर ली। जर्मना न शाति समझौता तोडकर पूर्वी मार्चे पर हमला बोल दिया था। पत्रोग्राद पूरी तरह घरबदी म था इसलिए लेनिन के नतृत्व म सोवियत सरकार मास्को चली गयी।

रूस का मानचित्र

पूजीवादी दशा म अकल ब्रिटन न सावियत विराधी कारवाइयो पर 8 कराड 97 लाख पौड खर्च किय। क्राति क लाल रग क खिलाफ प्रतिक्राति क सफद झड तल दक्षिण ओर पूर्वी इलाका म सनाए जमा हान लगी। 23 फरवरी को इस गह-युद्ध म लडन क लिए लाल सना का गठन किया गया। सिर्फ पेत्राग्राद म ही 40 000 मजदूरा न सना म अपन का नामजद करवाया। लाल सना क पास अच्छ आर काफी मात्रा म हथियार नही थ। हर छ सैनिका क बीच एक राइफल थी। 9 मार्च तक 2 000 ब्रिटिश 65 000 जापानी आर 12 000 अमरीकी सैनिक रूस क गृह-युद्ध म हस्तक्षप क लिए ब्लादीवास्टक पहुच चुक थ। चकास्लावाक युद्ध-बंदिया की फाज खडी कर दी गयी थी। सन् 1918 की गर्मिया म मजदूर-किसाना का यह नवनिर्मित गणराज्य सभी आर स घर म आ गया। अगस्त म लनिन क ऊपर कातिलाना हमला हुआ। व बुरी तरह घायल हा गय। उसी दिन पत्राग्राद म एक आतकवादी न पार्टी क नेता उरीतस्की की हत्या कर दी। इस तरह प्रतिक्रातिकारिया न अदर और बाहर दाना तरफ स क्राति क खिलाफ लडाई छड दी।

विदशी आक्रमण का दखते ही क्राति के कई पूर्व-विरोधी देशभक्ति की भावना म प्रेरित हाकर उसक पक्ष म आ गय। जारशाही क कई जनरला न गह-युद्ध म सावियता की आर स जमकर भाग लिया। तमाम तरह की दिक्कता भूख तबाही आर कमी क बावजूद सावियत सनाए युद्ध लडती रही आर इस तरह सन् 1918 का साल खत्म हान का आ गया।

11 नवबर 1918 का विश्व-युद्ध खत्म हा गया। जमनी और मित्र राष्ट्रा क बीच सधि हा गयी। अब ब्रिटेन और फ्राम न अपन युद्धपातो क जरिए क्राति म हस्तक्षप करना प्रारभ किया। ब्रिटिश फाज अपन टैंक लकर आ गयी। सावियत सरकार न सन् 1919 म अपनी राजनैतिक आर कटनीतिक कुशलता साबित की। लाल सैनिक मार्च स एक कदम भी नही डिग। सन् 1920 म आखिर हारकर मित्र राष्ट्रा का अपनी सनाए वापस बलानी पडी। सन् 1921 क आत आते गह युद्ध खत्म हा गया। अब बारी आयी गह युद्ध स ध्वस्त हुए दश के पुनर्निमाण की। सावियत जनता न कम्युनिस्ट पार्टी क नतत्व म यह बेहद गभीर और जरूरी काम भी सफलतापूवक कर दिखाया। आज सावियत सघ विश्व क सबस बड दा औद्यागिक दशो म स एक हे। ■■

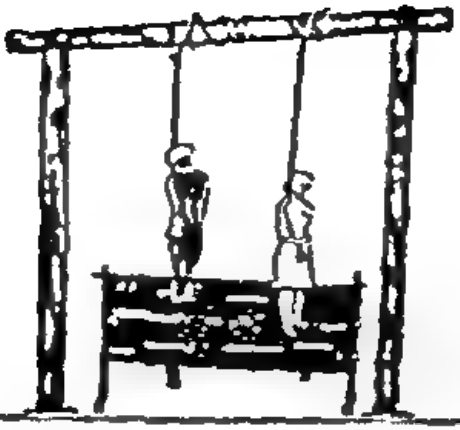

तुर्की की क्रांति
(1915 1921)

400 वर्ष पुराने ऑटोमन तुर्क साम्राज्य के पतन के बाद तुर्की के फौजी अफसरों और जनता में राष्ट्रवादी महत्त्वाकांक्षाएं पनपने लगीं। वे खलीफा और सुल्तान के मध्ययुगीन शासन से अपने देश को मुक्त कराकर खुली हवा में सांस लेना चाहते थे। कमाल अतातुर्क यह सपना देखने वालों के अग्रणी नेता थे। तुर्की की क्रांति ने न केवल इस राष्ट्र को अपनी प्राकृतिक सीमाओं में सुरक्षित किया बल्कि सोच-विचार और समाज नीति का पश्चिमीकरण भी कर दिया। खिलाफत खत्म हुई और तुर्की प्रथम विश्व-युद्ध की पराजय से उभरकर एक स्वतंत्र और प्रभुसत्ता-संपन्न राष्ट्र बन गया।

प्रथम विश्व-युद्ध खत्म होने के बाद तुर्की का ऑटोमन साम्राज्य (Ottoman Empire) तेजी से पतन की गर्त में फिसलने लगा था। करीब 400 साल पहले ऑटोमन तुर्कों ने मेसोपोटामिया और कुर्दिस्तान, सीरिया और माइनर एशिया, क्रीमिया और दक्षिण रूस व मिस्र और उत्तर अफ्रीका को जीतकर अपने साम्राज्य का काफी विस्तार कर लिया था। तुर्कों ने कास्टंटिनोपिल (Constantinople) बाल्कन देशों, हंगरी को अपने प्रभुत्व में लाकर पश्चिमी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शक्ति होने का रुतबा हासिल कर लिया था। लेकिन ज्योंही इस साम्राज्य के टूटने की प्रक्रिया शुरू हुई तो यह देखते देखते 'यूरोप के बीमार आदमी' में बदल गया। रूस के जार ने तुर्क साम्राज्य को यह उपमा ऐसे ही नहीं दे दी थी। रूस ने क्रीमिया को उससे छीन लिया था। यूनान के राष्ट्रवादी संघर्ष ने उसे तुर्कों के हाथ से आजाद करा लिया था। सर्बिया (Serbia), रूमानिया और बल्गारिया भी क्रमशः अपनी आजादी की तरफ बढ़ रहे थे। फ्रांस ने अल्जीरिया पर कब्जा कर लिया था। मिस्र ब्रिटिश नियंत्रण में आ चुका था। कुल मिलाकर एक जमाने में महान और शक्तिशाली रह चुके इस साम्राज्य की हालत अब खस्ता और काफी कमजोर थी।

सुल्तान अब्दुल हामिद कास्टंटिनोपिल में बैठकर अपने बचे-खुचे राज्य की निहायत

16वीं सदी का महान सुलीमान का जमाना जब ऑटोमन साम्राज्य अपने पूरे वैभव पर था।

क्रूर और मनमान ढग स चला रहा था। शक्की और असुरक्षित सुल्तान न अपन इर्द-गिर्द जासूसा की पूरी फौज ही खडी कर ली थी। वह किसी नय विचार समाज-सधार क किसी प्रस्ताव, किसी भी तरह की आजादी और आदालन क जिक्र तक का बदाश्त करन क लिए तैयार नही था। अपने दश और समाज की यह दुर्दशा दखकर युवा तुर्कों का मन कुछ कर गुजरन क लिए बचैन हान लगा। पर सल्तान क जासूसा स डरकर खुफिया सगठन बनान क अतिरिक्त उनक सामन काई चारा न था। खुद सुल्तान की फोज म भी इस तरह की सीक्रेट सासाइटिया बनन लगी थी। इनक गठन म एक युवा अफसर मुस्तफा कमाल पाशा न सर्वाधिक महत्त्वपूण भूमिका निभाइ। यह अफसर ही बाद म तुर्की की क्रांति का नायक बना और अता तुर्क (Father of Turks) क नाम स मशहूर हआ।

कमाल पाशा मानास्तिर (Monastir) क मीनियर मिलिट्री स्कूल क एक प्रतिभाशाली छात्र थ। उन्हान सैन्य विज्ञान का गहन अध्ययन करन क दारान खुद का असाधारण प्रतिभाशाली साबित किया था। सल्तान क मनापति युवक मुस्तफा म भविष्य के जनरल की सभावनाए दखत थ। उन दिना 20वी शताब्दी की शुरुआत थी और तर्की को एक कुशल मनापति की जरूरत भी थी। सन 1881 म पैदा हुए मुस्तफा न 24 साला की उम्र म कप्तान का पद हासिल किया और मिलिट्री कॉलज म ही वतन (Vatan) नाम की सीक्रट सासाइटी बनायी जिसका मकसद सवधानिक सुधार करना था। यह सासाइटी तुर्की का मध्ययुगीन समाज की जडता स निकालकर नय साच म ढालना चाहती थी। पर इसम पहल कि काम अभी बढ़ पाता सुल्तान क जासूसा न सासाइटी का सराग लगा लिया। उसक सदस्य गिरफ्तार कर लिय गय और क्रांति की कोशशा क चन्द कमाल पाशा का

कमाल 'अता तुर्क अर्थात् तुर्कों के पितामह

जल की काठरी मिली। जासूसा न कमाल क खिलाफ सार मबूत जटा लिए थ और उस मात की सजा मिलन म दर नही थी। पर यहा कमाल की एक अच्छ अफसर क रूप म ख्याति काम आयी और सजा दन क बजाय कमाल का दमिश्क म एक रजीमट म तनात कर दिया गया। वहा कमाल का अपनी युद्ध कला के जौहर दिखाने का पूरा माका मिला।

कमाल की विशपता यह थी कि उन्हान यरापीय सुधारका की पुस्तका का अध्ययन किया था। उन्ह फ्रासीमी भाषा भी आती थी। सीरिया म कमाल न द फादरलेंड एड फ्रीडम सासाइटी बनायी जिसकी विचारधारा तजी स फैली पर कमाल का ध्यान ता तुर्की पर ही लगा हुआ था। उधर तुर्की म कमाल क जन्म स्थान सलानिका (Salonika) म एक नये आदालन क अकुर फूट रहे थ। इसम अपन अशदान दने क लिए कमाल न मिस्र आर यूनान हात हए स्वदश का रास्ता पकडा। पर सुल्तान क जासूसा न कमाल की गतिविधिया का फिर स पता लगा लिया। उन्ह वापस जाना पडा। बाद म कमाल न आधिकारिक जरिए म ही अपना तबादला सलानिका करा लिया।

सलानिका म एक खफिया सधार-आदालन की गतिविधिया शुरू हा गयी। इसका नाम 'ऑटामन फ्रीडम सासाइटी' रखा गया। सासाइटी क नताआ म कई मुद्दा पर परस्पर मतभद था। ज्यादातर नता चाहत थ कि सन् 1876 क सविधान का दाबारा स्थापित किया जाय। सन् 1877 म सुल्तान अब्दुल हामद न इस सविधान को मानन स इकार कर दिया था। इसके उल्ट कमाल पाशा का मकसद बेकार हा चकी परपराआ कुप्रशासन अशिक्षा और पुरान इस्लामी कानूना का मिटाकर पश्चिमी ढाच पर एक आधुनिक व मजबूत राष्ट्र की स्थापना करना था। पर पाशा क विराधी नता परिस म निर्वासन व्यतीत कर रह थ 'यग टर्क नताआ स जड थ जा आटामन साम्राज्य का फिर स स्थापित करन का असभव स्वप्न दखते थे।

सन् 1908 म सल्तान का पता लगा कि सलानिका म विद्रोह की चिगारिया सलग रही हैं। उसन विद्राही अफसरा क नता एनवर ब (Enver Bay) का तलब किया पर एनवर न पहाडिया म शरण ली। दूसरा विद्राही अफसर मजर नियासी (Niyasi) भी अपन सैनिका

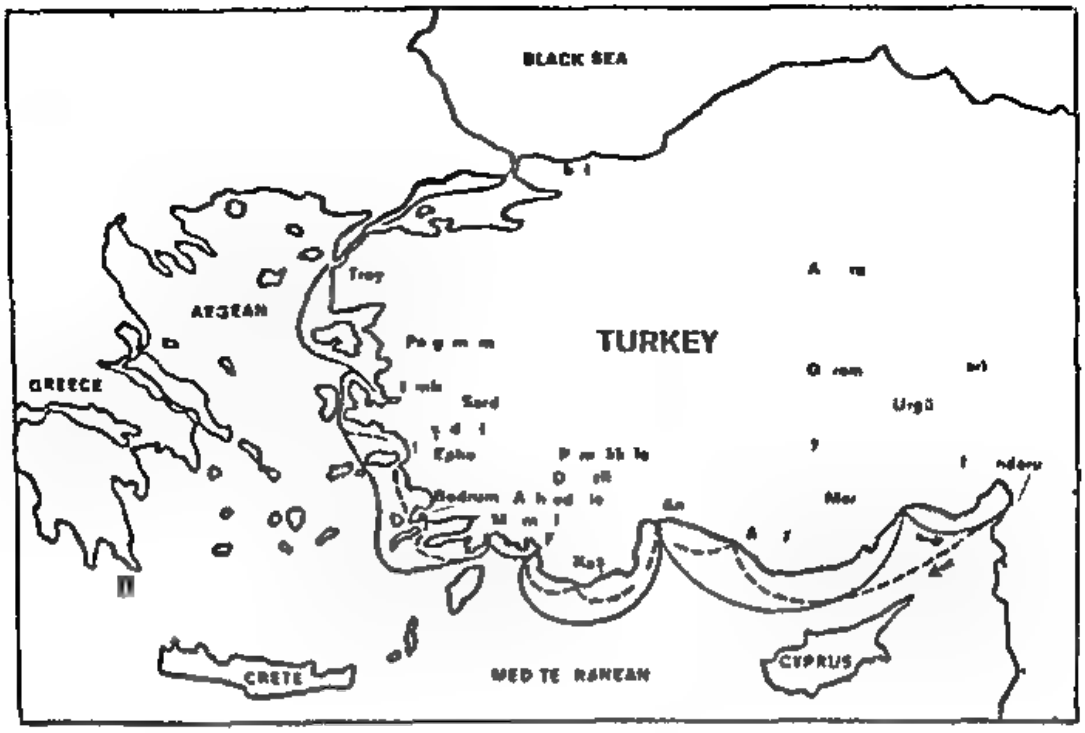

तुर्की का मानचित्र

आर हथियारा क साथ एनवर क नतत्व म चला गया। धीर-धीर तुर्की फाजा क बड हिस्स न बगावत कर दी आर युवा तुर्कों न सुल्तान का सविधान मानन पर मजबूर कर दिया। इस परिवतन क नायक एनवर आर नियामी थे।

ठीक एक साल बाद सुल्तान अब्दुल हामिद न अपन समथका क जरिए 'इस्लाम खतर म' का नारा लगाया आर कास्टटिनोपिल म विद्राह हा गया। अनुभवहीन युवा तर्क सरकार लडखडा गयी। मलानिका की फाज आड वक्त पर काम आयी। इसका नतत्व एनवर आर कमाल पाशा क हाथ म था। विद्राह कुचल दिया गया आर सुल्तान का गद्दी छाडनी पडी।

अगल ना वर्ष तक तुर्की पर कमटी ऑफ यूनियन एड प्रोग्रस की हुकूमत रही। अक्तूबर 1911 म तर्की युद्ध म उलझ गया। सन् 1912 म बाल्कन युद्ध म तुर्की का हार खानी पडी आर उसक हाथ म युगपीय इलाका निकल गया। प्रथम विश्व-युद्ध शुरू हुआ। सन् 1915 म कमाल न गलीपाली (Gallipoli) द्वीपसमूह क अपनी कमान वाल हिस्स पर ब्रिटिश हमला झला आर तीन महीन तक विपरीत परिस्थितिया म नतहाशा बहादुरी आर निजी जोखिम क दम पर थाडी-सी फाज क सहार अग्रजा का आग बढन स राक रखा। इस तरह कमाल न कास्टटिनोपिल का बचाया। युद्ध म व ही अकल तुर्की सनापति थ जिसन जीत हासिल की थी। इस जीत न कमाल की ख्याति पूर दश म फला दी। फिर भी तुर्की का मित्र राष्ट्रा क सामन घटन टक्न पड।

इधर कास्टटिनोपिल म यवा तर्का की सरकार की जगह सुल्तान क उत्तराधिकारी वहीदद्दीन (Vahideddin) न ल ली थी। दश म अकाल पडा हुआ था और जनता का नतिक बल गिर चुका था। सुल्तान न कमाल की साहवन आर राजधानी म उनकी माजूदगी टालन क लिए उन्ह काल सागर क तट पर फाज की कमान सभालन क लिए भज

दिया। कमाल ने सन् 1919 में तमाम प्रतिरोधी दलों का संगठित करना शुरू किया। थल सेना और नौसेना के कमांडरों की गुप्त बैठक में तय हुआ कि सुल्तान की हुकूमत को न माना जाय। इस बैठक में निकली घोषणा में कांस्टांटिनोपिल की सरकार को विदेशी प्रभुत्व में करार दिया गया और सिवास (Sivas) में एक स्वतंत्र और न्यूनतम कार्यक्रम वाली सरकार बनाने के लिए राष्ट्रीय असेंबली बुलाने का फैसला किया गया।

कमाल ने फौज की नौकरी छोड़कर एक नागरिक की तरह सिवास कांग्रेस की अध्यक्षता की। सुल्तान ने मित्र राष्ट्रों से मदद मांगी। उन्होंने तुर्की के राष्ट्रवादी आंदोलन को दबाने की शुरुआत की। अंग्रेजों ने कांस्टांटिनोपिल पर कब्जा कर लिया और सुल्तान ने सर्वोच्च खलीफा के रूप में मुसलमानों से कमाल की बात न मानने के लिए कहा।

अंकारा में 23 अप्रैल 1920 को तुर्किश ग्रांड नेशनल असेंबली का पहला अधिवेशन हुआ जिसमें कमाल को राष्ट्रपति चुना गया। कमाल ने घोषणा किया कि खलीफा को अंग्रेजों ने कैद कर लिया है इसलिए उसके बिना ही सरकार चलायी जायगी। 10 अगस्त को सुल्तान ने मित्र राष्ट्रों के साथ एक ऐसी संधि की जो राष्ट्र के लिए घोर अपमानजनक थी। इस संधि से तुर्की ज्यादा से ज्यादा एक कठपुतली देश बन सकता था। सारा देश इस संधि के खिलाफ कमाल पाशा के पीछे खड़ा हो गया।

सन् 1921 में यूनानियों ने हमला किया और तुर्कों को मुंह की खानी पड़ी पर कमाल ने अंकारा के दक्षिण में एक बार फिर इस्पाती दीवार की तरह मोर्चा लगा दिया। यूनानियों को वापस जाना पड़ा और आजाद तुर्की को पहली बार एक राष्ट्र के रूप में सारी दुनिया ने स्वीकारा। रूसी फ्रांसीसी और इतालवी सरकारों ने तुर्की को मान्यता प्रदान की।

मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में अगली गर्मियों में यूनानियों को मुल्क के बाहर निकाल दिया गया और अंग्रेजों से संधि कर ली गयी। तुर्की एक लंबे अर्से बाद अपनी प्राकृतिक सीमाओं का मालिक बना।

तुर्कों की क्रांति वहां के समाज, राजनीति और कानून में काफी तब्दीलियां लायी। खलीफा की सल्तनत खत्म कर दी गयी। अंकारा को नयी राजधानी बनाया गया। अगस्त, 1925 में 'फेज' पहनना गैर कानूनी करार दे दिया गया। तुर्कों की पोशाक कानून शिक्षा और संविधान, सभी कुछ पश्चिमी देशों जैसा कर दिये गये। बहु विवाह पर पाबंदी लगा दी गयी। महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार दिये गये। सन् 1928 में अरबी लिपि की जगह रोमन लिपि का प्रयोग शुरू किया गया। तुर्की की जनता ने प्रेम से अपने नेता का नाम 'अता तुर्क' यानी तुर्कों का पितामह रख दिया। ■■

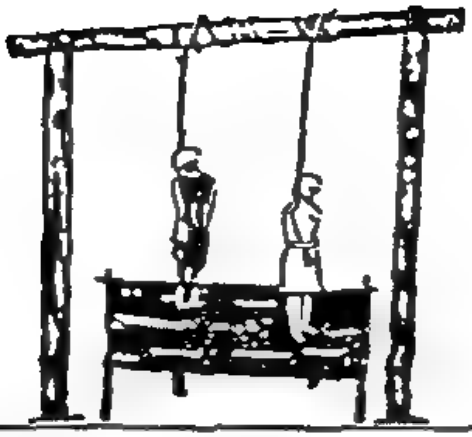

भारतीय स्वतत्रता-सग्राम

(1947)

19वीं शताब्दी के मध्य से भारत मे 'स्वदेशी' की भावना पनपने लगी थी। काग्रेस की स्थापना, गोखले और तिलक की राजनीति, भगत सिंह और चद्रशेखर आजाद की क्रातिकारी कार्रवाइया, गाधी जी का सत्याग्रह और आखिर मे 1942 के 'भारत छोडो आदोलन' ने इस भावना को एक विचारधारा का रूप देते हुए क्रमश पूर्ण आजादी की मजिल तक पहुचाया। असख्य लोगो ने कुर्बानिया दीं, जेला की यातनाए सहीं पर अग्रेजो के सामने सिर न झुकाया। शायद ही किसी अन्य देश ने अपनी आजादी के लिए सौ साल जितना लबा स्वतत्रता-सग्राम लडा हो। सन् 1857 से शुरू हुई आजादी की यह जग सन् 1947 मे जाकर खत्म हुई। बस, एक ही कसक रह गयी—आजादी मिली पर देश का विभाजन हो गया।

सन् 1857 क प्रथम भारतीय स्वतत्रता सग्राम क कुचल दिय जाने के बावजूद भारतीय जनता न अग्रज अत्याचारा क डर से अपना मुह नही छिपाया। हा आजादी की लडाई न अपना रूप आर रास्ता थाडा बदल जरूर दिया। 19वी शताब्दी के मध्य स ही विदशी माल क खिलाफ स्वदशी की भावना एक विचार क रूप म उभरने लगी। धीरे-धीर लागा की समझ म आने लगा कि अग्रज मैंचस्टर की अपनी कपडा मिल चलान के लिए भारत क कपडा उद्योग को नष्ट कर दने पर आमादा हैं। दादा भाई नौराजी, तिलक, मदन माहन मालवीय और सुरद्रनाथ बनर्जी जस गणमान्य नताआ न विदेशी के विरोध म स्वदशी की आवाज बुलद की। सन् 1896 तक आत-आते स्वदशी आदालन जोर पकडन की स्थिति म आ गया था। काग्रस का जन्म कभी का हा चुका था। सन् 1905 म लॉर्ड कजन द्वारा बगाल का विभाजन कर दिया गया। इमस अग्रज-विराधी भावना का रुका हुआ सैलाब फिर स फूट पडा। दखत-दखते आर्थिक स्वदेशी आदालन ने राजनैतिक तेवर अख्तियार कर लिय। दरअसल सन् 1857 क सग्राम क बाद अग्रेजा क पहली बार

वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

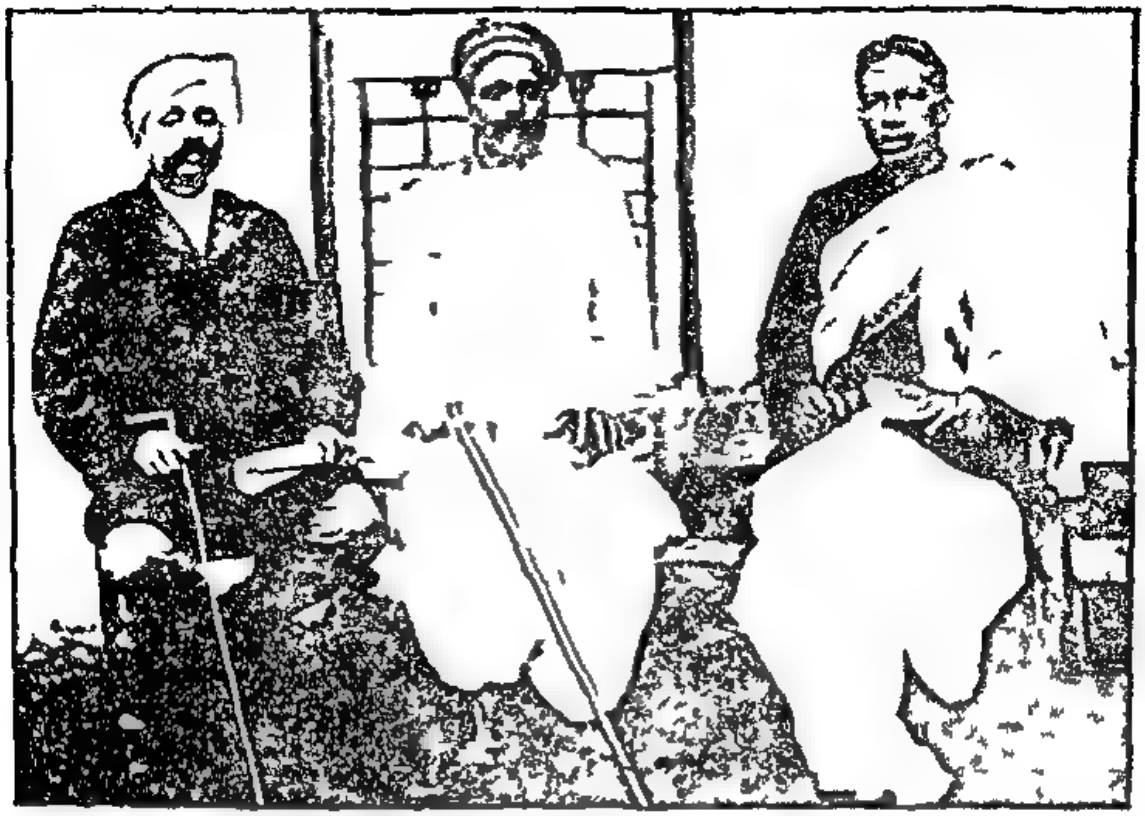

लाल बाल पाल लाला लाजपत राय, बाल गगाधर तिलक और बिपिनचद्र पाल

सगठित रूप म भारतीय आजादी की माग विभाजन विराधी आर स्वदशी आदालन क रूप म दिखायी आर सुनायी दी।

राष्टीय आदालन की तह म तीन तरह की अतर्धाराए प्रयाहित हा रही थी। पहली धारा का सबध उन लोगो स था जो जनता की आर स सरकार का तर्कपूर्ण अर्जिया ओर ज्ञापन देकर कुछ विशेष प्रकार की रियायत हासिल कर लेना चाहते थे। य लाग बर्तानवी हुकूमत की 'इसाफ पसदी के कायल थे। इनक अगुआ थ गापाल कष्ण गाखल। दूसरी तरह क लाग चाहत थ कि लागा मे देशभक्ति स्वाधीनता क लिए प्यार व गुलामी स नफरत की भावनाए पैदा की जाय। साथ ही प्रचार सभाआ जलसा प्रदर्शना और सत्ता की अवहलना क जरिए जनता का प्रतिरोध स्वावलबन त्याग और कष्ट-सहिष्णुता क लिए तयार किया जाय। इन लागा का नारा था 'स्वाराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उस लेकर ही रहग। लाकमान्य बाल गगाधर तिलक विपिन चद्र पाल और लाला लाजपत राय इस विचारधारा के प्रमुख नता थ। काग्रस नरम ओर गरम दल म विभाजित थी। तीसरी धारा उन लागा की थी जो हथियारवद कार्रवाइयो अर्थात् फौजी तरीके स अग्रजा का तख्ता पलट दना चाहत थे। य व जाबाज क्रातिकारी थ जा हर क्षण मातभूमि का अपन प्राणा का बलिदान देन का तयार थे। बगाल की अनुशीलन समिति इनका प्रमुख सगठन था। अरविद घोष, बारीद्र कुमार घोष, भूपद्र नाथ दत्त ओर ब्रह्म बाधव उपाध्याय इस आतकवादी आदोलन क प्रमुख सूत्रधार थे।

बहरहाल स्वदशी और विभाजन विरोधी आदालन न अग्रेजा पर कडी चाट की। हर तरह के लोगो न इसमे भाग लिया—नरम दलिया न थाडी हिचक क साथ और गरम

Times of India 9 April 1929

BOMB OUTRAGE BY COMMU
IN THE ASSEMBLY

FINANCE MEMBER AND SIR B. DALAL IN

Panic in Chamber Second Bomb Thrown on Me
Firing at First Explosion.

TWO MEN ARRESTED POLICE POSTE
HOUSE DAY AND NIGHT

चन्द्रशेखर आजाद

भगत सिंह

रामप्रसाद बिस्मिल

भगत सिंह आदि को फांसी दे दी गयी

लाशें नहीं दी जायेंगी जेल में ही जलाई जायेंगी

फांसी रोकने और सिख कौमियत से अपील करने

सरोजिनी नायडू

राजगुरु

प्रीतिलता वाडेदार

विनायक सावरकर

एनी बेसेंट

सुखदेव

दादाभाई नौरोजी

लाला हरदयाल

वीना दास

बाघा जतिन

केशव हर्दे

सिस्टर निवेदिता

ASSISTANT POLICE SUPERINTENDENT SHOT DE

CONSTABLE WHO GIVES CHASE
ALSO MEETS WITH SI

खरीराम बाल

लाला लाजपत राय

अब्दुल गफ्फार खां

आचार्य कृपालानी

बालगंगाधर तिलक

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

दल ने पूरे जोश क साथ। इसके फलस्वरूप इग्लैंड स भारत म कपडे क आयात मे कमी हो गयी। भारतीय कपडा ज्यादा बिका। जुलाहा की आमदनी बढ़ी। भारत म देसी पूजीपतियो न मिल खोली। भारतीय बेंक खुल पर अग्रजा ने इस आदोलन की एक बात का जमकर फायदा उठाया। स्वदशी और विभाजन विराधी आदोलन काफी कुछ हिंदू धर्म की मान्यताआ और रीति-रिवाजा पर आधारित था। मुसलमान उससे अभी उतने जोश-खरोश से नही जुड पाय थे। अवसर का फायदा उठाने म माहिर अग्रजा न दग भडका दिय। सन् 1906 म मैमन सिंह जिल म फसाद होन लगा। सरकार की तरफ स इस ओर हवा दी गयी।

उधर भारत मत्री और वायसराय की मार्ले-मिंटो जोडी न घोषणा कर दी कि उनका इरादा प्रशासनिक पुनगठन करन का है। नरम दलीय नता इस चारे को लील गये और नतीजतन काग्रस म फूट पड गयी। इसमे आदोलन कमजोर पड गया। दगा और राजनैतिक अनिर्णय की स्थिति न आदोलन का लगभग ठप्प कर दिया। अग्रजा न नरम दल वाला को छोडकर गरम दल क नेताआ और क्रांतिकारियो पर जमकर गुस्सा उतारा। सन् 1907-1908 तक तथाकथित राजद्रोहात्मक सभाए रोकन का कानून विस्फोटक पदार्थ कानून, भारतीय दड विधान सशोधन कानून, समाचार पत्र (उत्तेजन तथा अपराध) कानून और प्रस एक्ट बना दिय गये ताकि राष्ट्रवादी आकाक्षाआ की घेराबदी करके उन्ह उग्र होन स रोका जा सके।

मार्ले मिंटो क प्रशासनिक सुधार धोख की टट्टी साबित हुए। वे पूर्ण आजादी पाने की भारतीय इच्छा को कहा शात कर सकते थ? इसलिए इसी दिशा मे आगे बढ़ने के लिए सन् 1916 म 'होम रूल आदोलन' शुरू हुआ। लखनऊ समझोते के तहत स्वशासन की माग की गयी। काग्रेस न स्पष्ट कहा "समय आ गया है कि महामहिम सम्राट यह घोषणा कर कि ब्रिटिश सरकार की नीति भारत को निकट भविष्य म ही स्वराज देन की है।' क्रातिकारिया न धमाक जारी रख। सन् 1906 स सन् 1917 क बीच 60 हत्याए या उनकी कोशिशे व 110 डकैतिया व लूटमार इसी सिलसिले म हुई। बगाल मे अनुशीलन वाला ने और महाराष्ट्र म विनायक दामोदर सावरकर के 'अभिनव भारत' ने इनमे प्रमुख भूमिका निभायी। मुजफ्फरपुर, अमदाबाद नासिक, मद्रास के पास तिन्नेवेली, दिल्ली इत्यादि जगहो पर लॉर्ड मिंटो और लॉर्ड हार्डिंग जसे बडे अग्रज प्रशासका की हत्या की कोशिश की गयी।

आजादी क दीवान दश की सीमाए पार करके ब्रिटन म भी गरजे। सावरकर ने लदन मे 'इडिया हाउस' के जरिए भारत की आवाज बुलद की और सन् 1909 म मदन लाल धीगरा ने राजनैतिक ए डी सी कर्जन वायली का गोली मार दी। इस सिलसिले म श्याम जी कृष्ण वर्मा और लाला हरदयाल क क्रांतिकारी कामा को भी नहीं भुलाया जा सकता। हरदयाल न अमरीका म गदर पार्टी की स्थापना की, जा घोर ब्रिटिश विराधी पार्टी थी। प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान इन क्रांतिकारियो ने भारत की आजादी क लिए विदशो स सहायता पान और षड्यत्र करने के कई प्रयास किय। उन्ह आखिरी सफलता नही मिली। प्रवासी सिखा ने 'कामागाटामारू' की घटना म बडी बहादुरी का प्रदर्शन किया।

काग्रेस की कोशिशो से ब्रिटिश साम्राज्य की नैतिक बुनियाद खोखली होती जा रही थी। उधर क्रातिकारियो ने साबित कर दिया था कि ब्रिटेन की ताकत को चुनौती दी जा सकती है। ब्रिटिश हुकूमत के लिए यह काफी चिंता की बात थी।

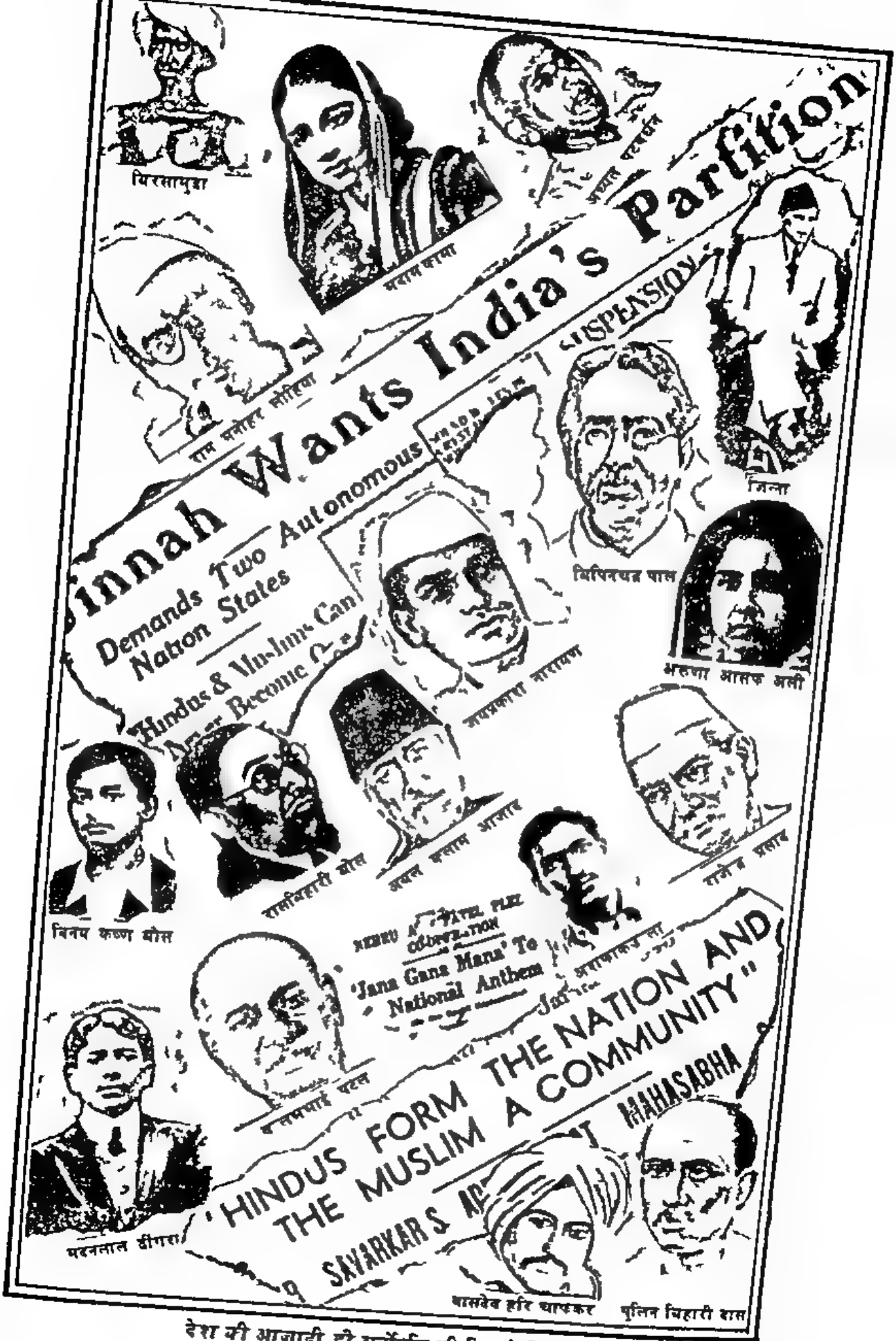

देश की आजादी ही सर्वोपरि थी जिनके लिए!

विशुद्ध गुजराती किसान की वेशभूषा मे महात्मा गाधी साधारण से दिखने वाल इसी व्यक्ति ने भारत को आजादी दिलवाने मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

होमरूल आदालन की बागडार तिलक और एनी बसट के हाथ म थी। इस आदालन म फूट की शिकार कांग्रस म भी एकता करा दी। एनी बेसट की नजरबदी का पूर देश म कडा विरोध किया गया। तिलक पर तरह-तरह क प्रतिबध लगाय गय पर य दोना नेता और भी लोकप्रिय होत चले गय। प्रथम विश्व-युद्ध म ब्रिटन की मदद करने का बदल कुछ हासिल होन की उम्मीद लगाय बठ लोगा को भी निराशा ही हाथ लगी। ब्रिटेन न सारी माग एक कान से सुनी और निर्विकार भाव स दूसर कान से निकाल दी। आदोलन क बदल जो मिला वह था—माटग्यू चम्सफार्ड सुधार यानी अत्यत सीमित मात्रा म भारतीया का सत्ता का हस्तातरण।

सन् 1919 म दूसरा आदालन फूट पडा। मुसलमान तुर्की क खलीफा स युरोपियना की बदसलकी स दु खी थे और हिदू डोमीनियन राज्यो (जैसे दक्षिण अफ्रीका) म भारतीया क प्रति अग्रजी रवय म बहद नाराज थ। असहयाग और खिलाफत आदालन क दौर न माहनदास करमचद गाधी क व्यक्तित्व का राष्ट्रीय मच पर उभारा। गाधी जी 25 वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका म रहकर सन् 1915 म भारत आय थ। व पहल समझत थे कि ब्रिटिश साम्राज्य कुल मिलाकर एक भलाई करन वाली ताकत ह। व खुद का गर्व से राजभक्त कहने और जोश क साथ गाड सव द किंग गाते। तर रौलट समिति की सिफारिशा क दमनकारी सुझावा न उनका दिमाग बदल दिया। वे साम्राज्य के विरोधी बन गये। उन्हान इसे शैतानियत का प्रतीक' करार दिया। सविनय अवज्ञा आदालन यानी सत्याग्रह होने लगा। सरकार न इसका कसकर दमन किया। दग भडकाय गय पर राष्ट्रीय आदोलन की धार इस सान पर चढ़कर और तेज हो गयी।

तत्कालीन अखबारो मे छपी क्रांतिकारी गतिविधियो से जुडी खबरे

जलियावाला बाग यहा चली थी गोलिया

रालट एक्ट क खिलाफ 13 अप्रेल को पजाब क जलियावाला बाग म सभा करन के लिए 15 से 25 हजार तक लोग जमा हुए। बिग्रेडियर जनरल डायर न बिना चतावनी दिय उन पर अधाधुध गालिया चलवायी। सरकार ने कहा 379 मरे पर गैरसरकारी आकड हजारो तक पहुच गये थे। इसके अलावा और भी कई जगह गोलिया चलायी गयी। दमन हुआ। पर जलियावाले बाग म बहे खून को सारे देश ने अपने दामन पर टपकता हुआ महसूस किया। रवीद्रनाथ टैगार ने सरकारी खिताब त्याग दिया। गाधी जी न हिंसा की घटनाओ क कारण सविनय अवज्ञा आदोलन स्थगित करन की घोषणा कर दी। चौरी-चौरा की घटना न उन्ह इस निष्कर्ष पर पहुचाया था। चौरी-चौरा (गारखपुर) म उग्र भीड ने एक थाने मे आग लगा दी थी जिससे वहा तैनात सिपाही इत्यादि जलकर मर गये थे। करल म हुए मापला विद्रोह के कारण उत्तर भारत म साम्प्रदायिक घटनाए भी भडक उठी थी। सरकार ने आदोलन म आयी रुकावट का फायदा उठाकर गाधी जी का गिरफ्तार कर लिया और छ साल की सजा दी।

माटेग्यू-चेम्सफोड सुधारा के तहत बनी विधान-सभाओ म काम करन क लिए। जनवरी, 1923 का स्वराज पार्टी बनी थी। काग्रेस ने इन विधानसभाओ का बॉयकाट कर दिया था। इसलिए स्वराज पार्टी न चुनाव लडा और भारी सफलता प्राप्त की। स्वराज पार्टी में मोतीलाल नेहरू और चितरजन दास की बडी भूमिका थी। ये लोग विधानसभाओ म ब्रिटिश हुकूमत से सघर्ष कर रहे थे। पर दास का निधन होन से महाराष्ट्र के कुछ सदस्यो द्वारा अनुशासन तोडने पर स्वराज पार्टी म फूट पड गयी।

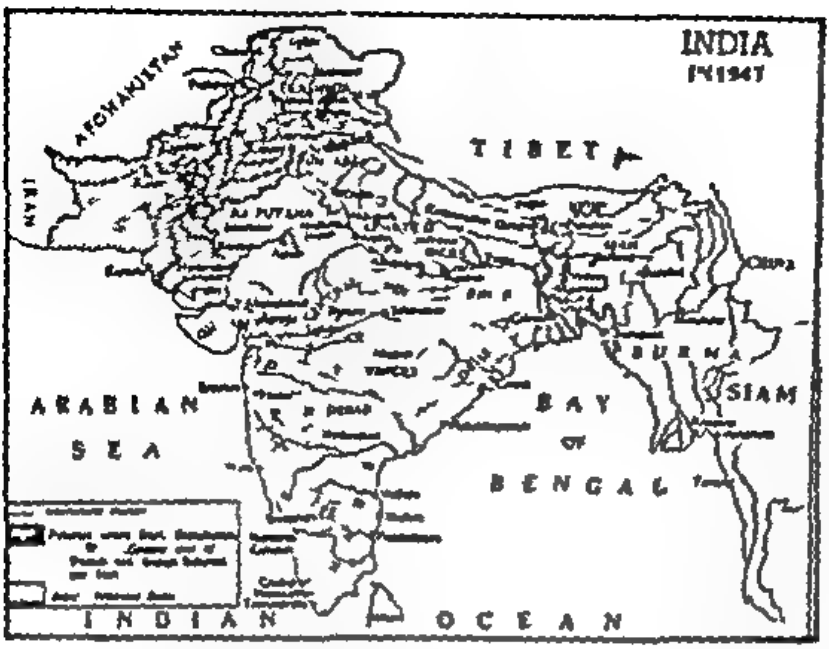

सन् 1947 का भारत भाई से भाई जुदा

सन 1924 तक आत आत काग्रस क अदर विभिन्न विचारा का अभिव्यक्ति मिलन लगी थी। इनम एक कम्यूनिस्ट गुट भी था जिसकी अगआइ श्रीमान अमत डाग मजफ्फर अहमद शौकत उस्मानी आर नलिन गप्ता क हाथ म थी। असहयाग आदालन की वापसी आर स्वराज पार्टी की विधान सभाआ म असफलता न पजाब आर बगाल म आतकवादी यवका का यह तक प्रदान किया कि गाधी इत्यादि क तरीकों स कुछ हासिल नही हान वाला। बगाल आर पजाब म आतकवादी तज पर क्रातिकारी आदालन फनफनाकर खडा हा गया। बम फक गय काकारी टन डकैती हुइ लाहार क डी एस पी साडस का गाली म उडा दिया गया आर विधान सभा म बम फेका गया। य कारनाम

भारत की स्वतत्रता का सपना सुनते—जवाहर गाधी

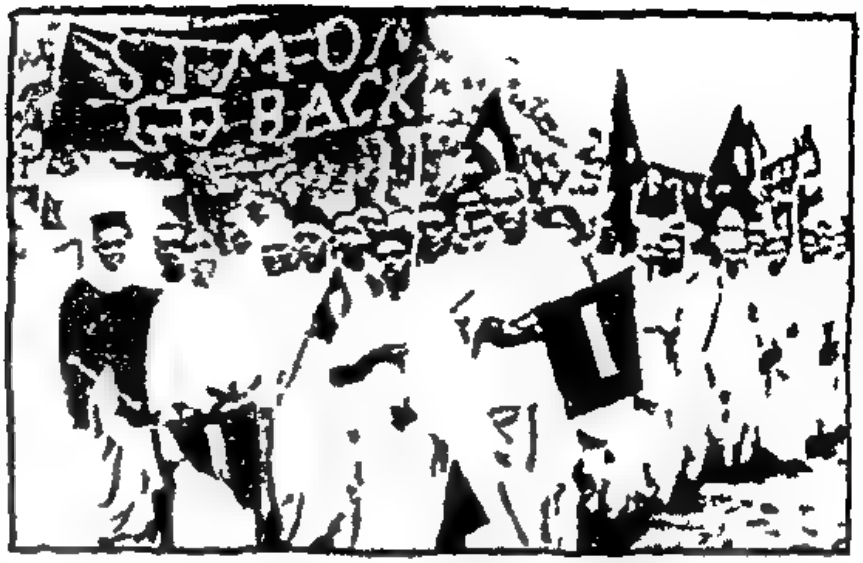

'साइमन वापस जाओ' के नारे गूजते रहे और लालाजी के सीने पर लाठिया बरसती रहीं।

'हिदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सघ' के क्रांतिकारियो ने किये। भगत सिंह चद्रशेखर आजाद बटकेश्वर दत्त सुखदेव व राजगुरु के नाम बच्चे-बच्चे की जुबान पर चढ गये। चापेकर बधुओ खुदीराम बोस व मदनलाल धींगरा के बाद ये नौजवान आग के शोले बनकर हर भारतवासी की आत्मा मे दहकने लगे। डांगे वगैरह पर राजद्रोह का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया जो मेरठ षड्यत्र केस के नाम से जाना गया। साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय ने अपनी कुर्बानी दी।

सन् 1930 के लाहौर अधिवेशन मे जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे कांग्रेस ने पूर्ण स्वतत्रता का ध्येय घोषित कर दिया। रावी के तट पर आजाद भारत का झडा लहराया गया। यह डोमीनियन की हैसियत की माग से बहुत आगे का कदम था। 26 जनवरी को स्वतत्रता दिवस घोषित हुआ। देश के हजारो गावो और शहरो मे बडी बडी सभाए करके स्वतत्रता का सकल्प दोहराया गया। 12 मार्च 1930 को सुबह छ बजे साबरमती आश्रम के 78 लोगो के साथ गाधी जी ने नमक कानून तोडने के लिए ऐतिहासिक डाडी

लदन में हुई राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस मे गाधी जी

मार्च शुरू किया। 241 मील की यात्रा के बाद तीन अप्रैल की शाम को गांधी और उनके साथी डांडी पहुंचे। अगले दिन गांधी जी ने समुद्र के जल में स्नान किया और वापस आकर नमक का ढेला उठाया। नमक कानून टूट गया। सरकार ने नमक कानून तोड़ने वाला को सारे देश में कठोरता से दमन किया। जवाहरलाल नेहरू और खान अब्दुल गफ्फार खां गिरफ्तार कर लिये गये। पेशावर में गढ़वाल रायफल्स के नायक चंद्र सिंह गढ़वाली ने मुसलमानों की भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर दिया। सेना में राष्ट्रीय भावनाओं की यह पहली और अत्यंत प्रबल अभिव्यक्ति थी। अंग्रेजों ने 67 अखबार और 55 छापेखाने बंद कर दिये। एक लाख लोग जेलों में पहुंच गये। बंबई में कपड़े की बिक्री 16 मिलें बंद हो गयीं जिनके मालिक अंग्रेज थे। गांधी जी के जेल जाने के बावजूद आंदोलन नहीं थमा। नमक सत्याग्रह ने सारी दुनिया का ध्यान भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की तरफ खींचा लिया। अंग्रेजों ने ध्यान बंटाने के लिए लन्दन में गोलमेज सम्मेलन किया। गांधी इर्विन समझौते के तहत कांग्रेस के लोग भी गांधी के नेतृत्व में इसमें गोलमेज बैठक में शामिल हुए पर उनके हाथ कुछ नहीं लगा।

इसी बीच में एक ऐसी घटना हुई जिसने सारे देश की भावनाओं को बड़ी ठेस लगायी। यह घटना थी—सरदार भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु को फांसी। लोगों को उम्मीद थी कि गांधी जी इर्विन समझौते के जोर पर भगत सिंह को फांसी से बचा लेंगे लेकिन इस समझौते में हिंसक कार्रवाइयों के चल रहे मुकदमों को वापस लेने का प्रावधान नहीं था। तीनों क्रांतिकारियों ने बेमिसाल बहादुरी के साथ बलिदान दिया। सारे देश ने आंसू बहाये। तीनों के नाम आजादी के आंदोलन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे गये।

विश्व युद्ध में अंग्रेजों की ओर से हिंदुस्तानी लड़े पर हाथ क्या लगा?

सन् 1935 तक स्वतत्रता आदालन न सफलता की दिशा म कइ कदम उठाय। सन् 1937 म काग्रस न मात प्राता म शासन सभाला। उसकी सारी सुधार-याजनाए आर्थिक अभाव की दीवार स टकराकर चूर-चूर हा गयी। दरअसल आमदनी का ज्यादातर हिस्सा कन्द्र सरकार ल लती थी। द्वितीय विश्व-यद्ध की शुरुआत तक भारतीया का अग्रजा की हर चाल समय म आ गयी और उनका माह पूरी तरह भग हा गया। प्रथम विश्व-युद्ध की तरह अब काई भी अग्रजा की मदद करन का तयार न था। सन् 1942 तक आत-आत धुरी राष्ट जीत पर जीत हासिल करन लग थ। लग रहा था कि जमन जापानी और इतालवी सानक ब्रिटन का उधड कर रख दग। अगस्त म काग्रस न करा या मरा का नारा दकर क्राति का बिगुल बजा दिया। 9 अगस्त का गाधी जी का गिरफ्तार कर लिया गया। सरकार न आदालनकारिया का दमन किया। इसम जनता गुस्स म आ गयी। डाकघर तारघर टलीफान, रल आदि उसक कोप क मुख्य निशान बन। पुलिस और अदालता क प्रति भी लागा म काफी नफरत थी। पूर्वी उत्तर प्रदश बिहार बगाल मध्य प्रात इत्यादि म बाकायदा बगावत हा गयी। जयप्रकाश नारायण न हजारी बाग जल स भाग कर भूमिगत हाकर आदालन चलाया और एक यादा की ख्याति अर्जित कर ली।

बगाल की राजनीति की दन सुभाष चद्र बास अपने रडीकल विचारा क कारण सन 1939 म गाधी की अनिच्छा क बावजूद काग्रस क नता चुन गय थे। उनका ख्याल था कि अग्रजा का छ महीन क भीतर आजादी द दन का अल्टीमटम द दना चाहिए। काग्रस न यह प्रस्ताव नही माना। सभाष चद्र बास गाधी क अहिसा वाल विचारा और नहरू क धुरी राष्ट विराधी विचारा म सहमत नही थे। गाधी जी स तीव्र मतभदा क चलत उन्हान काग्रस छोड दी और फारवड ब्लॉक बनाया। सुभाष चद्र बास का सन् 1940 म बिना मुकदमा चलाय ही जल म ठूस दिया गया। अग्रज उन्ह काफी खतरनाक समझत थ। 17 जनवरी, 1941 का व अपन घर की कडी नजरबदी स भाग निकल ओर भस बदलकर यात्रा करत हुए काबुल, मास्का और वहा स बर्लिन पहुच गये। उनकी हिटलर स बातचीत हइ। पर हिटलर ने स्वतत्र भारत की उनकी योजना का नही माना। बास न जापान जान की याजना बनायी। एशिया मे जापान की जीता और युरापीय ताकतो की पराजय न रास बिहारी बास

सुभाषचद्र बोस तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आजादी दूगा।

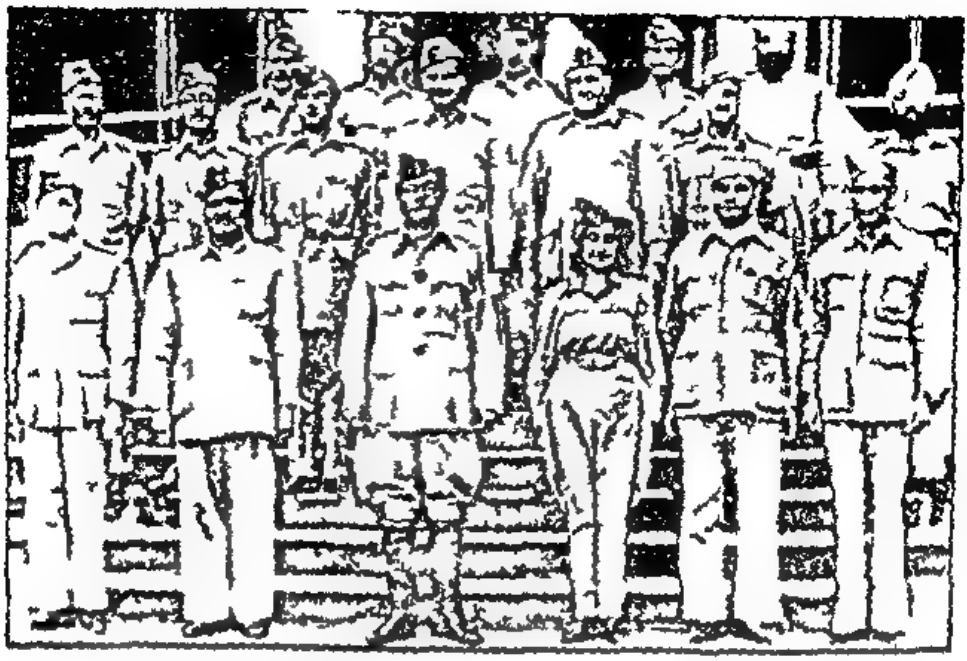

आजाद हिंद फौज के पदाधिकारियों के साथ सुभाष

का काफी उत्तेजित किया। उन्होंने 28-30 मार्च 1942 को टोक्यो में सम्मेलन किया बैंकाक में दूसरी सभा हुई जिसमें 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' बनी। उसका नेतृत्व सुभाष चं जापान को मिला। मलाया में जापानी सेना के सामने हथियार डालने वाले ब्रिटिश सेना के भारतीय जवानों और अफसरों की मदद से आजाद हिंद फौज बनी। उसमें 40 000 युद्ध बंदी शामिल होने के लिए तैयार हो गये। टोक्यो में सुभाष जापानी प्रधानमंत्री तोजो से मिले। आजाद हिंद फौज को शुरू में थोड़ी सफलता भी मिली पर उसकी ताकत पूरी तरह जापान की मोहताज थी। जापानियों के पतन के साथ ही उसका मनोबल भी टूट गया। 18 अगस्त को फारमोसा में उड़ान सुभाष चंद्र बोस का विमान दुर्घटना में रहस्यमय

लॉर्ड माउंटबेटन ने 'मुस्लिम लीग' को कर कांग्रेस को विभाजन के लिए तैयार होने के लिए विवश कर दिया।

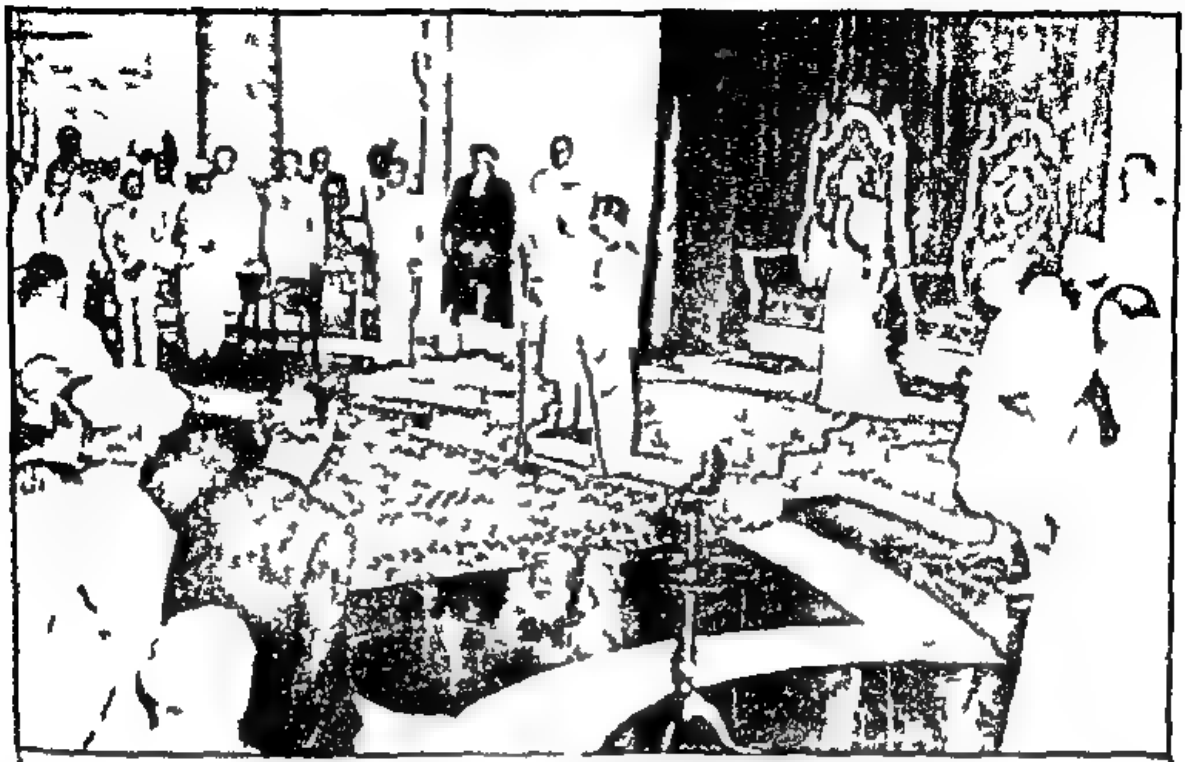

आजादी का यह ऐतिहासिक क्षण आजाद हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री के रूप में पंडित जवाहरलाल नेहरू को लॉर्ड माउंटबेटन ने शपथ दिलायी।

राजे रजवाड़ों के राजाओं व राजकुमारों से विदा लेते लॉर्ड माउंटबेटन और उनकी पत्नी

जिन्ना और लियाकत अली खा

परिस्थितिया म निधन हो गया। बाद न आजाद भारत की एक काम चलाऊ सरकार भी बनायी थी।

द्वितीय विश्व-युद्ध म अग्रज और उनक मित्र राष्ट्र जीत जरूर पर ब्रिटिश साम्राज्य का सूय अस्त हो गया। उसकी सैनिक और आद्यागिक क्षमता का भारी नुकसान उठाना पडा। दश भर म उमड रही राष्ट्रीयता की भावना का दखत हुए उसन भारत का आजादी दन म ही अपनी भलाई समझी। अग्रज सन् 1916 स ही बडी चालाकी स परिस्थितिया का जटिल बनान क लिए हिंदू-मुसलमाना को आपस म लडान की नीति अपनाते रह थ। काग्रस न पहल इसकी तरफ ज्यादा ध्यान नही दिया। सर सयद अहमद खा और मुहम्मद अली जिन्ना जैसे लागा को महत्त्व नही दिया गया। अग्रज भी कूटनीति क आखिर मज हुए खिलाडी थ। उन्हान मुस्लिम काड खलकर भारत विभाजन की परिस्थितिया तैयार कर दी। लॉर्ड माउटबटन न वायसराय क रूप म वह कूटनीति खली कि काग्रस को अतत विभाजन मानना पडा। पाकिस्तान बन गया। लेकिन भारत का राजनैतिक आजादी भी मिल गयी। 15 अगस्त 1947 को लाल किल पर प्रथम प्रधानमत्री क रूप म जवाहरलाल नहरू न तिरगा झडा लहराया।

■■

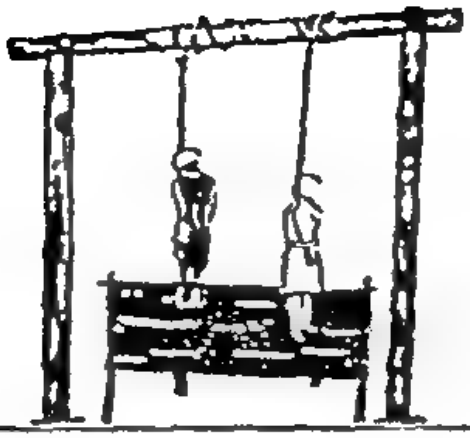

चीन की जनवादी क्रांति

(1919 1949)

द्वितीय विश्व-युद्ध के फलस्वरूप गहराये अतर्राष्ट्रीय सकट ने दुनिया मे परिवर्तन की तेज लहर पैदा कर दी थी। रूसी क्राति की सफलता ने एशिया के कई देशो मे कम्युनिस्टो को क्राति के लिए उत्प्रेरित किया। चीन मे माओ चतुड चू त और चाओ अनलाए और ल्यू शाआछी ने मिलकर क्राति की एक नवीन पद्धति ईजाद की, जिसे दीर्घकालीन प्रतिरोध युद्ध के जरिए 'इलाकावार सत्ता दखल' करते हुए नवजनवादी क्राति करने के सिद्धात के तौर पर जाना जाता है। माओ की स्थापनाओ को शुरू मे मार्क्सवाद के परपरागत विद्वानो ने सैद्धातिक रूप म ठुकरा दिया पर अनुभव और व्यवहार जगत मे ये एकदम सही साबित हुई।

माओ चतुड और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क नतत्व म हुई चीन की क्राति का नवजनवादी क्राति कहत हैं क्याकि यह क्राति हुई ता पूजीवादी क्राति क ढाचे के तहत ही थी पर इसका नतत्व चीन क किसाना और मजदूरा क हाथ म था। पुरानी जनवादी क्राति स अलगान क लिए इस नवजनवादी क्राति कहा जाता ह। कम्युनिस्टा क हाथ स सपन्न हान केबावजूद इस क्राति का अनुभव सावियत समाजवादी अक्तूबर क्राति स अलग था। सावियत क्राति औद्यागिक शहरी इलाका म मजदूर वग क सशस्त्र विद्राह के जरिए हई थी पर चीनी क्राति पूर तीस साल तक चलाय गय किसाना क दीर्घकालीन प्रतिराध युद्ध से विजयी हाकर निकली थी। इसम इलाकावार सत्ता दखल की नीति अपनायी गयी थी। इस क्राति आर इसक नेता माआ चतुड ने सारी दुनिया, खासकर एशिया के कम्युनिस्टा का बहद प्रभावित किया। कुछ कम्युनिस्ट पार्टिया न तो अपन नाम के साथ एक नयी अभिव्यक्ति ही जोडनी शुरू कर दी जिस 'मार्क्सवाद-लनिनवाद आर माआ विचारधारा' कहत हैं।

4 मई 1919 का परिस शाति सम्मलन क अन्यायपूर्ण निणया क विरुद्ध पइचिड क

डॉ सुन यातसेन

तीन हजार स ज्यादा विद्यार्थिया न थ्यनआनमन चौक म इकट्ठ हाकर एक विशाल जलस निकाला। प्रदशनकारिया न हमारी प्रभसत्ता का सम्मान करा श क गद्दारा का सजा दा और वसाइ (परिस) सधि पर हस्ताक्षर न करा आदि नार लगात हुए माग पश की कि जापान की तरफदारी करन वाला का सजा दी जाय। इस प्रकार साम्राज्यवाद और युद्ध-चाधरिया की तानाशाही क खिलाफ चीनी जनता का दशभक्तिपण आदालन दश क कान कान म फलन लगा।

शरू म इस सघर्ष की मख्य शक्ति विद्यार्थी थ। उनक बाद इस सघर्ष न विकसित हाकर सवहारा वग निम्न पूजीपति वग तथा राष्ट्रीय पूजीपति वग क एक एस दशभक्तिपूण आदालन का रूप ल लिया जिसम मख्य भूमिका सवहारा वग द्वारा अदा की गयी। 5 जन का शाडहाए क मजदूरा न आम हडताल कर दी जिसम शामिल हान वाल मजदूरा की सख्या 10 जून तक लगभग 70 000 तक पहच गयी। समूच दश की जनता क दशभक्तिपूण आदालन क सामन उत्तरी युद्ध-सरदारा की सरकार का झुकना पडा। उसन गिरफ्तार विद्यार्थियो का रिहा कर दिया छाओ रूलिन लचुडश्वी व चाउ चुड श्याउ नामक तीना गद्दारा का उनक पदा स हटा दिया गया और वर्साई शाति-सधि पर हस्ताक्षर करन स इकार कर दिया। इस प्रकार दशभक्तिपण 4 मइ आदालन न अपनी पहली विजय प्राप्त की।

4 मइ आदालन न नव सस्कति आदालन का भी बढावा दिया और उस एक नयी व ऊची मजिल पर पहुच दिया। 4 मइ आदालन क बाद समूच दश म प्रगतिशील विचारा की पत्रिकाओ की बाढ सी आ गयी और मार्क्सवाद का प्रचार प्रसार नव सस्कति आदालन की मुख्यधारा बन गया। मइ 1920 म छन तूश्यू तथा कछ अन्य लागा न शाडहाए म चीन का पहला कम्युनिस्ट गुप कायम किया। कुछ समय बाद ली ताचाओ न

पइचिड म माआ चतड न हूनान प्रात म आर तुड पिऊ न ऊहान म कम्युनिस्ट ग्रुप कायम किय। उनक अलावा चीनान क्वाडचआ जापान आर परिस म भी चीनी कम्युनिस्ट ग्रुप स्थापित किय गये।

जुलाई 1921 म चीनी कम्युनिस्ट पाटी की पहली राष्टीय काग्रस का आयाजन शाडहाए म किया गया। माआ चतुड तड पीउ छन थानछ्यू, हशहड वाड चिनमइ तड अनमिड लीता ली हानच्यन पाआ वहइसड छन कडपा चआ फाहाए चाड क्वाथाआ आ ल्यू रनचिड महित 13 प्रतिनिधिया न दश क लगभग 50 कम्युनिस्टा का प्रतिनिधित्व करत हुए काग्रस म भाग लिया। इस काग्रस म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का पहला सविधान स्वीकार किया गया आर छन तश्यू का पार्टी की कन्द्रीय कमटी का महासचिव चना गया। इस प्रकार चीनी कम्युनिस्ट पाटी की बाकायदा स्थापना कर दी गयी।

जुलाई 1922 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने शाडहाए म अपनी दसरी राष्टीय काग्रस की। इस काग्रस का मख्य काम चीनी क्राति क लिए पार्टी कायक्रम चनाना था। काग्रस न उस समय की परिस्थिति का ध्यान म रखत हए पार्टी का जो बनियादी कायक्रम तय किया वह कुछ इस प्रकार था —घरलू लडाइ का समाप्त करना युद्ध कायक्रम का तख्ता उलट दना आर दश म शाति कायम करना चीनी राष्ट का पूर्ण व वास्तविक स्वतत्रता क लिए अतराष्टीय साम्राज्यवादिया के उत्पीडन क जए का उतार फकना आर चीन का एकीकरण करक दश म एक असली जनवादी लाक्तत्र स्थापित करना। इस तरह चीन क आधुनिक इतिहास म पहली बार चीनी कम्युनिस्ट पाटी द्वारा एक जनवादी क्रातिकारी कायक्रम जा पूर्ण रूप स साम्राज्यवाद व सामतवाद का विराध करता था पश किया गया।

जून 1923 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की तीसरी राष्टीय काग्रस क्वाडचआ म आयाजित की गयी। काग्रस म यह फसला किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टी क्वोमिनताड (डॉ सन यातसन द्वारा स्थापित राष्टीय पार्टी) स सहयाग करगी आर कम्युनिस्ट पार्टी क सदस्य व्यक्तिगत हसियत स क्वोमिनताड म शामिल हा सकग। साथ ही काग्रस न यह भी तय किया कि कम्युनिस्ट क्वोमिनताड सहयाग क चलत चीनी कम्युनिस्ट पार्टी राजनीतिक विचारधारात्मक आर सगठनात्मक नतृत्व म मजदूर-आदालन आर किसान-आदालन तजी से विकसित हान लग।

इसी दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क नतत्व म किसा -आदालन का भी बडी तजी स विकास हुआ। सबस तीव्र प्रगति क्वाडतुड प्रात म दखन का मिली जहा किसान-आदालन का नतृत्व फड पाए नामक नता क हाथ म था। जनवरी 1926 तक क्वाडतुड प्रात म किसान सघ की कुल सदस्य-सख्या छ लाख बीस हजार आर किसान-आत्मरक्षा दस्तो की सदस्य सख्या तीस हजार तक पहुच चुकी थी। फरवरी, 1925 म माआ चतुड अपन ज म-स्थान हूनान प्रात क शाआशान नामक गाव म वापस आय। वहा उन्हान किसान-आदालन का सफलतापूवक नतृत्व किया आर बीस स अधिक कस्बा म किसान सघा की स्थापना की। जून 1926 तक चीन क 12 प्राता म किसान-सघा की स्थापना की जा चुकी थी, जिसम कस्बा-स्तर वाल किसान-सघा की सख्या 5 300 स अधिक थी आर कुल सदस्य-सख्या लगभग दस लाख थी।

डॉ सुन यातसेन क दहात क बाद क्वोमिनताड की फूट-परस्ती धीर-धीर साफ हान लगी। उत्तरी अभियान की शुरुआत क हान पर दक्षिण पथी गुट क नता च्याड काइशक न

1 अक्तूबर 1949 को अध्यक्ष माओ त्सेतुङ ने चीन लोक गणराज्य की स्थापना की घोषणा की।

सिर्फ क्वोमिनताङ की केंद्रीय कमेटी की स्थायी समिति का अध्यक्ष और उसके संगठन व सैनिक मामलों का विभागों का प्रधान बन बैठा बल्कि राष्ट्रीय सरकार की फौजी कमेटी का अध्यक्ष और राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना का कमांडर-इन-चीफ भी बन गया।

1 जुलाई 1926 को राष्ट्रीय सरकार ने उत्तरी अभियान का घोषणा पत्र जारी किया। इस तरह उत्तरी युद्ध-सरदारों के विरुद्ध एक दंडात्मक अभियान की शुरुआत हुई। इस अभियान का मुख्य निशाना इन तीन युद्ध सरदारों को बनाया गया —वू फेइफू, जिसने हूनान हूपेइ और हनान पर कब्जा कर रखा था सुन छुवानफांग, जिसकी शक्ति च्यांङ सू, आनहुवेइ चेच्यांङ फूच्यन और च्यांङशी प्रांतों में केंद्रित थी और चांग च्वोलिन, जिसने उत्तर पूर्वी चीन के सभी प्रांतों और पईचिङ व थ्यनचिन पर नियंत्रण कर रखा था।

मई 1926 में उत्तरी अभियान की अग्रिम यूनिट की हैसियत से 'स्वाधीन रजीमेंट ने जिसके कमांडर ये थिङ नामक एक मशहूर कम्युनिस्ट थे और जिसकी मुख्य शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और नौजवान संघ के सदस्यों की थी हूनान के मोर्चे पर चढ़ाई कर दी। 9 जुलाई को राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना के लगभग एक लाख सैनिकों ने अलग अलग रास्तों से च्यांङचआ में कूच कर दिया।

उत्तरी अभियान की विजय ने किसान-आंदोलन को तेजी से आगे बढ़ाया। हूनान प्रांत का संघर्ष जिसका परिचालन व नेतृत्व माओ चेतुङ कर रहे थे, सारे देश के किसान आंदोलन की मुख्य-धारा बन गया। समूचे देश में, खासतौर से हूपेइ, च्यांङशी, क्वांङतुङ, फूच्यन चेच्यांङ और हेनान आदि प्रांतों में किसान-आंदोलन तूफान की तरह विकसित होने लगा। मार्च 1927 तक चीन में किसान-संघों की सदस्य संख्या एक करोड़ से भी अधिक हो चुकी थी।

इसी बीच मजदूरों के क्रांतिकारी संघर्ष ने भी जोर पकड़ा। जनवरी 1927 में ऊहान के मजदूरों ने ल्यू शाओछी के नेतृत्व में ब्रिटेन की बस्ती को वापस ले लिया। उत्तरी अभियान सेना के विजयपूर्ण कदमों और अपनी गतिविधियों में तालमेल कायम करने के लिए शांघाए के मजदूरों ने तीन बार सशस्त्र विद्रोह किए। पहली बार अक्तूबर, 1926 और दूसरी बार फरवरी, 1927 के सशस्त्र विद्रोह असफल रहे किंतु 21 मार्च 1927 को चाओ अनलाए और अन्य व्यक्तियों के नेतृत्व में किया गया तीसरा विद्रोह सफल रहा, जिसमें शांघाए के मजदूरों ने 30 घंटों से अधिक लड़ाई के बाद शहर को मुक्त करा लिया।

उत्तरी अभियान की सफलता और मजदूर किसान आंदोलन के चौतरफा विकास ने चीन में साम्राज्यवादियों का शासन हिला दिया। 24 मार्च, 1927 को उत्तरी अभियान-सेना द्वारा नानचिङ पर कब्जा कर लिए जाने के बाद उसी रात ब्रिटेन अमरीका फ्रांस जापान तथा इटली के युद्धपोतों ने नानचिङ पर तोपों से गोले बरसाने शुरू कर दिए। इस घटना में दो हजार से ज्यादा चीनी हताहत हुए। यह हत्याकांड इस बात का इशारा था कि साम्राज्यवादी शक्तियां चीनी पूंजीपति वर्ग को क्रांति से गद्दारी के लिए मजबूर करने का षड्यंत्र रच रही थीं। उन्होंने च्यांङ काईशेक को अपना नया एजेंट चुन लिया था और क्रांतिकारी खेमे के अंदर से तहस-नहस कर क्रांति को समूल नष्ट करने की कोशिश शुरू कर दी थी। उस समय च्यांङ काईशेक स्वयं भी साम्राज्यवादियों जमींदारों और दलाल-पूंजीपतियों के साथ अपना गठजोड़ और पक्का करने को अधीर हो रहा था। 12 अप्रैल 1927 को उसने शांघाए में प्रतिक्रांतिकारी विद्रोह कर दिया और बहुत बड़े पैमाने पर मजदूरों व कम्युनिस्टों की हत्याएं करवाईं। च्यांङसू, चेच्यांङ, फूच्यन और क्वांङतुङ आदि प्रांतों में भी ऐसे ही हत्याकांड हुए। 18 अप्रैल को च्यांङ काईशेक ने नानचिङ में अपनी तथाकथित राष्ट्रीय सरकार कायम की जो बड़े जमींदारों व बड़े पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी।

1 अगस्त 1927 को उत्तरी अभियान सेना के तीस हजार सैनिकों ने, जिनका नेतृत्व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी कर रही थी या जिन पर कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव था च्यांङशी प्रांत के नानछांङ शहर में एक सशस्त्र विद्रोह किया। यह विद्रोह चाओ अनलाए (पार्टी की सैन्य कमेटी के सचिव) चू तेह हो लुङ, ये थिङ और ल्यू पोछांङ आदि के नेतृत्व में किया गया था। पांच घंटों की घमासान लड़ाई के बाद विद्रोही सैनिकों ने नानछांङ में क्वोमिनतांङ गैरिजन सेना के दस हजार से अधिक सैनिकों को पूरी तरह नेस्तनाबूद कर दिया। कुछ दिनों के बाद विद्रोही सेना ने क्वांङचओ पर अधिकार करने और क्वांङतुङ प्रांत क्रांतिकारी आधार क्षेत्र की पुनर्स्थापना करने के मकसद से च्यांङशी के दक्षिण की ओर कूच कर दिया। लेकिन अक्तूबर के शुरू में वह पूर्वी क्वांङतुङ में दुश्मन की बेहतर सेना के घेरे में फंस गयी और उसकी शक्ति घट गयी। बचे-खुचे सैनिकों का एक दस्ता चू

त और छन ई क नतृत्व म सघष जारी रखन क लिए हूनान प्रात की आर चला गया। नानछाड विद्राह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क स्वतत्र नतृत्व की शुरआत था--क्रातिकारी सना द्वारा क्वामिनताड प्रतिक्रियावादियो पर किया गया पहला सशस्त्र प्रहार था। इसीलिए उसक बाद म । अगस्त का दिन चीनी जनता की क्रातिकारी सना क स्थापना दिवस क रूप म मनाया जाता है।

कन्द्रीय कमटी न हूनान च्याङशी सीमा पर शरद फसल विद्राह का नतत्व करन क लिए माओ चतुड को वहा भजा। 9 अगस्त को विद्राह छडा गया। मजदूरा-किसाना की क्रातिकारी सना च्याङशा पर कब्जा करन क लिए तीन तरफ स आग बढ़न लगी। लकिन दुश्मन की शक्ति अपन म ज्यादा होन की वजह स क्रातिकारी सना को भारी नुकसान उठाना पडा। तत्कालीन परिस्थिति का विश्लषण करत हए माओ चतड इस निष्कष पर पहुच कि क्रातिकारी सना को मख्य शहरा पर जहा दुश्मन शक्तिशाली है हमला नहीं करना चाहिए। इसक बजाय उस उन ग्रामीण इलाको म जहा दश्मन कमजोर ह अपनी शक्ति व प्रयास कन्द्रित करन चाहिए। इसलिए बची हुइ सना उनक नतत्व म हूनान और च्याङशी प्रातो की सीमा पर स्थित चिङकाङशान पवतश्रखला की ओर आग बढ़ी।

नानछाड विद्राह शरद फसल विद्राह और क्वाङचओ विद्राह न क्वोमिनताड की कत्लआम की नीति को भारी धक्का पहुचाया। इसक बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न एक नय दौर म प्रवश किया, जिसम मजदूर और किसाना की लाल सना कायम की जा सकी।

अक्तूबर 1927 म लाल सना माओ चतुड क नतत्व म चिङकाङशान क पहाडी इलाक म आ पहुची। वहा उन्होन जन समुदाय को सगठित करक छापामार लडाइ चलायी, भमि-क्राति की स्थानीय सत्ता-तत्र स्थापित किय पार्टी-सगठन कायम किय और मजदूरा किसाना की राजनीतिक सत्ता की स्थापना की। चिङकाङशान पहाडी इलाका चीन का पहला दहाती क्रातिकारी आधार क्षेत्र बन गया। अप्रल 1928 म नानछाड विद्राह म भाग लन वाली किसान-सना चू त व छन इ क नतत्व म इसी इलाक म पहच गयी और माओ चतड क नतत्व वाली सना स मिल गयी। इस मिलन क बाद चीनी मजदूरा और किसाना की लाल सना की चौथी कोर सगठित की गयी जिसम दस हजार स भी अधिक सनिक थ। इस कोर क कमाडर च त थ माओ चतुड इसक पार्टी-प्रतिनिधि और छन इ राजनीतिक विभाग क निदशक थ। चिङकाङशान पहाडी इलाक की रक्षा की लडाई म चू त और माओ चतुड न जो सुप्रसिद्ध छापामार रणनीति अपनायी वह इस प्रकार थी -- 'जब दुश्मन आग बढ़ता है, तो हम पीछ हट जात हैं जब दुश्मन पडाव डालता ह तो हम उस हरान-परशान करत हैं। जब दुश्मन थक जाता है तो हम उस पर धावा बोल दत हैं जब दुश्मन पीछ हटता ह तो हम उसका पीछा करत हैं।" चिङकाङशान क सघष क दौरान सना पर पार्टी क एकछत्र नतत्व का सिद्धात भी निर्धारित किया गया। लाल सना का तीन काम सौप गय लडाई क्रातिकारी कार्य क लिए धन सग्रह (बाद म इस बदलकर उत्पादन कर दिया गया) और जन काय। इसी अवधि म जन-सना क लिए अनशासन क तीन मुख्य नियम और ध्यान दन योग्य आठ बातें भी निर्धारित की गयी।

सन् 1927 क शरद स लकर 1930 तक समूच दश म लाल सना और क्रातिकारी आधार क्षेत्रा का कदम-ब-कदम विकास व प्रसार हुआ। जनवरी 1929 म लाल सना की चौथी कोर न माओ चतुड और चू त क नतत्व म दक्षिण च्याङशी म प्रवेश किया, जहा

उन्हान क्रमश दक्षिण च्याडशी व पश्चिमी फूच्यन नामक दा क्रांतिकारी आधार-क्षत्र कायम किय। सन् 1930 म इन दा आधार क्षत्रा का मिलाकर केन्द्रीय आधार-क्षत्र बना दिया गया, जिसका सदर मुकाम च्याडशी प्रात क रूईचिन म था। सन् 1930 क पूवार्द्ध तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा 300 म ज्यादा काउंटिया मे सशस्त्र विद्राह छड गय आर 15 क्रांतिकारी आधार-क्षत्र कायम किय गय। उस समय तक मार चीन म लाल सना की सख्या माठ हजार स अधिक हा गयी थी।

जब च्याड काइशक अपनी पूरी शक्ति स गहयुद्ध चलान म लगा हआ था जापानी साम्राज्यवादिया न मौक का फायदा उठात हुए 18 सितबर 1931 का फाज भजकर शनयाड पर कब्जा कर लिया। यह घटना 18 सितबर की घटना के नाम स प्रसिद्ध ह। च्याड काइशक न उत्तर पर्वी चीन म स्थित चीनी फौजा का जापानिया का 'कतइ मुकाबला न करन का आदश दिया। नतीजा यह हुआ कि तीन महीन स कुछ अधिक समय म ही उत्तर-पूर्वी चीन क तीना प्रात जिनका क्षत्रफल दस लाख वर्ग-किलामीटर स भी अधिक ह, जापानिया क हाथ म चल गय।

जनवरी 1931 म वाड मिड न मूल नाम छन शाआत्वी (1904-74) कम्युनिस्ट पार्टी की छठी केन्द्रीय कमटी क चाथ पूण अधिवशन म पार्टी का नतत्व हथिया लिया। तब स लकर सन् 1934 तक वह पार्टी म एक वामपथी अवसरवादी कार्यादशा अपनाता रहा जिसकी विशेषता कट्टरता थी आर जिसक कारण क्रांति का भारी नुकसान उठाना पडा। वाड मिड बड शहरा पर कब्जा करन की आवश्यकता पर बल दन क अपन गलत दृष्टिकाण पर अडा रहा और देहाता स शहरा का घरन व सशस्त्र शक्ति द्वारा राजनीतिक सत्ता छीनन की रणनीति का विराध करता रहा। वाड मिड आर उसक समर्थक चाहत थ कि लाल सना बड शहरा पर फारन हमला कर द। उन्हान आदश दिया कि क्वामिनताउ नियंत्रित बड शहरा म व्यापक रूप म हडताल आर प्रदशन आयाजित किय जाय। नतीजा यह हुआ कि क्वामिनताड अधिकत इलाका म कम्युनिस्ट पार्टी क लगभग सभी सगठन नष्ट हा गये। वाड मिड आर उसक अनुयायिया न उन कामरडा क प्रति, जा वाड मिड की कार्यादशा स सहमत थ निमम मयप आर निष्ठर प्रहार करन की नीति अपनायी। एक माक पर ता स्वय माआ चतड का भी लाल सना क नतत्वकारी पद स अलग कर दिया गया।

अक्तूबर, 1933 म च्याड काइशक न अपनी दस लाख फाज क साथ केन्द्रीय आधार-क्षत्र आर उसक पास हूनान-च्याडशी आधार क्षत्र व फूच्यन-चच्याड च्याडशी आधार क्षत्र क खिलाफ घरा डालन व विनाश करन की पाचवी मुहिम शुरू कर दी। वामपथी अवसरवादिया क नताआ न 'छापामारवाद' का विराध करन क नाम पर बहतर सन्य शक्ति का केन्द्रित करना शत्र का भुलावा दकर अपन प्रदश म दूर तक प्रवश करने दना आर चलायमान लडाइ चलाना आदि लचीली गतिशील काय नीतिया का छाड दिया आर लाल सना का मजबूर किया कि वह दुश्मन की बहतर सना स घमासान लडाइ लड। इस गलती का परिणाम यह हुआ कि लाल सना सभी जगह निष्क्रिय स्थिति म पड गयी। एक साल की भीषण लडाइ क बाद भी वह दुश्मन की घरा डालन व विनाश करन की मुहिम का पराजित नही कर सकी आर अत म मजबूर होकर उस केन्द्रीय आधार क्षत्र म अपना रणनीतिक स्थानातरण करना पडा। अक्तूबर 1934 म लाल सना की पहली मार्चा सना (केन्द्रीय लाल सना) क अस्सी हजार स अधिक सनिका न फूच्यन

प्रात क छार्डाथड व निडव्हा च्याडशी प्रात क रुईचिन व इवीतू स्थाना स रवाना हाकर अपना लबा अभियान (लाग मार्च) शरू किया। दुश्मन की चार नाकबदी पक्तिया का चीरन क बाद लाल सना न क्वाडतुड हूनान और क्वाङशी स गुजर क्वइचआ म प्रवश किया। इस लब अभियान क दारान वामपथी अवसरवादिया न शक्तिशाली दुश्मन क सामन पलायनवादी नीति अपनायी जिसक कारण लाल सना का कई बार खतरनाक परिस्थितिया का सामना करना पडा और बडी सख्या म उसक सैनिका क हताहत हान स अत म वह आधे स भी कम रह गयी।

खतर मे पडी लाल सना और क्राति का बचान क लिए जनवरी, 1935 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की कन्द्रीय कमटी के राजनीतिक ब्यूरा का एक विस्तत सम्मलन क्वइचओ प्रात के चनइ शहर म आयाजित किया गया जिसम वाड मिड की वामपथी अवसरवादी फौजी कार्य दिशा की आलाचना की गयी और माओ चतड द्वारा प्रतिपादित सही फौजी कार्य-दिशा का पनर्स्थापित किया गया। सम्मलन म पार्टी क नतृत्वकारी अगा का पुनर्गठित किया गया। माओ चतड चाओ अनलाए और वाङच्याश्याड का फाजी मामलो क नतत्वकारी दल का सदस्य चना गया और पार्टी पर माओ चतुड का नतत्व कायम किया गया। इसक बाद म चीनी क्राति विजय क पथ पर पुन आगे बढ़न लगी।

चनइ सम्मलन क बाद लाल सना न उत्तर पश्चिम सछवान प्रात म प्रबश किया और वह वहा की चौथी मार्चा सना स जा मिली जिसका नतत्व चाड क्वोथाआ क हाथ म था। पार्टी और लाल सना न माओ चतड के नतृत्व म चाड क्वोथाआ की उन अपराधपूण कायवाहिया का विरोध किया जा उसक द्वारा पार्टी और लाल सना म फूट डालन क लिए की जा रही थी। इसक बाद लाल सना न उत्तर की ओर बढना जारी रखा। भारी नुकसान व घार सघर्ष क पश्चात लाल सना अक्तूबर 1935 म उत्तरी शनशी आधार क्षत्र म पहच गयी और वहा त्तनात लाल सना क एक अन्य दस्त स जा मिली। इस प्रकार चीनी मजदूरा और किसाना की लाल सना का 12 500 किलामीटर लबा अभूतपूव अभियान खत्म हुआ। अक्तूबर 1936 म हा लड और रनपीशि की कमान म लाल सना की दूसरी मोचा सेना ओर चौथी माचा सना का एक अन्य भाग भी उत्तरी शनशी पहचकर क द्रीय लाल सना स जा मिला।

सन् 1935 म 9 दिसबर आदोलन ने जापान का विरोध करन और दश को बचाने के राष्टव्यापी सघर्ष म एक नया उभार पैदा कर दिया। इसका क्वोमिनताड फौज क दशभक्त सिपाहिया पर भी गहरा असर पडा। उत्तरी शेनशी में लाल सेना पर हमला करन के लिए च्याड काईशेक द्वारा भेजी गयी उत्तर-पूर्वी फौज (जिसके कमाडर चाड वल्याड थे) और उत्तर पश्चिमी फौज (जिसक कमाडर याड हूछड थे) न लाल सना क विरुद्ध गृह-युद्ध बन्द कर दिया। चाड और याड के रवैये मे इस परिवर्तन से च्याड काईशक क्रोधित व भयभीत हो उठा। उसने स्वय शीआन जाकर उन दानों को लाल सना पर हमला करन क लिए मजबूर किया। लेकिन 12 सितबर 1936 को चाड और याड न अपने सैनिक भेजकर च्याड काईशेक को गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन उन्होने सार दश के नाम एक खला तार भेजा जिसमे गृह-युद्ध बद करने और जापान का प्रतिराध करन क लिए कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयाग करने की माग की गयी। यह घटना शीआन घटना के नाम स प्रसिद्ध है। लेकिन क्वोमिनताड क जापान परस्त गुट ने जिसका अगवा हा इर्डाछन था इस घटना स लाभ उठाकर गृह युद्ध का विस्तार करन की कोशिश की

ताकि जापानी हमलावरा के लिए रास्ता साफ किया जा सक और च्याड काईशक क हाथ स सत्ता छीनी जा सके। इसलिए उसने सना भजकर शीआन के पूर्व म स्थित थुङक्वान पर धावा बाल दिया। राष्ट्रीय हित ओर जापानी-आक्रमण-विराधी सघर्ष की एक्ता क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न दृढ़तापूर्वक हा इर्डाछन की साजिश का विरोध किया और शातिपर्ण ढग स शीआन घटना का हल करन का सुझाव दिया। चाआ अनलाए क नतृत्व म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का एक प्रनिनिधिमडल मध्यस्थना करन क लिए शीआन पहुचा। च्याड काइशक का अपनी रिहाई स पहत्त मजबूर हाकर अनक शर्त माननी पडी, जिनम गह-युद्ध राक्न ओर जापान क प्रतिराध के लिए कम्युनिस्ट पार्टी स सहयाग करने की शर्तें भी शामिल थी। शीआन घटना का शातिपूर्ण समाधान दस साल स चल आ रह गह-युद्ध की समाप्ति ओर जापान विराधी राष्ट्रीय सयुक्त मार्चे की शुरुआत का प्रतीक था।

13 अगस्त 1937 को जापानी हमलावर सना न शाङहाए पर धावा बाल दिया और नानचिङ को जाखिम म डाल दिया। इस प्रकार च्याड काईशेक क शासन ओर चीन म आग्ल-अमरीकी साम्राज्यवादिया क हिता क लिए सीधा खतरा पदा हा गया। परिस्थिति के यह माड लन के बाद क्वोमिनताङ सरकार का जापान विराधी युद्ध म मजबरन भाग लना पडा ओर जापान का सयुक्त रूप स प्रतिराध करन क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क साथ एक समझौता करना पडा। इस समझौत के अनुसार लाल सना की मुख्य शक्ति को जा उस समय उत्तर पश्चिमी चीन म तनात थी ओर जिसमे तीस हजार स अधिक सनिक थ राष्ट्रीय क्रातिकारी सना की आठवी राह सना का नाम द दिया गया। चू त इसक कमाडर इन चीफ फङ तव्हाए इसक उप कमाडर-इन-चीफ और य च्यनइङ इसके चीफ ऑफ स्टाफ नियुक्त किय गय।

जापान के बबरतापूर्ण आक्रमण क सामन क्वोमिनताङ का जापान परस्त गुट जिसका सरगना वाङ चिङवई था लगातार यही राग अलापता रहा कि चीन क हथियार जापान स घटिया हैं। इसलिए यदि चीन न जापान स युद्ध जारी रखा तो एक राष्ट के रूप म उसका अस्तित्व ही मिट जायगा। दूसरी तरफ च्याड काईशक गुट ब्रिटन और अमरीका की सहायता स यद्ध म शीघ्र विजय प्राप्त करन का सपना दखता रहा। इन दाना की बेहूदा बाता का खडन करन आर सही रास्ता बताने के लिए माओ चतुङ न मई 1938 में दीर्घकालीन युद्ध क बार मे नामक एक पुस्तक लिखी व प्रकाशित की। 'युद्ध करन की शक्ति का अथाह स्रात जन-समुदाय मे ह ' चीन-जापान क इतिहास न उनकी इस भविष्यवाणी का सही साबित कर दिया।

सन् 1939 की सदिया स लकर सन् 1943 की गर्मिया तक च्याड काईशक न तीन कम्युनिस्ट विराधी हमल किय। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जवाबी प्रहारा स उसक प्रत्यक हमले का विफल कर दिया। सयक्त मार्च क प्रति कम्युनिस्ट पार्टी का रुख यह था एकता कायम करना सघर्ष करना और सघर्ष क जरिए फिर एकता कायम करना। सघर्ष करत समय उसन न्यायोचितता क आधार पर अपना फायदा दखत हुए सयत रूप स लडन का कार्यनीतिक उसूल ओर आत्म-रक्षा का यह उसूल अपनाया 'जब तक हम पर हमला न हा तब तक हम हमला नही करग। अगर हम पर हमला किया गया ता हम जरूर जवाबी हमला करेग। अत कम्युनिस्ट पार्टी न क्वोमिनताङ क सभी हमला का विफल कर दिया।

च्याङ काईशेक

जापान विराधी युद्ध म अतिम विजय प्राप्त करन ओर चीनी क्राति का पर्ण विजय तक पहुचान की तेयारी करन क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न यनआन म 23 अप्रल स 11 जून 1945 तक अपनी सातवी राष्टीय काग्रस आयाजित की। ऐतिहासिक महत्त्व की इस काग्रस म 752 प्रतिनिधि आर वकल्पिक प्रतिनिधि शामिल हए जिन्हान सार देश क 12 लाख 10 हजार पार्टी सदस्या का प्रतिनिधित्व किया। काग्रस न एक सपूर्ण कार्यक्रम ओर यह सही कार्य-दिशा निर्धारित की "साहस क साथ जन-समुदाय का गालबद करा, जापानी आक्रमणकारिया का पराजित करा आर नय चीन की स्थापना करा। काग्रस म पार्टी का नया सविधान भी स्वीकार किया गया ओर पार्टी की नयी कन्द्रीय कमटी चुनी गयी, जिसक अध्यक्ष माओ चतुड थे। पार्टी-काग्रस क बाद जन-सना न जारा क साथ अपने जवाबी हमल जारी रख आर बहुत स राय हुए इलाक फिर स प्राप्त कर लिए। 8 अगस्त, 1945 का सावियत सघ न जापान क खिलाफ युद्ध की घापणा कर दी और उसकी लाल सना न उत्तर पर्वी चीन म मौजूद जापानी हमलावरा पर धावा बाल दिया। साथ ही मुक्त क्षत्रा की जन-सना न भी राष्ट्रव्यापी जवाबी हमला शुरू कर दिया। 2 सितबर का जापानी साम्राज्यवादियो न आत्म-समर्पण के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिये। इस तरह आठ साल क कटु सघप क बाद चीनी जनता न जापान-विराधी युद्ध म अतिम विजय हासिल की।

जापान पर विजय पान क बाद समूची चीनी जनता न एक स्वाधीन, शातिपूर्ण जनवादी, समृद्ध ओर शक्तिशाली चीन का निमाण करन की माग की। लकिन क्वामिनताड ओर च्याड काइशक चीनी जनता पर अपना तानाशाही शासन थापन पर

अड रह ताकि चीन आग भी बड जमींदार वग व बड पूजीपति वर्ग क अधिनायकत्व म एक अध-आपनिवशिक व अर्ध सामती दश बना रह। दसरी तरफ, अमरीकी साम्राज्यवादी पूर चीन का अपना उपनिवश बनाना चाहत थ। 26 जून, 1946 को क्वोमिनताड सनाओ न मुक्त क्षत्रा पर चातरफा हमला कर चीन क इतिहास म सबस बड गह युद्ध का भडका दिया।

गृह-यद्ध क शुरू म क्वोमिनताड क अधीन 43 लाख सनिक थे और 30 कराड म ज्यादा आबादी क इलाका पर उसका अधिकार तथा सभी बड-बड शहरा और ज्यादातर मचार-परिवहन व सडका पर उसका नियत्रण था। क्वोमिनताड न आत्म समपण करन वाल दस लाख जापानी सनिका की ममस्त युद्ध-सामग्री भी अपन अधिकार म ल ली थी। उसे अमरीकी फाजी और आथक सहायता भी प्राप्त थी। दूसरी ओर चीनी जन मुक्ति सना क सनिका की सख्या कवल बारह लाख थी। साज-सामान क नाम पर उसक पास सिफ पुरानी बदूक ही थी। उस काइ विदशी सहायता भी नही मिली थी। मुक्त क्षेत्र जा ज्यादातर गावा म फैल हुए थ उनकी आबादी कवल दस कराड स थाडी ज्यादा थी। चूंकि दुश्मन और क्रातिकारिया क बीच का शक्ति-सतुलन एसा ही था इसलिए काइ ताज्जुब नही कि उस समय क्वोमिनताड न डीग मारत हुए यह कहा कि जन मुक्ति सना का तीन स छ महीना क अदर ठिकान लगा दिया जायगा।

अपन म प्रबल दुश्मन क हमल का मुकाबला करन क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न जा उसूल अपनाया उसका मुख्य उद्देश्य बहतर म शक्ति का कन्द्रित कर दुश्मन की प्रभावशाली शक्ति का नस्तनाबूद करना था न कि किसी शहर या स्थान पर कब्जा करना या उस पर अपना नियत्रण बनाय रखना। राजनीतिक क्षत्र म पार्टी न अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याड काइशक क विरुद्ध समूच राष्ट्र का अत्यत व्यापक सयुक्त मोर्चा सगठित किया। चूंकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न सही नीति अपनायी, इसलिए जन मुक्ति सना लडत-लडत और मजबूत होती गयी। राष्ट्रव्यापी गह-यद्ध आरभ होन क बाद जन मुक्ति सेना न आठ महीना क अदर ही दुश्मन क सात लाख सनिका का सफाया कर दिया। मार्च 1947 म क्वोमिनताड का चातरफा हमल की रणनीति छोडकर अपन हमल उत्तरी शनशी व शानतुड क दो मुक्त क्षत्रा पर कन्द्रित करन क लिए मजबूर होना पडा। जन मुक्ति सना न च्याड काइशक की योजनाओ का इस बार भी धूल म मिला दिया।

जून और सितबर 1947 क दौरान जन मुक्ति सना न राष्ट्रव्यापी पमान पर अपना आक्रमण शुरू कर दिया। अब लडाई मुख्य रूप म क्वोमिनताड शासित इलाका म होन लगी। जन मुक्ति सना न बहुत स एस शहरा पर जहा क्वोमिनताड न रक्षा क लिए बहुत-सी फौज रख छोडी थी कब्जा कर लिया और दुश्मन की अधिकाश प्रभावकारी शक्तिया का नष्ट कर दिया। अगस्त 1948 म जन मुक्ति सना न क्रमश तीन बडी मोहिम चलायी—ल्याओशी शनयाड मोहिम हाए हाए मोहिम और पईचिड यनचिन मोहिम—जा दुनियाभर म प्रसिद्ध हैं। 142 दिना तक चलायी गयी इन तीन मोहिमा म क्वोमिनताड क 15 लाख 40 हजार सनिका का सफाया कर दिया गया। 2 जनवरी 1949 को जन-मुक्ति सना क दस लाख सनिका न छाड्याड नदी का पार करना और दक्षिण की ओर आग बढ़ना शुरू किया। 21 अप्रैल को उन्होन नानचिड को जा च्याड काइशक क प्रतिक्रियावादी शासन का केन्द्र रहा था मुक्त करा लिया। यह क्वोमिनताड हुकूमत क पतन का घातक बन गया। इसक बाद जन मुक्ति सना न आधी की तरह अलग अलग

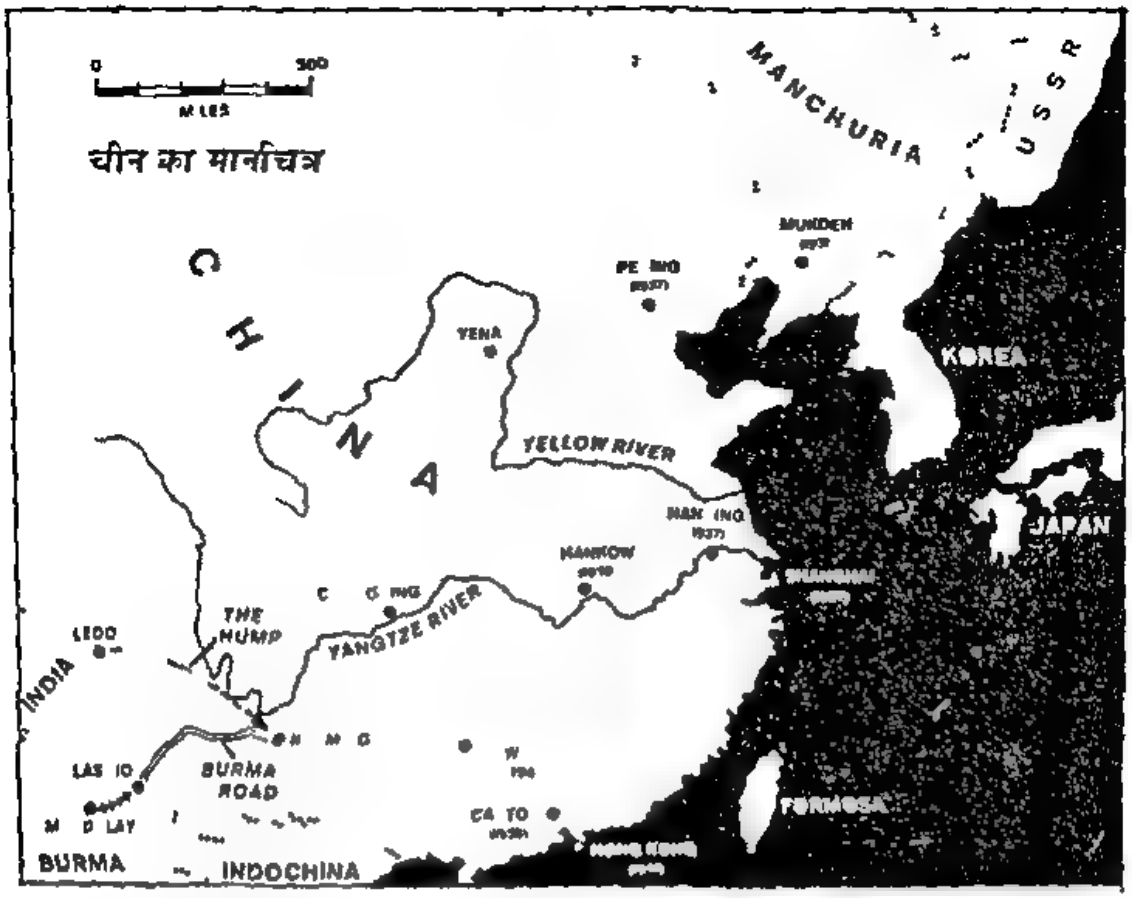

मार्चा पर क्वामिनताड क वच रच मनिका का मफाया कर डाला। जलाइ 1946 म नकर जून 1949 तक उमन कुन मिलाकर 80 लाख 70 हजार क्वामिनताड मनिका का तहस-नहस कर डाला आर तिब्बत थाएवान आर कछ तटवती द्वीपा का छाडकर समूच चीन का मक्त करा लिया। इस प्रकार चीनी जनता न तीसर गह यद्ध म विजय प्राप्त की।

21 सितवर 1949 का चीनी जन-राजनीतिक मलाहकार सम्मलन का प्रथम पूण आधवशन पईचिड म आयोजित किया गया। इसम विभिन्न क्रातिकारी वर्गों विभिन्न जनवादी पार्टिया जन-सगठना अल्प-सख्यक जातिया आर पवासी चीनिया की नमाइदगी करन वाल 662 प्रतिनिधिया न भाग लिया। सम्मलन न राष्ट्रीय जन-प्रातानाज सभा क सत्ताधिकारा व कामा का निष्पादन करत हुए 'चीनी जन राजनीतिक मलाहकार सम्मलन का सामान्य कायक्रम स्वीकार किया, जा एक अस्थायी सविधान की भूमिका अदा करता था। सामान्य कायक्रम म चीन लाक गणराज्य की स्थापना करन का निणय किया गया आर यह निर्धारित किया गया कि इस गणराज्य का स्वरूप जनता क जनवादी आधिनायकत्व का होगा जिसका नतत्व मजदूर वग करगा आर जा मजदूर-किसान गठजाड पर आधारित होगा। सम्मलन म पईचिड का चीन लाक गणराज्य की राजधानी बनाया गया। सम्मलन न माओ चतुड का केन्द्रीय जन सरकार का अध्यक्ष तथा चू त ल्यू शाआछी मुड छिड लिड ली चीशन आर चाड लान का उपाध्यक्ष चना। सम्मलन क बाद केन्द्रीय जन सरकार न अपना पहला अधिवशन बुलाया आर चाआ अनलाए का सरकार का प्रधानमत्री तथा विदशमत्री नियक्त किया।

1 अक्तूबर 1949 का तीन लाख लाग थ्यनआनमन चाक म इकट्ठ हुए। अध्यक्ष माओ चतुड न चीन लाक गणराज्य की विधिवत घापणा की। चीनी इतिहास का एक नया अध्याय खल गया। ■■

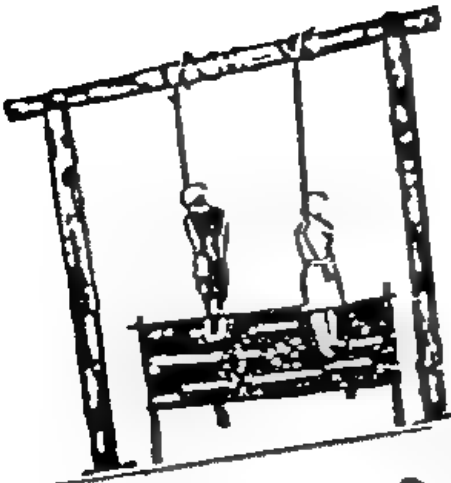

क्यूबा की क्रांति
(1959)

फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में हुए क्यूबा के मुक्ति-संग्राम ने अब लोक-कथाओं में स्थान पा लिया है। मात्र 82 क्रांतिकारियों ने तानाशाह बटिस्टा की सुसज्जित फौज से लोहा लेना शुरू किया और तीन साल से भी कम समय में बेमिसाल जीत हासिल की। इस जीत में कास्त्रो के लेफ्टीनेंट थे—चे गुएवारा, राउल कास्त्रो और सिमेलो। क्यूबा के किसानों ने क्रांतिकारियों का दिल खोल कर साथ दिया। अमरीकी साम्राज्यवाद की गर्व से तनी रीढ़ पर क्यूबा की क्रांति एक बहुत बड़ी ठोकर थी।

सन् 1956 के मध्य में लातीनी अमरीकी देश क्यूबा तानाशाह बटिस्टा (Batista) के अमरीका समर्थित दुःशासन के नीचे बरी तरह पिसता हुआ कराह रहा था। पालम बटिस्टा के किसी भी विरोधी को बेहद सस्ती से कुचलती। गिरफ्तार लोगों को भयानक अमानवीय यातनाएं दी जातीं। उनकी कटी पिटी लाश सड़कों पर या समुद्र में पड़ी हुई मिलती। बटिस्टा ने भविष्यत भांप लिए थे। वह अब अमरीका के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गया था। क्यूबाई कम्युनिस्टों की पार्टी पार्टिडो माशलिस्टा पॉपुलर (Partido Socialista Popular) पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। टेड यूनियनों को गुंडों के नेतृत्व में दे दिया गया था। अमरीकी पूंजीपति पूरे देश में छा गए थे। फौज अमरीकी अफसरों से भरी हुई थी और पुलिस की लगामें भी सी आइ ए के हाथ में थीं। कुल मिलाकर क्यूबा की स्थिति एक अमरीकी उपनिवेश जैसी हो चुकी थी।

लेकिन क्यूबा के लोगों में अपने अधिकारों और आजादी के लिए विद्रोह की पुरानी परंपरा अब भी मौजूद थी। 19वीं शताब्दी में वे आधी सदी तक स्वतंत्रता संघर्ष चलाते रहे थे। सन् 1933 में उन्होंने घृणित तानाशाह मचाडो (Machado) को सत्ता से उतार दिया था। बटिस्टा भी डरा हुआ था। एक युवा वकील फिदेल कास्त्रो (Fidel Castro) के

प्रसन्न मुद्रा म चे गुएवारा

नतत्व म कुछ दुस्साहसिक क्रांतिकारियो न मोकाडा (Moncado) बैरक्स पर हमला किया था। इस कार्रवाइ म छात्रो, युवा मजदूरो सरकारी कमचारियो और कारीगरो न भाग लिया था। राजनतिक अनुभव की कमी और किसी ठोस कार्यक्रम क अभाव न इन लोगो को नाकामयाब बनाया। सभी गिरफ्तार कर लिय गय। फिदल पर मकदमा चला और उन्होन अदालत म अपना एतिहासिक भाषण हिस्ट्री विल एब्जाल्व मी (History will absolve me) दिया। बाद म सभी को माफी द दी गयी। य क्रांतिकारी मेक्सिको चल गय और वहीं म क्रांति की अगली तयारी करन लग।

क्यूबा क अदर भी तमाम जुल्म सहत हुए भी मजदूर बुद्धिजीवी विश्वविद्यालय और हाई स्कूलो क छात्र बटिस्टा और उसक अमरीकी रक्षको क खिलाफ सघर्ष कर रह थ। भूमिगत प्रेस बटिस्टा क अपराधो का पदाफाश कर रही थी। हुकूमत क खिलाफ सभाए प्रदशन और हडताल बढ़ती जा रही थी। तानाशाह न उच्च शिक्षा क सारे सस्थान बद कर दिय थ। रिश्वत ब्लकमेल और धमकियो के जरिए बटिस्टा विपक्ष का समथन हासिल करन की कोशिश कर रहा था। बटिस्टा अपन भाषणो म आजादी स्वतत्रता और प्रगति की चचा करत और जोस मार्ती (Jose Marti) जैसे कवि, क्रातिकारी और शहीद क नाम का इस्तमाल भी करता। फौज का यह पूव सार्जेंट दरअसल झठ और बदकारी का घिनौना पुतला था।

फिदेल कास्त्रो व चे गुएवारा

क्यूबा क अदर की इसी क्रातिकारी परिस्थिति का देखकर फिदल कास्त्रा आर उनक साथिया न क्यूबा पर हमला करन की याजना बनायी। उन्ह स्पनिश फाज क एक पूव कनल अल्बर्टा बाया (Alberto Bayo) की मदद भी मिल गयी। बाया गुरिल्ला युद्ध म विशपज्ञ हान क साथ साथ कवि भी थ। मक्सिका सिटी स 35 किमी दूर साटा राजा (Santa Rosa) नामक जगह पर बाया न फिदल क क्रातिकारिया का जगल युद्ध का प्रशिक्षण दना शरू किया। उन्ह हथियारा का इस्तमाल करना आर कठार म कठार जीवन जीन का अभ्यास कराया। बाया का उनक छात्र प्राफसर आफ इंग्लिश क गुप्त नाम स बलात। इन छात्रा म अर्नेस्टो च गुएवारा राउल कास्त्रा डारिया लापज, सिमला आर कालोस प्रमडज जस लाग शामिल थ जा बाद म फिदेल क साथ आधुनिक क्यूबा क निर्माता बन।

22 जून 1957 का मी आइ ए क कहन पर मक्सिकन सीक्रट पलिस न साटा राजा पर छापा मारकर क्रांति की तयारी म सलग्न इन लागा का गिरफ्तार कर लिया। मक्सिकन समाज न क्रातिकारिया की गिरफ्तारी का कडा विराध किया। मक्सिका क पव राष्ट्रपति पूव मत्रा आर एक बड नता समत कइ कलाकारा आर विद्वाना की काशश स एक महीन बाद य लाग रिहा कर दिय गय। मक्सिका आर क्यूबा की सरकारा न इनकी याजनाआ का नष्ट हुआ मान लिया था पर रिहा हात ही फिदल न ग्वीडन निवासी वनर ग्रन (Wenner Gren) स ग्रेनमा (Granma) नामक याट (समुद्री नावा) 12 हजार डालर म खरीद लिया। 12 मुसाफिरा की क्षमता वाल इस याट पर बैठकर क्रांति क 82 सिपाही क्यूबा म बाटिस्टा क गढ पर हल्ला बालन चल दिय। इस दारान उन्ह कइ बार गढ़ारिया

और हताशा का सामना करना पडा पर उन्हान हिम्मत नही हारी। ग्रैनमा जैस-जस समुद्र म आग बढ़ता वस-वैस क्रांतिकारिया का उत्साह ओर उफनता। व 'क्यूबा का गीत आर 26 जलाइ आदालन का गाना गात आग बढते जा रह थ। 26 जुलाइ क दिन ही माकाडा बरका पर फिदल न असफल हमला किया था। फिदल का कहना था कि अब या ता व हीरा बनग या शहीद ।

30 नवबर का जब ग्रनमा क्यूवा क तट स दा दिन की दूरी पर था कि बटिस्टा क विमाना न उस दख लिया। 2 दिसबर का ग्रनमा क्यूबा क नट पर पहुचा। बटिस्टा की गश्ती नावा न क्रांतिकारिया का घरकर धुआधार गालया चलानी शुरू कर दी। आसमान स विमान फायरिग कर रह थ। व किसी तरह बचकर दलदली रास्त स हात हुए आग बढ़त रह। प्याम स उनक गल सूखकर छुहारा बन जा रह थ। व जस-तस गन्न चूस-चूसकर अपनी प्यास बुमा रह थ। 4 दिसबर की पूरी रात उन्हान गन्न क खता म दौडत हए गजारी। अलीज्रिया दि पिआ (Aligria de Pio) पर पहुचकर अपन गाइड की गद्दारी क कारण उ ह दुश्मन क भयानक हमल का सामना करना पडा। आध लाग मार गय और 20 गिरफ्तार कर लिय गय। इनम म कई का यातनाए दन क बाद गाली मार दी गयी। बाकी क्रांतिकारी बचकर निक्ल गय आर सीएरा मस्टा (Sierra Maestra) की पहाडिया की तलहटी म एक किसान की झापडी म जमा हुए। क्यूबा क किसाना न इन क्रांतिकारिया की मदद की।

अब आम जनता का विश्वास जीतन क लिए छापामारा का छाटी छाटी जीत हासिल करनी थी। 16 जनवरी 1957 का ला प्लाटा (La Plata) नदी पर बनी फोजी चौकी पर उन लागो न हमला किया आर दा फाजिया का मारकर चौकी पर कब्जा कर लिया। इसी वक्त फिदेल न सीएरा मेस्ट्रा की पहाडिया का विद्राहिया का गढ बनान का निणय लिया। इन्ही पहाडिया म पनाह लकर 19वी सदी क स्वतन्त्रता-सनानिया न भी अपनी क्रांतिकारी कारवाइया की थी। यह एसा चट्टानी इलाका था जहा स एक मशीनगन अक्ल एक हजार सैनिका की गारद का सामना कर सकती थी। ओर ता आर इन पहाडिया क ऊपर विमान उडाना भी खतर स खाली नही था।

22 जनवरी 1957 का विद्रोहिया न बटिस्टा क फोजिया की एक आर टुकडी का हराया। 26 जुलाई आते-आत हवाना (क्यूबा की राजधानी) क भूमिगत नताआ स विद्राहिया का सम्पर्क स्थापित हा गया। व पहाडिया म आकर फिदल स मिल। उन्हान क्रांतिकारिया क लिए हथियार गोला-बारूद, कपडा, दवाए और धन जुटान का जिम्मा लिया। इसस पहल 17 फरवरी 1957 का न्यूयार्क टाइम्स क प्रतिनिधि हबट मथ्यूज न पहाडिया म फिदेल से मुलाकात की। अमरीकी अखबारा म विद्राहिया की बडी बडी तस्वीर छपी। देखत ही देखत व सारी दुनिया म मशहर हा गय। सार जमान म अमरीकी साम्राज्यवाद और बटिस्टा की थू-थू होन लगी। हवाना म छात्रा न विद्राह कर दिया। माच के मध्य म 50 छापामार फिदल स आ मिल। अब विद्राही तीन प्लाटूना म बट गय। किसाना क बीच फिदेल के साथी दाढी वाल क्रांतिकारिया क रूप म मशहूर हा चुक थ। उवेरो (Uvero) गाव की बैरका पर हमला किया गया। इसम 15 विद्राही ता अवश्य शहीद हा गय पर जीत न फिदल क साथिया का उत्साह बढ़ाया। जल्दी ही सीएरा मस्ट्रा क निचले हिस्स म बनी शत्रु की चौकियो का साफ कर दिया गया।

क्यूबा का मानचित्र

बतिस्टा ने किसानों और छापामारों का सम्पर्क तोड़ने के लिए सीएरा मेस्ट्रा के गावों से किसानों को निकालना चाहा पर इसका कड़ा प्रतिरोध हुआ। इसी दौरान कई किसान विद्रोहियों की कतारों में मिल गये। बतिस्टा के अखबार क्रान्तिकारियों को मास्को के कम्युनिस्ट एजेंट कहकर अपमानित करने की चेष्टा करते। फिदेल का विश्वास मार्क्सवाद लेनिनवाद में था भी। चे गुएवारा जैसे लोग लेखन के साथ साथ क्रांतिकारी विचारधारा का प्रचार भी करते थे। सन 1957 के खत्म होते होते विद्रोहियों का सीएरा मेस्ट्रा पर पूरी तरह कब्जा हो गया। मार्च 1958 में राउल कास्त्रो के नेतृत्व में पहाड़ियों से उतर दूसरा मोर्चा खोला गया। 12 मार्च 1958 को फिदेल कास्त्रो ने एक घोषणा पत्र जारी किया जिसमें तानाशाही के खिलाफ एक आम हड़ताल छह दिन की अपील की गयी थी। 1 मार्च को फौज में अपील की गयी कि वे विद्रोहियों का साथ दें। अगस्त 1958 में कास्त्रो ने अपने आखिरी हमले की योजना बनायी।

इस समय बतिस्टा के पास 20 हजार सैनिक, टैंक और विमान थे। विद्रोहियों के पास कुछ सौ या अच्छा थे। उनके हथियार भी पुराने और खराब हालत में थे। नयी योजना के तहत फिदेल और राउल के नेतृत्व वाले छापामारों को सांटियागो शहर की घेराबंदी करनी थी। सैमिला रहनुमाई वाले छापामारों को पिनार डेल रियो प्रांत के पश्चिमी इलाके पर हल्ला बोलना था और चे गुएवारा के छापामारों को लास विलास होते हुए हवाना का रास्ता साफ करना था। यह भी तय किया गया कि जिस समय चे गुएवारा के छापामार सांटा क्लारा होते हुए हवाना की तरफ बढ़ने लगें उसी समय पश्चिम से सैमिला की फौज हमला करेगी।

जंग शुरू हो गयी। उपरोक्त रणनीति के कारण बतिस्टा की फौजों को एक साथ चार मोर्चों पर लड़ना पड़ा। चे के साथियों ने बहादुरी और कुशलता से लड़ते हुए सांटा क्लारा पर कब्जा करके क्रांतिकारी विजय की शुरुआत की। बतिस्टा ये खबर सुनते ही मुल्क छोड़कर भाग गया। उसकी जगह जनरल मेंण्टिला ने सत्ता संभाली और झूठ बोला कि उसे फिदेल कास्त्रो का समर्थन प्राप्त है। कास्त्रो ने मेंण्टिला के इस कदम की निंदा की। 2 जनवरी 1959 को चे और सैमिला की फौज हवाना में घुसीं। जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। तानाशाह के बचे हुए सैनिकों ने भी आत्म समर्पण कर दिया। क्रांति जीत गयी। ■■

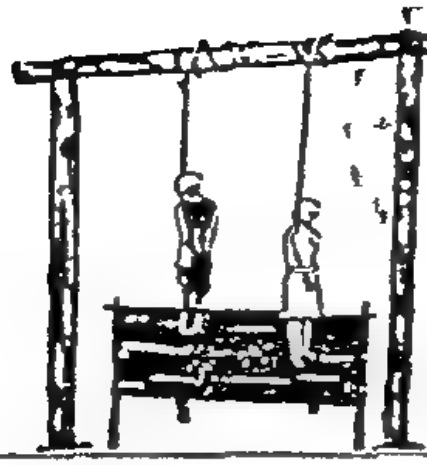

वियतनाम की क्रांति

(1930 1975)

वियतनाम के किसानो ने ही ची मि ह और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतत्व म आधी सदी तक साम्राज्यवाद से लोहा लेकर अपने देश को स्वाधीन किया। राष्ट्रीय मुक्ति-सग्रामो के इतिहास मे इस महान सघर्ष की गाथा स्वर्णाक्षरो मे लिखी जा चुकी है। वियतनाम ने फ्रासीसी, ब्रिटिश, जापानी और अमरीकी साम्राज्ययादी इरादो को धूल मे मिलाकर सारी दुनिया को आजादी के लिए जूझते रहने की प्रेरणा दी।

दक्षिण पूर्व एशिया क छाट स दश वियतनाम का अपनी आजादी क लिए पहल फ्रासीसी साम्राज्यवाद म और फिर अमरीकी साम्राज्यवाद म लगभग 50 वष तक लोहा लना पडा। फ्रासीसिया न सन् 1868 म सगान पर कब्जा किया था। आजादी क लिए लडन वाल एक किसान यादा वन त्रुग नुक न मात की सजा पान स पहल कहा था कि जब तक इस धरती पर घास उगती ह आक्रमणकारिया के खिलाफ लडन वाल लाग भी पदा होत रहग।' इसी परपरा व आधार पर वियतनामी दशभक्ता न सघष क हर तरह क रूपा का इस्तमाल किया। 3 मइ 1930 का वियतनाम क तीन कम्युनिस्ट ग्रुपा का एकीकरण सम्मलन हागकाग म हा ची मिन्ह की दख रख म हुआ। पहल य गट साथ-साथ काम करन को राजी ही नही थे और इसीलिए फ्रासीसी तीना का अलग अलग दमन करन म कामयाब रहत थ। हा ची मि ह क प्रयासा स उनम एकता हा गयी और वियतनाम कम्युनिस्ट पार्टी बनी जिसका नाम बदलकर बाद म हिद चीन कम्युनिस्ट पार्टी कर दिया गया।

पार्टी न क्राति का 11 सूत्री कार्यक्रम बनाया। इसी के बाद वियतनाम म कम्युनिस्टा का असर तजी से बढा। उन्होन 1930-31 के क्रातिकारी उभार का नतत्व किया। नअन और हा नि ह प्राता म जनता ने सत्ता अपन हाथ मे लकर गाव परिषद् स्थापित कर दी। पर यह जनवादी सरकार मात्र छ -सात महीन म ही फ्रासीसी सना की बबरता क सामन

वियतनामी क्रांति के नायक हो ची मिन्ह

टूट गयी। हो ची मिन्ह ने हांगकांग से ही इस आंदोलन को यथासंभव निर्देशित किया और असफलता के बाद उसकी वजह बताने वाला एक पत्र लिखकर भेजा। हो के पास इंग्लैंड, फ्रांस, चीन और मास्को में वियतनामियों व जनवादी आंदोलनों में काम करने का गहरा तजुर्बा था। वे जानते थे कि कम्युनिस्ट विचारधारा को कैसे वियतनाम की राष्ट्रीय परिस्थितियों में लागू किया जाय।

सन् 1936 में फ्रांस में पॉपुलर फ्रंट की सरकार बनी, जिससे हिंद चीन में साम्राज्यवादी दमन ढीला पड़ा। इसका लाभ उठाकर कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता के बीच प्रचार के कई साधन अपनाये और 'हिंद-चीन महासंघ' नाम से एक आंदोलन चलाया। इसकी मुख्य मांग जनवादी-सुधार लागू करना, जनता का जीवन स्तर बेहतर करना और स्थानीय परिषदों के चुनाव में तमाम बालिग जनता को वोट का अधिकार देना थी। मजदूर-हड़ताल हुईं किसानों के प्रदर्शन हुए और 1 मई, 1938 को मई दिवस पर 5 000 लोगों ने जोरदार जलूस निकाला। इन दिनों हो ची मिन्ह चीनी क्रांति में जापान विरोधी युद्ध में काम करके लड़ाई का अनुभव हासिल कर रहे थे।

सन् 1939 में दूसरा विश्व-युद्ध छिड़ा। फ्रांस ने फौरन वियतनामियों के बचे-खुचे अधिकार जब्त कर लिये। ताबड़तोड़ गिरफ्तारियां होने लगीं। एस में हो ने सम्पर्क करने फाम वान डोंग और वो वेन जियाप को चीन पहुंचे। इन लोगों ने विचार-विमर्श करके वियतमिन्ह (वियतनाम स्वाधीनता मोर्चा) गठित किया, जिसने वियतनामियों का एक होकर फासिस्टवाद के खिलाफ लड़ने के लिए ललकारा। साथ-साथ ही फ्रांसीसियों को

मार भगाने का कार्यक्रम भी अपने हाथ म लिया। हा ने अपन एक पर्चे म लिखा—"फ्रासीसी साम्राज्यवादी ओर जापानी फासिस्ट दोना ही राष्ट्रीय स्वाधीनता और विश्व क्रांति क दुश्मन हैं।"

राष्ट्रीयता और अतर्राष्ट्रीयता क आधार पर बने इस कार्यक्रम ने वियतनामिया की आत्मा क सात शर का जगा दिया। उन्हाने अपने पडोसी सियामिया के खिलाफ फाज म भर्ती हाने स इकार कर दिया। टाकिन क बाक सन, अन्नम क डो लौंग म ओर काचीन-चाइना क इलाके म बगावते भडक उठी। फ्रासीसियो ने भयानक दमन-चक्र चलाया। निहत्थे लागा का मशीनगनो स भून दिया, गाव जला डाल लागा स कब्र खुदवाई गयी ओर फिर उनम उन्ही का जिदा दफन कर दिया गया। उधर युरोप मे जर्मनी ने फ्रास का हराया आर इधर जापानिया न वियतनाम म प्रवश पा लिया। हा ची मिन्ह न सदेश भेजा कि जापानिया क खिलाफ गुरिल्ला-युद्ध शरू किया जाना चाहिए।

हा जनवरी 1941 म 31 साल के प्रवास के बाद वियतनाम लोटे और उन्होने आते ही आदालन का नेतृत्व सीध अपने हाथा म ले लिया। उन्हान एक प्रचार-सना ओर एक राजनैतिक सना बनाने की जरूरत पश की। पार्टी का अखबार शुरू हुआ जिसका नाम 'वियत लैप' (स्वतत्र वियतनाम) रखा गया। सन् 1941 के अत तक काआ बाग क्षेत्र म कम्युनिस्टा न बहुत स आधार क्षत्र कायम कर लिए। हो ने किताब लिखी, गुरिल्ला दाव-पच', 'रूस म गुरिल्ला युद्ध के अनुभव और 'चीन म गुरिल्ला-युद्ध क अनुभव । चीनी नेता सुन यात सन की पुस्तका चीनी युद्ध-कला' ओर 'रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास' का अनुवाद किया। उन्हान वियतनाम पर फ्रासीसी कब्ज का इतिहास भी लिखा जिसमे दशभक्ति पूर्ण आदोलनो को प्रमुखता दी गयी थी। इसी पुस्तक क आखिर म हा न भविष्यवाणी की कि सन् 1945 मे वियतनाम आजाद हा जायगा।

धीरे-धीरे क्रातिकारी आधार-क्षत्र विकसित होते-हाते लामसन तक पहुच गया। वियतमिन्ह ने मित्र राष्ट्रा स सहायता लन का फमला किया। हा एक प्रतिनिधिमडल क साथ चीन गय और च्याग काई शेक स मिलन का बहाना बनाकर वहा क कम्युनस्टा स सम्पर्क करने की काशिश की। हो गिरफ्तार कर लिये गये। 14 महीने बाद च्याग सरकार ने उन्हे काफी जद्दा-जहद के बाद रिहा किया। हा का स्वास्थ्य जेल-जीवन की यातनाआ स टूट चुका था पर उन्हाने पहाडो पर चढचढ़कर अपना गठिया दूर किया ओर अधर म झाक-झाककर अपनी नजर ठीक की। उन्हाने चीन म वियतनामिया के सगठना से कहा कि वे अपने काम का केन्द्र वियतनाम को ही बनाय और जितन लाग लौट सकत हो, स्वदश लौट जाय। दो साल बाद अर्थात् सन् 1944 म हा भी वियतनाम लौट आय।

वियतमिन्ह गुरिल्ला ने कई बार फ्रासीसियो क सामन जापानिया से मिलकर लडन का प्रस्ताव रखा पर फ्रासीसिया ने कम्युनिस्टो क खिलाफ जापान का साथ दना जारी रखा। जनता म आतक फैलाकर उसे वियतमिन्ह म शामिल हाने से रोकन का प्रयास किया, पर जहा जहा दमन हुआ, वहा-वहा आदालन और उग्र हो उठा। फ्राम म दगाल की विजय के बाद हिद चीन मे फ्रास व जापान के बीच मतभेद बढ़ गये। इससे क्रातिकारी आदालन का फलने फूलने का मौका मिल गया। हो ने राष्टीय मुक्ति सेना गठित करन का प्रस्ताव रखा और जियाप्प का इसका जिम्मा सौंपा। 34 लडाका का पहला दस्ता बनाया गया, जिनम स कई ने चीन म फौजी शिक्षा ली थी। उस 'प्रचार और मुक्ति-दस्ता' कहा गया। इससे दूसर दिन ही पाए खाट और ना नाम मे पहली जीत हासिल की। 9 मार्च, 1945 का जापानिया ने

फ्रासीसिया को पूरी तरह स सत्ता से उतार दिया। फ्रासीसी नागरिक गिरफ्तार कर लिय गय।

1 माच, 1945 का वियतमिन्ह न फ्रासीसिया स शत्रुता खत्म करक उन्ह शरणार्थियो का दर्जा दिया। गरिल्ला न फ्रासीसी सैनिका का जापानिया की कैद से छुडान क लिए हमल तज किय। जापान न दाए वियत (विशाल वियतनाम) पार्टी के जरिए कठपुतली सरकार बनायी और एक फौज जुटाकर वियतमिन्ह के खिलाफ भजी। वियतमिन्ह न इस फाज का आसानी स हरा दिया। उसक हथियार छीन लिये और खद का मजबूत कर लिया। नारा दिया गया— जापानिया क लिए न एक दाना न एक छदाम । 35 लागा तीन राइफला व एक पिस्ताल क साथ शुरू हुई मुक्ति-सना म अब 10 हजार सिपाही भर्ती हो चुके थे आर उसक कई गुप्त दस्ते दशभर म फल हए थे।

15 अगस्त 1945 का कम्युनिस्ट पार्टी की जन काग्रस तान राव क आधार इलाक म हइ। अगल दिन जापानिया न विश्व युद्ध म अपनी पराजय स्वीकार कर ली। जन काग्रस न सशस्त्र क्राति का आदश दिया आर राष्ट्रीय मुक्ति समिति का चुनाव किया गया। क्राति शरू हइ। जन मुक्ति-सना न जापानी चौकिया का ध्वस्त कर दिया। 14 अगस्त का हनाइ पर उसका कब्जा हो गया। 2 सितबर का अस्थायी सरकार बनी। हा ची मिन्ह न स्वतत्रता का घोषणा-पत्र पढ़ा।

पर वियतनाम का अभी साम्राज्यवाद क खिलाफ लडाई की काफी मजिल तय करनी थी। मित्र राष्ट्रा न जापानिया का निशस्त्र करन क नाम पर वियतनाम का दो भागा म बाटा। दक्षिण भाग ब्रिटिश सना का सौपा गया आर उत्तरी भाग च्याग काइ शक की सना का। 23 सितबर का ब्रिटिश सैनिका न सैगान का घर म ल लिया। यह एक नया हथकडा था। पहल हर जगह जापानी सैनिक भज जात आर फिर उनस हथियार लन क नाम पर अग्रज और उनकी कमान म भारतीय सनिक पहच जात। फ्रासीसी अग्रजा न हथियार

तबाही और तयारी

लेकर बर्बर आक्रमण करते और बाद म अग्रेजा और भारतीयो की आड म छिप जाते। वियतनामिया न इन दिक्कता क बावजूद कडा प्रतिरोध किया। उत्तर स वियतनामी देशभक्त आ-आकर दक्षिण म लडन लगे। उनके खून स वहा की धरती लाल हा गयी। उत्तर वियतनाम म हा ची मिन्ह का च्याग काई शक क जनरला के हथकडा का जवाब देना पडा। 6 जनवरी 1946 का हा ने चुनाव कराये ओर जीत हासिल की।

देश को युद्ध से बचाने और पुनर्निर्माण के लिए समय निकालने के लिए हो न 6 मार्च 1946 को फ्रासीसिया से सधि कर ली। उन्ह इस सब क लिए कछ आलोचना अवश्य झेलनी पडी पर व अत म जनता का समझाने म कामयाब हा गय। 31 मई को व फ्रास रवाना हुए पर उन्हे वहा इसाफ नही मिला। 14 दिसबर का फ्रासीसी सना ने सधि तोडकर हनोई और दूसर शहरो पर हमला कर दिया। उन्हे सफलता तो मिली पर वियतनामी दशभक्ता ने भी जमकर सघर्ष किया जिसस बडी सख्या म फ्रासीसी मार गय। एक बार फिर मुक्ति-युद्ध शुरू हुआ जा 7 मई 1954 तक चला। दीन-बीन फू के 55 दिन क युद्ध म मुक्ति सना ने फ्रासीसिया को अतिम रूप स परास्त कर दिया। जिनवा सम्मलन बुलाया गया जिसमे ढाई महीन तक बहस हुई। 20 जुलाइ 1954 का युद्ध-बदी समझात पर दस्तखत हुए पर अमरीका न इस समझौत पर दस्तखत नही किय।

अमरीकिया न न्यू जर्सी म रहन वाल ना दिन्ह को दक्षिण म कठपुतली सरकार का प्रधानमत्री बना दिया। अमरीका का 200 फौजी अधिकारिया का सनिक सहायता परामर्श दल पर्द के पीछे से युद्ध का सचालन करने लगा। धीर धीर अमरीकिया न हर क्षेत्र म फ्रासीसिया का स्थान लना शुरू कर दिया। साल-डढ़ साल म उन्हान दक्षिण वियतनाम का अपना अच्छा-खासा उपनिवश बना लिया। जिनेवा समझौत म स्वतत्र आम चनाव के जरिए दाना वियतनामा क एकीकरण की शत थी पर अमरीका की कठपुतली सरकार न दक्षिण वियतनाम को स्वतत्र राज्य घोषित कर दिया। दक्षिण वियतनाम का साउथ-ईस्ट एशिया टीटी (सीटा) के सरक्षण म लेकर साम्राज्यवादी चौधराहट पुख्ता कर ली गयी। 20 जुलाई 1956 का जिनवा समझौत क मुताबिक आम चुनाव होन चाहिए थे लकिन अमरीका न 4 मार्च 1956 का कवल दक्षिण म चुनाव करा क 123 सदस्यो की धारा सभा खडी कर दी।

दक्षिण की सरकार ने न ता भूमि-सुधार किय ओर न ही ठीक स शासन चलाया। आतरिक भ्रष्टाचार आर जन-दमन के कारण वह अलोकप्रिय हा गयी। कम्युनिस्टा न वहा वियत-काग क नाम स सघष शुरू कर दिया। उत्तर स पहल वियत-काग का कवल आर्थिक एव नैतिक मदद मिली और बाद म सीध-सीधे सैनिक ही दक्षिण म लडने के लिए आने लगे। अमरीकी राष्ट्रपति कैनडी ने चार हजार अमरीकी सनिक वियत-काग और उत्तरी वियतनाम क खिलाफ भेज। सन् 1965 तक अमरीकी विमान विभिन्न बहाना स उत्तर पर बमबारी करन लग। सन् 1966 तक दा लाख अमरीकी फौज दक्षिण की तरफ स लडने लगी। अमरीका अपनी नीति क कारण अकला पडन लगा। फ्रास न खुद का इस नीति से अलग घोषित कर दिया। सन् 1967 म अमरीकी रक्षा-मत्री मारनमारा न वियतनाम के सिलसिल म अमरीकी नीति की जाच की जिसक नतीज सन् 1971 म सामने आये। सन् 1968 मे राष्ट्रपति चुन गय निक्सन ने पूरी कोशिश की कि भयानक बमबारी करके वियतनाम को ध्वस्त कर दिया जाय पर अमरीकी ताकत वियतनामी सकल्प को नही ताड सकी। हार कर सन् 1972 मे निक्सन को अपनी फौज वापस बुलानी पडी। यह

निर्मम साम्राज्यवादियो का उपहार

दनिया क तथाकथित सबस ताकतवर दश की एक बहद अपमानजनक पराजय थी।

अब अमरीकिया न नया हथकडा अपनाया। उन्हान युद्ध का वियतनामीकरण करने की काशश की। जनरल थियू के रूप मे अपनी एक कठपुतली के जरिए उसने वियत-काग आर उत्तर वियतनाम क खिलाफ लडाई चलाई लकिन अप्रैल, 1975 म कम्यनिस्टा की फाज न सेगान को घर लिया। थियू दो लाख दक्षिण वियतनामिया क साथ भाग गया। सगान का नामकरण वियतनामिया न अपन महान नेता के नाम पर ही 'हा ची मिन्ह नगर किया। नवबर 1975 म दक्षिण आर उत्तर वियतनाम क एकीकरण की घापणा हइ।

वियतनामी किसाना न विश्व के इतिहास म सबसे लबा, निर्मम धोखबाजी स भरा हुआ युद्ध जीतकर कमाल कर दिखाया। उन्हान फ्रासीसी जापानी, ब्रिटिश और अमरीकी साम्राज्यवादी ताकता को अपन आजाद रहन क दृढ सकल्प स पराजित किया। आज वियतनाम एक स्वाधीन और विकासशील राष्ट है। ■■

3,00,00,000

तीन करोड़ से भी अधिक पाठकों की पसंद

रैपिडैक्स

इगलिश स्पीकिंग कोर्स

प्रिय अभिभावक
आपका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढता है
अंग्रेजी अच्छी तरह लिख पढ लेता है
उसकी एकमात्र समस्या
वह इसे बोलने में हिचकता या अटकता है।
इसका समाधान बता रहे हैं
उसके प्रिय खिलाड़ी कपिलदेव—

अंग्रेजी बोलचाल सीखने का एकमात्र सोर्स
रैपिडैक्स इगलिश स्पीकिंग कोर्स

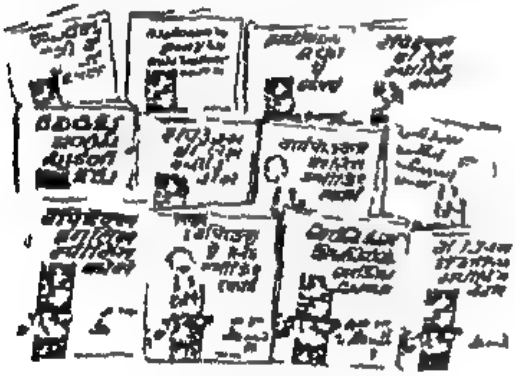

12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

It's really a good book to learn spoken English
—Kapil Dev

कान्वेंट स्तर की शुद्ध व फराटेदार अंग्रेजी सिखलाने वाली एसी पुस्तक जो भारत के कोने कोने में फैली जिस हर भाषा के लोगों ने पसंद किया तथा समाज के हर वर्ग ने अपनाया।

सभी भाषाओं में बड़े साइज के 400 से अधिक पृष्ठ
मूल्य 45/ प्रत्येक डाकखर्च 6/-

लेडीज हेल्थ गाइड

- **सौंदर्य समस्याएं** बड़प्पन अपर्याप्त वक्ष छोटा कद बाल का झड़ना चेहरे की कमियां आदि।
- **आम शिकायतें** मासिक धर्म की गड़बड़ियां बेजा मकान व तनाव पीठ दर्द हीन भावना यौन रोग आदि।
- **शिशु जन्म प्रक्रिया** गर्भाधान से लेकर प्रसवोपरांत का भोजन सतर्कताएं एवं समस्याएं।
- **सामान्य स्वास्थ्य** नारी शरीर रचना की संपूर्ण जानकारी फर्स्ट एड सौंदर्य प्रसाधन आदि।
- **बीमारियां** रक्तचाप मधुमेह तपेदिक दमा, वक्ष तथा गर्भाशय का कैन्सर तथा ऑपरेशन आदि।

मूल्य 45/
डाकखर्च 6/

बड़े साइज के
410 पृष्ठ
चित्र 300

25 विशेषज्ञ डाक्टरों के इंटरव्यूज पर आधारित एवं प्रामाणिक पुस्तक।

[illegible]

101 साइंस एक्सपेरिमेंट्स

—आइवर यूशिएल

नन्हे वैज्ञानिकों के लिए लिखी गई एक ऐसी पुस्तक—जो सरल व रोचक प्रयोगों द्वारा विज्ञान के जटिल सिद्धांतों को समझने में निश्चित रूप से मदद देगी।

प्रयोगों की एक झलक—

* कैसे चल पाते हैं जल सतह पर कीट?
* नहाने के बाद क्यों लगती है ठंड?
* कमरे में बैठ नापो सितारों की दूरी!

इसके साथ ही वर्षामापी, सूक्ष्मदर्शी, डायनेमो आदि अनेक उपकरण बनाने की सचित्र विधियां।

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 120
English edition also available

[illegible] फोटोग्राफर द्वारा लिखित घर-बैठे फोटोग्राफी सिखाने वाला

प्रैक्टिकल फोटोग्राफी कोर्स

लेखक ए एच हाशमी

पोर्ट्रेट्स ग्रुप्स स्टिल लाइफ लैण्डस्केप स्पोर्ट्स तथा स्पीड फोटोग्राफी विवाह उत्सव जानवर प्राकृतिक दृश्यावलियां आदि सभी मौकों के फोटो खींचना सीखो।

• डेवलपिंग • कण्टैक्ट • एनलार्जमेण्ट • रीटचिंग • डाक्यूमेण्ट कापिंग • फिनिशिंग • कलरिंग।

हिंदी साइज 214 पृष्ठ मूल्य 28/ डाकखर्च 6/

[illegible]

चिल्ड्रंस ट्रिक्स एण्ड स्टंट्स

इस सचित्र पुस्तक में तुम पाओगे

- ऐसी कुर्सी जिस तुम नहीं उठा सकोगे!
- ऐसा गुब्बारा, जिसे तुम नहीं फोड़ सकोगे!
- अदृश्य मानव, जो तुम्हारी आंखों के सामने से गायब हो जाएगा!
- अंगुली, जो हवा में तैरेगी!

तुम्हारे दोस्तों को चकरा देने वाली—रहस्यमय आश्चर्यजनक—लेकिन करने में आसान 70 ऐसी ही अन्य मनोरंजक ट्रिक्स।

मूल्य 15/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 120
Available in English

क्विज टाइम

—आइवर यशिएल

मूल्य 24/
डाकखर्च 6/
पृष्ठ 128

जन सामान्य तथा विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी प्रश्नोत्तर शैली में लिखी प्रश्नों पर्यन्त विज्ञान इतिहास भूगोल सामान्य ज्ञान तथा फिल्म जगत से जुड़े आधारभूत 1001 प्रश्नों के सचित्र उत्तर प्रस्तुत करती है।

Also available in English

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए टैक्स-प्लानिंग

हिंदी साइज मूल्य 20 डाकखर्च 5

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

जनरुचि के 50 लघु विश्वकोशो की एक अनूठी संग्रहणीय शृंखला

☐ प्रामाणिक पाठ्य सामग्री ☐ सरस कथा शैली ☐ सैकडों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित ☐ कलात्मक प्रस्तुतिकरण ☐ फोटोटाइप सैट ☐ बढ़िया कागज/ऑफसैट छपाई ☐ बहुरंगी आवरण ☐ वाजिब दाम

Also available in English

मूल्य 20/ प्रत्येक डाकखर्च 5/ प्रत्येक

इस शृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए उसके ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार है।

इस शृंखला की सभी पुस्तकें मानव-जगत से जुड़े लगभग सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विज्ञान रहस्य, रोमांच, दर्शन, धर्म, खेल, संस्कृति, अपराध भ्रष्टाचार आदि पर विहंगम दृष्टिपात करते हुए सारगर्भित विषय-सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

इस शृंखला में प्रकाशित पुस्तकें –

विश्व-प्रसिद्ध 1 खोजें 2 अनसुलझे रहस्य 3 रोमांचक यात्राएं 4 युद्ध 5 101 व्यक्तित्व 6 धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7 खेल और खिलाड़ी 8 रिकॉर्ड्स I 9 रिकॉर्ड्स II 10 वैज्ञानिक 11 विनाश-लीलाएं 12 दुर्घटनाएं 13 गुप्तचर संस्थाएं 14 जासूस 15 प्रेरक-प्रसंग 16 चिकित्सा पद्धतियां 17 बैंक डकैतियां एवं जालसाजियां 18 जासूसी कांड 19 क्रूर हत्यारे 20 सभ्यताएं 21 रोमांस कथाएं 22 अनमोल खजाने 23 दुस्साहसिक खोज यात्राएं 24 भूत प्रेत घटनाएं 25 जन-क्रांतियां 26 कुख्यात महिलाएं 27 हस्तियों के प्रेम-प्रसंग 28 राजनैतिक हत्याएं 29 विलासी सुंदरियां 30 तख्ता पलट की घटनाएं 31 सबसे तानाशाह 32 मांसाहारी तथा अन्य विचित्र पेड़ पौधे 33 अलौकिक रहस्य 34 भिक्षक एवं पुराण कथाएं 35 भ्रष्ट राजनीतिज्ञ 36 साहसिक कथाएं 37 आतंकवादी संगठन 38 पारलौकिक चमत्कार 39 वास्तुशिल्प एवं दर्शन 40 ठग एवं जालसाज

अनजाने तथ्य जानिए

501 रोचक तथ्य

मूल्य 15/
डाकखर्च 5/-
डिमाई साइज 120 पृष्ठ

- सोडावाटर में बिलकुल सोडा नहीं होता।
- मनुष्य की रक्तवाहिनियों की कुल लम्बाई 1 00 000 मील होती है।

ऐसे ही गुदगुदाने वाले व ज्ञान विज्ञान के नए क्षितिज खोलने वाले 501 अजाने तथ्य!

आर्किटेक्ट अशोक गोयल की प्रामाणिक पुस्तकें

होम डेकोरेशन गाइड

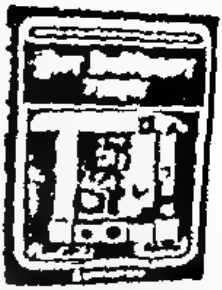

मूल्य 28/ डाकखर्च 6/

इस पुस्तक में गृह सज्जा संबंधी सभी विषयों को विस्तारपूर्वक और चित्रों सहित समझाया गया है —धर्मयुग

इस किताब की मदद से छोटी छोटी जगहों को भी अच्छी तरह सजा कर दर्शनीय बनाया जा सकता है —नवभारत टाइम्स

विचित्र दुनिया—विचित्र लोग

विश्व के विचित्र इंसान

— ए एच हाशमी

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/

बड़े साइज के 108 पृष्ठ

- दो सिर वाला अजूबा बच्चा कैसा था?
- शरीर से जड़े स्यामी भाई?
- तीन टांगों वाला व्यक्ति कैसे चलता था?
- क्या कोई व्यक्ति आधे टन का था?

ऐसी ही कितनी अन्यान्य विचित्र जानकारियां।

70 से 225 वर्गमीटर के नक्शे

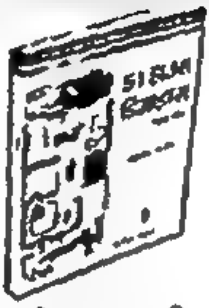

51 हाउस डिजाइस

मूल्य 48/ डाकखर्च 6/

प्रत्येक नक्शा निम्न बातों को ध्यान में रखकर बनाया गया है

- ड्राइंग डाइनिंग बैठक व बाथरूम एवं रसोईघर आदि का सही तालमेल हो
- जगह का सदुपयोग हो सभी कमरे हवादार हों व उनमें कुदरती रोशनी हो आदि।

विचित्र जन्तुओं का संसार

विचित्र जीव-जन्तु

—ए एच हाशमी

मूल्य 20/
डाकखर्च 5/

टुआटेरा तीन आंख वाला विचित्र प्राणी।
काच मेंढक जिसकी पारदर्शी त्वचा में से भीतर का सारा शरीर दीख पड़ता है।
लैंपधारी मछली जिसके सिर पर प्रकृति ने जलने वाले बल्ब दिए हैं।

प्रकार के 75 से भी अधिक विचित्र जंतु।

250 से 500 वर्गमीटर के नक्शे (फ्रण्ट एलीवेशन के डिजाइनों सहित)

माडर्न हाउस प्लान्स

मूल्य 36/ डाकखर्च 6/

- गेडी सरिये के डिजाइनों की पूर्ण जानकारी
- सजावटी पेड़ पौधों की जानकारी
- कमरों के परस्पर सही तालमेल के तरीके
- मकान सम्बन्धी प्राविधिक जानकारियां
- बिल्डिंग बाई लॉज का विवरण

बच्चों के मस्तिष्क में घुमडने वाले हजारों अनबूझे 'क्यो और कैसे' किस्म के प्रश्नों के उत्तर बताने वाला एक अनूठा प्रकाशन

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक (छ खण्डो मे)

बच्चे के मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक

जरा सी समझ आते ही बच्चे के मस्तिष्क म 'क्यो' और 'कैस' किस्म क हजारा प्रश्न घमडन लगते हैं। उचित समय पर मिल प्रश्नो के उत्तर उसके दिमाग क लिए टॉनिक का काम करत हैं जबकि उत्तर न मिलन म उसका मानसिक विकास रुक जाता है।

6 खण्डो की इस शृखला मे है

- 1300 बड़े आकार के पृष्ठ
- 1100 से अधिक चित्र
- 5 00 000 शब्दों की पाठ्य सामग्री
- 1050 प्रश्नो के सचोध उत्तर

मूल्य
पेपर बैक 32/ डाकखर्च 6/ प्रत्येक
पूरा सैट 192/ (गिफ्ट बॉक्स मे) डाकखर्च माफ

अंग्रेजी तथा 8 भारतीय भाषाओ मे प्रकाशित

प्रश्नो मे से कुछ की झलक

☐ महिलाओ की दाढी क्यो नही होती? ☐ क्या अन्य ग्रहो से लोग पृथ्वी पर आते हैं? ☐ आकाश नीला क्यो है? ☐ मुहासे क्यो होते है? ☐ टेस्ट ट्यूब बेबी क्या है ☐ सपने क्यो दिखाई देते हैं? ☐ इलेक्ट्रानिक घडी कैसे काम करती है? ☐ मिस्र म ममी कैसे बनाते थे? ☐ उडन तश्तरी क्या है? ☐ लाफिंग गैस क्या है? ☐ हाइड्रोजन बम क्या है? आदि

विशेषताए

- 50 लाख से भी अधिक पाठकों की पसद
- विद्यालयो म पुरस्कार क रूप म वितरित
- प्रत्येक खण्ड अपन आप म सपूर्ण
- पत्र पत्रिकाओ द्वारा प्रशसित

आधारभूत विषय

★ पृथ्वी एव ब्रह्माड ★ आधुनिक विज्ञान ★ वनस्पति एव पशु पक्षी जगत ★ आविष्कार एव खोजे ★ खेल एव खिलाडी ★ आश्चर्य एव रहस्य ★ सामान्य ज्ञान ★ मानव शरीर ★ भौतिक रसायन एव जीव विज्ञान आदि

Master Computer Today For A Better Tomorrow

Computers are invading every facet of a person s life—the home the office the classroom or the play ground Whether in job or business, they are opening up bright new vistas of knowledge and happiness.

– Er V K Jain

- **Computer for Beginners**
- **Basic Computer Programming**

The twin-books are a must for those who are interested in computers their function and operation but are discouraged by their complexities. All is made easy through simple language and instructive illustrations.

The books are designed for mass education as per Computer Literacy Project of NCERT and also conform to course on computers recently undertaken by C B S E

Big Size 192 & 172 pages respectively
Price Rs 36/ each Postage Rs 6/ each

A Complete Guide to PCs

★ Creates awareness about modern computer—Hardware & Software & how these can serve as productivity aids.

★ Imparts working knowledge of Computer technology Software Packages like Word Star Lotus 1 2 3 dBASE III etc. to an ordinary man avoiding technical words.

Helps in assessing the operations that equire computer

Rs 48/ Postage Rs 6/

अपना कद बढाइये

मूल्य 20/
डाकखर्च 5/
Also available in English

प्रस्तुत है कद लम्बा करने का आजमाया हुआ वैज्ञानिक अनुसधान। इसमे यूरोप और अमरीका में टेस्ट किया हुआ ऐसा सचित्र कोर्स दिया गया है जिसकी मदद से आप केवल 15 मिनट प्रतिदिन अभ्यास द्वारा कुछ ही हफ्तों में अपनी हाइट 10 सेमी तक तो बढ़ा ही सकते हैं।

जूडो कराटे

(जुजुत्सु बॉक्सिग सहित)

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/
पृष्ठ 128
Also available in English

हिन्दी म पहली बार प्रकाशित 300 म अधिक दाव पेंचा का सचित्र कोर्स। इसकी मदद म आप चाकू, लाठी भाला आदि के वार से अपना बचाव करके अपने से चार गना ताकतवर हमलावर का भी चुटकियों मे धराशायी कर सकत हैं।

आधुनिक बुनाई शिक्षा

पस्तक म 200 मे अधिक नई बनतियों से उनी वस्त्र तैयार करन की विधिया दी गई हैं। साथ में उनकी धलाई व दाग धब्बे छडाने के विभिन्न तरीके भी दिये गये हैं। मूल्य 40/ डाकखर्च 5/

Skill in correspondence ensures
Brighter Career, Faster Promotion, Sure Success in Business

Rapidex
Self Letter Drafting Course

Big size
Pages 354
Price Rs 48/
Postage Rs 6/

Whether you are an administrator or a supervisor office superintendent or a steno-typist—the skill in correspondence is an art you must master because almost every situation every occasion calls for a well-drafted letter And with this skill in hand none can stop you from getting ahead

While other books teach you to copy readymade letters given in them this course will teach you how to draft a letter of your own choice

FEATURES

- *Sentences and phrases in abundance*
- Tick mark the required ones,
- Arrange in proper order instantaneously
- Shape & mould the way you want to

.. And now make as many letters as you want on the same subject

DIVIDED UNDER 3 SECTIONS

It takes care of your personal and social letters commercial correspondence and applications for job

कोई भी भाषा सीखें

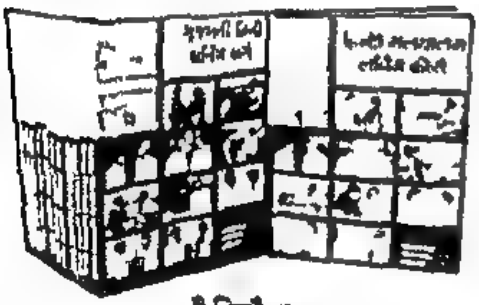

रैपिडेक्स
लैंग्वुएज लर्निंग सीरीज

इतनी सरल व ग्राह्य सीरीज कि आप कुछ ही दिनों में काम चलाने लायक कोई भी भारतीय भाषा बोलने और समझने लगेंगे

12 खण्डों की सीरीज की पुस्तकें

हिन्दी तेलुगू लर्निंग कोर्स
हिन्दी कन्नड लर्निंग कोर्स
हिन्दी तमिल लर्निंग कोर्स
हिन्दी बंगला लर्निंग कोर्स
हिन्दी गुजराती लर्निंग कोर्स
हिन्दी मलयालम लर्निंग कोर्स

इसी प्रकार प्रान्तीय भाषाओं से हिन्दी सीखने के लिए भी 6 पुस्तकें उपलब्ध

सभी पुस्तकें लगभग 240 पृष्ठों में
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 10/ डाकखर्च 6/ प्रत्येक

Books for Science Students

General Science
A series of five books

The series provides help and guidance on all the major branches of science—*Physics Chemistry Biology Geology & Astronomy*

Price 15/ each Postage 4/ each

Quiz Series
(Work Books for Physics, Chemistry Biology & Science)

Each book in this series contains 1000 quiz type questions covering almost every branch of particular science with answers

Price 12 each Postage 4 each

Know Science

Know Science offers pupils in the 10 13 age range 1000 questions in the general field of science

Price Rs 12/ Postage Rs 4/

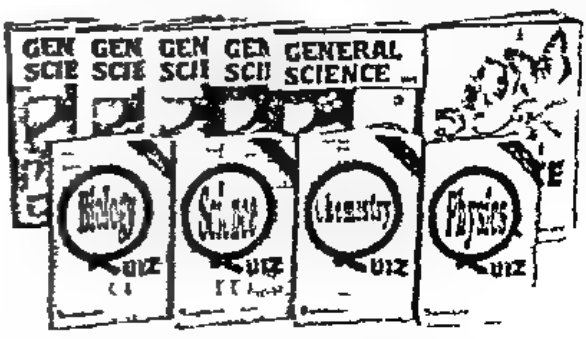

खेल-खेल में जादू सीखो, खेल साइंस के खेलो—ज्ञान बढ़ाओ, रौब जमाओ, मित्रों में यश लेलो

101 मैजिक ट्रिक्स

—आइवर यूशिएल

इस सचित्र पुस्तक में दी गई हैं—ऐसी 101 शानदार व जानदार ट्रिक्स जिनका समझना जितना सरल है उनका प्रदर्शन उससे भी आसान। बस। जरूरत है तो थोड़े से अभ्यास के साथ चन्द ऐसी चीजो की जो तम्ह आसानी से उपलब्ध हो जाएगी।

ट्रिक्स की एक झलक ◘ टूटी माला फिर तैयार ◘ गिलास का पानी गायब करना ◘ रूमाल आग से न जले ◘ सर पर रखा हैट स्वय उछले आदि

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 120
Also available in English

101 साइंस गेम्स

—आइवर यूशिएल

विज्ञान के 101 खेला की यह पस्तक खल ही खेल मे कुछ एसे वैज्ञानिक उपकरण बनाना सिखा दती है जो बनगे तो खिलौन ही पर बच्चा का बिलक्ल असली उपकरण जैसा ही आनद देग। जैस—**बैरोमीटर, विद्युत चुम्बक, हैक्टोग्राफ, स्टीम टरबाइन, इलेक्टोस्कोप आदि**

इनके अलावा बहत से अन्य रोचक प्रयाग जैसे—**कागज के बर्तन मे पानी उबालना, भाप से नाव चलाना आदि** 101 मनोरजक जादू से प्रतीत होने वाले वैज्ञानिक खेल।

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 120
English edition also available

Learn science while you play

Science Quiz Book

- ★ Most useful for 10+2 Courses
- ★ Covers the most modern topics of science like Computer/Robots/ Space/ Electronics/ Laser/Maser etc
- ★ For better performance in Viva examinations
- ★ To meet the challanges of Science Quiz programmes on Radio/TV
- ★ For Competetions like M B B S Engineering etc
- ★ All interviews connected with scientific services/posts

rice 24/ Postage ◘ Pages 112
Also available in Hindi

Get your child ready for public school

CHILDREN S PICTURE DICTIONARY

All in colour

- Successfully prepares your child for admission in a Public School
- Contains 1500 words of daily use
- Each & every word has been explained with colourful pictures & small & simple sentences

The Dictionary is really a treasure trove of knowledge for your children wherein they will discover the names of • Birds • Animals • Fruits • Vegetables • Colours • Parts of Body etc.

Giant Size Price 24/ Postage 6

घर बैठे

[illegible]

रैपिडैक्स होम टेलरिंग कोर्स

(लेखिका श्रीमती आशारानी व्होरा)

घरभर की पोशाकों अर्थात् नन्हे-मुन्नों की नेपकिन से लेकर पुरुषों की कमीज पैंट तक कुल मिलाकर 175 से अधिक डिजाइनों एवं नमूनों की पोशाकों की प्लानिंग कटाई व सिलाई की सचित्र जानकारी।

- मनमोहक फ्रॉक लुभावनी मैक्सियां सलौनी नाइटी नाइट सूट व गाउन आकर्षक टाप्स नन्हे मुन्नों के रंगारंग कपड़े युवक युवतियों के लिए पैंट बैल बाटम शर्ट बशर्ट व जीन्स
- गृह सज्जा के लिए परदे कुशन आदि
- पुराने कपड़ों से बच्चों के कपड़े बनाना
- भांति भांति की डाटस चन्नट प्लीट्स जेब आस्तीन कालर योक बटन आदि
- मशीन के कलपुर्जों की जानकारी भी

300 से अधिक रेखा व छायाचित्रों से समुज्जित

मूल्य 48/ डाकखर्च 6/

[illegible]

चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी ऑफ नॉलिज

400 पृष्ठों की सुबोध भाषा में लिखी इस पुस्तक में बहुरंगी चित्रों से युक्त 1200 प्रविष्टियां (entries) हैं जो निम्नलिखित विषयों से संबंधित हैं —

[illegible]

[illegible]

Also available in English

Published by Pustak Mahal in collaboration with M/s Bonnier and Lidman (Sweden)

ट्रिक फोटोग्राफी एड कलर प्रोसेसिंग

—ए एच हाशमी

बोतल के भीतर आदमी, हथेली पर नाचती औरत, सेब मे से झाकते बच्चे या पत्ते पर प्रेमिका का फोटो उतारिए!

ट्रिक फोटोग्राफी पर हिंदी में प्रथम पुस्तक—जिसमें ट्रिक और इफेक्ट की पूरी पूरी प्रैक्टिकल जानकारी चित्रों के साथ दी गई है इसके अलावा कलर फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग की प्रैक्टिकल जानकारी भी इसमें है जिसकी मदद से आप निगेटिव या ट्रांसपेरैंसी की प्रोसेसिंग कर सकते हैं और डिमाई साइज पृष्ठ 248
अच्छे कलर एन्लार्जमैन्ट भी बना सकते हैं। मूल्य 32/ डाकखर्च 6/

तांत्रिक सिद्धिया

मूल्य 24/ डाकखर्च 5/

मूल्य 40 डाकखर्च 6/

मत्र-अध्येताओ तांत्रिको एव साधको के लिए ऐसी पथ-प्रदर्शक पुस्तक जिसमे दुष्कर तांत्रिक क्रियाओ का सरल एव सचित्र विवरण है।

मत्र रहस्य

मत्रा के मूल स्वरूप मत्र चैतन्य मत्र कीलन उत्कीलन, मत्र ध्वनि मत्र विनियाग एव मत्रा के सफल प्रयागा के लिए सचित्र ग्रन्थ।

Believe It or Not!

ससार के 1500 अद्भुत आश्चर्य

पुस्तक में कुदरत के चमत्कारों अद्भुत ऐतिहासिक घटनाओं बादशाहों की अजीबो-गरीब सनकों साहस और वीरता क बेमिसाल कारनामो पृथ्वी समुद्र और आकाश के जीव जन्तुओं और वनस्पतियों की अनजानी विचित्रताओं का सचित्र वर्णन किया गया है।

मूल्य 36/ डाकखर्च 6/ पृष्ठ 224

- दुर्गा महिमा
- लक्ष्मी महिमा
- शिव महिमा
- गणेश महिमा
- विष्णु महिमा
- हनुमान महिमा

पुस्तकों में महिमाओं के अतिरिक्त पूजा के मत्र नैवेद्य आदि की विधिया भी हैं।

मूल्य 18/ डाकखर्च 5/

हमारे पूज्य तीर्थ

बड़े 208पृष्ठ
मूल्य 36/
डाकखर्च 6/

यह पस्तक आपको तीर्थों की धार्मिक ऐतिहासिक पष्ठभूमि उपयोग म आन वाल साज-सामान आने जाने क मार्ग का निर्देश ठहरने आदि की वाछित जानकारी प्रदान करगी।

योगाभ्यास द्वारा बिना दवा रोगों से छुटकारा पाइये

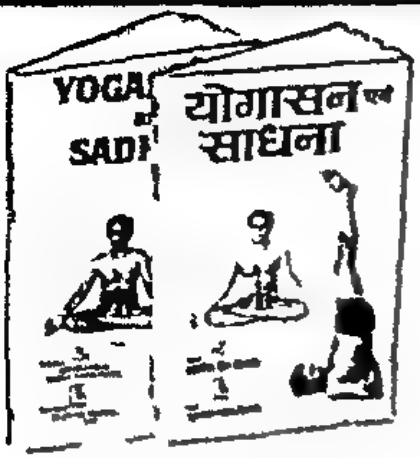

योगासन पर सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तक

डिमाई साइज 120 पृष्ठ मूल्य 18/ डाकखर्च 4/
Also available in English

योगासन एवं साधना

विश्व-प्रसिद्ध "भारतीय योग संस्थान" के योगाचार्यों द्वारा लिखित एक अनूठी पुस्तक
★ आसनों का सुबोध व सचित्र विवरण ★ प्राणायाम विधि ★ चक्षु-व्यायाम ★ पौष्टिक भोजन ★ योगासनों द्वारा रोग निदान आदि

भारतीय योग संस्थान की सैकड़ों शाखाओं में प्रतिदिन हजारों योगाभ्यासी रोगों से छुटकारा पा जीवन का आनन्द ले रहे हैं।

English-Hindi Sentence Dictionary
अंग्रेजी-हिन्दी वाक्य डिक्शनरी (वाक्यों सहित)

हिन्दी में यह अपने ही प्रकार की पहली ऐसी डिक्शनरी है जिसकी शब्दावली वाक्यों के रूप में बोलती है और अपने पाठकों को उसकी व्याकरण-रचना से परिचित कराकर उसका सही-सदर्भों में प्रयोग भी सिखाती है।

प्राय प्रयोग मे आने वाले अग्रजी के 4000 शब्दो का हिन्दी म उच्चारण, हिन्दी-अथ तथा उनका अग्रेजी के वाक्यो मे प्रयाग सिखाने वाली अपने प्रकार की पहली डिक्शनरी।

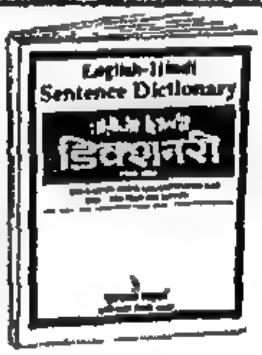

मूल्य 28/
डाकखर्च 6/
पृष्ठ बड़े 154

अंग्रेजी मराठी संस्करण भी उपलब्ध

दिमाग तेज कीजिए

101 दिमागी कसरते

हरीश चद्र ससी

सिर को खजलाने के लिए विवश कर देने वाली ऐसी पहेलीनमा चनौतिया जिनका हल करने की कोशिश मे जहा एक ओर आपका मनोरजन होगा वही दूसरी ओर आपका दिमाग भी तेज होगा। बच्चो जवानो तथा बूढ़ो—सभी के लिए मजेदार 101 रोचक दिमागी कसरत

Also available in English
मूल्य 18/ डाकखर्च 5/

My Picture Dictionary

For Nursery Classes
All illustrated 48 multi colour pages

Price Rs 12/
Postage Rs 4/

वृहद् हस्तरेखा शास्त्र

- आप स्वय अपने हाथ की रेखाए पढ़कर अपना भविष्यफल जान सकत हैं। किसी पण्डित अथवा ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नही है।
- हस्तरेखा के 240 विभिन्न योगों का पहली बार प्रकाशन जैस—आपके हाथ मे धन सपत्ति का योग पुत्र योग विदश-यात्रा योग आदि हैं या नही?
- आपक हाथ की रेखाए क्या कहती हैं? कौन से व्यापार से आपको लाभ होगा? नौकरी म तरक्की कब तक होगी? पत्नी कैसी मिलेगी? इत्यादि सैकडों प्रश्नो के उत्तर।

मूल्य 40/ डाकखर्च 6/
Also available in English

प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म

- पुस्तक में हिप्नोटिज्म को सरल सरस ढग से चित्रो द्वारा समझाया गया है जिससे साधारण पाठक भी एक अच्छा सम्मोहन विशेषज्ञ बन सकता है।
- पुस्तक मे हिप्नोटिज्म के प्रकार प्रयोग शक्ति, हिप्नोटिज्म के सिद्धात, त्राटक सम्मोहन के तथ्य आदि पर पूर्ण प्रामाणिकता क साथ सचित्र विवरण है।
- रोग निवारण कष्ट दूर करने व जीवन मे प्रतिदिन आने वाली बाधाओं व आपदाओं के निराकरण म इस पुस्तक मे दिया गया विवरण पूर्णतया उपयोगी है।

डिमाई साइज 266 पृष्ठ मूल्य 40/ डाकखर्च 6/
Also available in English

हार्पर के प्रसिद्ध डाक्टरो एव विशेषज्ञों द्वारा लिखित प्रसिद्ध सिरीज

पॉकेट हैल्थ गाइड्स
(अब हिन्दी मे भी उपलब्ध)

पॉकेट हैल्थ गाइडस इन बीमारियों के कारणा जटिलताओं सावधानियों तथा रोकथाम क उपायो के बार म आपका ज्ञानवर्द्धन करगी।

मूल्य 8/ प्रत्येक
डाकखर्च 4/
प्रत्येक

हिन्दी मे 16 तथा अगेजी में 18 हैल्थ गाइड्स

- *एलर्जी (Allergies)*
- *रक्तहीनता (Anaemia)*
- *सधिशोथ एवं वतिया (Arthritis & Rheumatism)*
- *दमा (Asthma)*
- *पीठ का दर्द (Back Pain)*
- *बच्चों के रोग (Children s Illnesses)*
- *रक्त सचार की समस्याएं (Circulation Problems)*
- *अवसाद और चिंता (Depression & Anxiety)*
- *मधुमेह (Diabetes)*
- *उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure)*
- *हृदय रोग (Heart Trouble)*
- *रजोनिवृत्ति (The Menopause)*
- *अधसीसी का दर्द (Migraine)*
- *पेप्टिक अल्सर (Peptic Ulcers)*
- *तनावपूर्ण मासिक (Pre-Menstrual Tension)*
- *त्वचा रोग (Skin Troubles)*
- *Cystitis • Hysterectomy*

Out with all Stains

Spot Check

Straightforward tips to cope with all types of stains. A full section on fabrics with a comprehensive chart. Tackle stains on Wallcoverings, Carpets Pots Furniture Metals etc.

यह पुस्तक हिन्दी में भी उपलब्ध है।

Price Rs 18/ Postage Rs 5/

घर-बैठे ब्यूटी क्लीनिक

होम ब्यूटी क्लीनिक

–परवेश हांडा

Also available in English

घर-बैठे ब्यूटी क्लीनिक जैसे मेकअप की विधिया सिखाने वाली एक ऐसी पुस्तक जिसमे त्वचा की देखभाल शरीर को सुडौल बनाने सबधी व्यायाम तथा आकर्षक हयर स्टायल्स आदि की सपूर्ण जानकारी दी गई है।

बड़े 140 पृष्ठ मूल्य 28/ डाकखर्च 6/

घर-उपयोगी नुक्ते

गृह-उपयोगी नुक्ते

(Home Hints)

Also available in English

चीजों के लबे समय तक बिना सडे-गले भडारण की विधिया बोतलो, टी-पॉट आदि की सफाई सहित हजारो नुक्तों का एक बहुरगी सचित्र सकलन।

मूल्य 18/ डाकखर्च 5/

आशारानी व्होरा के हेयर स्टाइल्स

मॉडर्न हेयर स्टायल्स

–आशारानी व्होरा

मूल्य 24/ डाकखर्च 6/

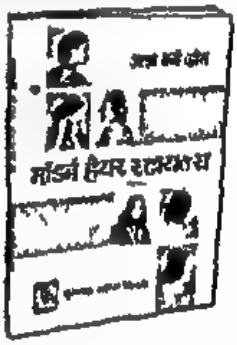

इस पुस्तक की मदद से किसी भी प्रकार की हयर सैटिंग घर में ही कीजिए। बॉय कट बॉब कट राउण्ड कट, स्ट्रेट-कट फीजर कट स्टैप्स पोनी टेल रिंगलट्स शाल्डर कट शग-स्टायल या स्विच सज्जा–

लेडीज स्लीमिंग कोर्स

लेडीज स्लीमिंग कोर्स

केवल 15 मिनट रोज के इस कोर्स की मदद से आप अपनी कमर और पेट पर चढ़ी फालतू चरबी शीघ्र ही घटा सकती हैं और अपनी कमर का नाप पाच दिन में सात-आठ सेंटीमीटर तक कम कर सकती हैं। ***Also available in English***

मूल्य 20/- डाकखर्च 5/

बेबी हेल्थ गाइड

बेबी हेल्थ गाइड

–आशारानी व्होरा

यह गाइड बच्चों से सबधित सभी विषयो का एक अनूठा एनसाइक्लोपीडिया है, जिसमें उनके शारीरिक रोगों से लेकर उनके मनोविज्ञान तक के सभी पहलुओं को सविस्तार समझाया गया है।

फोटोग्राफ्स 140 रेखाचित्र 42 बड़ा साइज

मूल्य 40/ डाकखर्च 6/

आइये तराशें अपने शरीर को

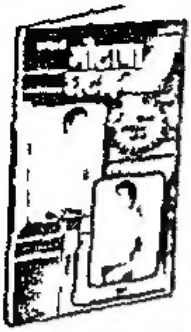

20 दिन में

मोटापा घटाइये

Also available in English

मोटापा भयकर बीमारियों की जड है सैक्स क्रीडा में बाधक है सेहत के लिए अभिशाप है। केवल 15 मिनट नित्य का कोर्स लगातार 20 दिन तक करिए, आपको आश्चर्यजनक फर्क नजर आएगा।

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 72

बाटिक कला सीखिए

बाटिक कला

बड साइज के 120 पृष्ठ

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/

घर की सजावट के साज सामान से लेकर पहनन क वस्त्रा तक पर बाटिक कला का प्रयाग कर—पर्दे, मेजपोश, टीकोजी, रेडियो कवर, चादरे कुशन, साडी-ब्लाउज आदि पर विभिन्न प्रकार के रग बिरगे डिजाइन बना सकत हैं।

ड्राइग तथा पेण्टिग कोर्स

ड्राइग तथा पेण्टिग कोर्स

—ए एच शामी

इस कार्स की मदद स आप कछ ही दिना म आकृतिया क एक्शन म भर चित्र तथा सीन सीनरिया वाटर-कलर आयल कलर एक्रेलिक पटिंग हिन्दी अग्रजी लेटरिंग आदि सीख कर लाभान्वित हो सकत हैं।

पष्ठ 144 मूल्य 20/ डाकखर्च 5/

प्राथमिक उपचार (First Aid)

प्राथमिक उपचार (First Aid)

Also available in English

मूल्य 18/ डाकखर्च 5/

पस्तक म डाक्टरी सहायता उपलब्ध होन तक दिल का दोरा पडने करट लगन विषाक्त भाजन खान जल जान चाट मे निरतर खन बहन हडडी टटन आदि जैसी अनक आकस्मिक दघटनाआ म उपचार की विधिया दी गई हैं।

Bring Greenery Indoors

House Plants

Price Rs 18/
Postage Rs 5/

Tips on indoor greenery Get to know all about choosing buying watering and feeding House plants Bottle gardens... Flowering and Foliage plant from BULBS to BONSAI

Full of Colourful Illustrations

घरेलू रसोई

भारतीय व्यजन

—कुमुदिनी मुशी

मूल्य 12/ डाकखर्च 4/

पराठे पूरी सब्जिया बाटी कढी सपने सलाद चटनी मुरब्बे अचार खीर हलवा डोसा इडली कचौरिया शरबत आमलेट आदि बनाने की विधिया।

जूनियर साइंस एनसाइक्लोपीडिया

(Junior Science Encyclopedia)

मूल्य 240/ डाकखर्च 8/

256 पृष्ठों में 800 से भी अधिक रंगीन चित्रों एवं 80 000 शब्दों की पाठ्य-सामग्री से युक्त प्रस्तुत एनसाइक्लोपीडिया वैज्ञानिक विषयों पर लिखा गया एक अमूल्य संदर्भ ग्रंथ है। बच्चे की हर 'क्यों', 'कैसे', और 'कहां' का उत्तर देने में सक्षम एक संग्रहणीय ग्रंथ।

पांच खंड

1 पृथ्वी एवं ब्रह्माण्ड 2 नाप गति एवं ऊर्जा 3 प्रकाश दृष्टि तथा ध्वनि 4 इलेक्ट्रानों की उपयोगिता 5 खोज एवं आविष्कार।

Published in India in collaboration with Hamlyn Publishing London

मॉडर्न कुकरी बुक

भारतीय एवं पश्चिमी स्टायल में किचन सैटिंग के 15 से अधिक फोटोग्राफस समाइयर के आवश्यक सामान व आधुनिक उपकरणों सहित।

बड़े साइज के
148 पृष्ठ
मैकडी रेखा व
छपा चित्र
मूल्य : 20/
डाकखर्च 5/
Also available in English

- महमानों का स्वागत कैसे कर परोसने के क्या-क्या तरीके हैं व्यंजनों को प्लेटों में कैसे सजाएं तथा डायनिंग टेबल पर प्लेटों व क्रॉकरी आदि का कैसे सजाएं।
- दैनिक नाश्ते सब्जियां तथा विशेष अवसरों के लिए मीठे व नमकीन विशिष्ट पकवानों के साथ साथ जैम मरब्बा जैली आइसक्रीम कल्फी स्क्वैश फ्रूट कस्टर्ड अचार चटनी मांस सलाद सूप सैंडविच और फ्रूट कॉकटेल आदि व्यंजनों को बनाने की सचित्र विधियां।

एक ऐसा चमत्कारिक आविष्कार जिसके उपयोगों ने आज सारे संसार में धूम मचा दी है। लेसर क्या है तथा लेसर के 50 से भी अधिक उपयोगों की सचित्र जानकारी।
बड़े साइज के
112 पृष्ठ
मूल्य 24/
डाकखर्च 6/

बच्चों के 2001 नाम

मूल्य 10/ डाकखर्च 4/
(In Two Colour)

[illegible]

51 महान आविष्कार

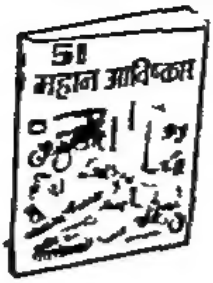

पुस्तक में आज के विज्ञान और आधुनिक सभ्यता का आधार समझे जाने वाले हजारो साल पहले के पहिए के आविष्कार से लेकर आधुनिक युग के राडार, कम्प्यूटर, रॉकेट आदि तक के आविष्कारों का सचित्र वर्णन किया गया है।

बड़े 168 पृष्ठ मूल्य 30/ डाकखर्च 6/

[illegible]

हम जीव-जन्तु

लेखक—रवि लायट्
भूमिका—रामेश बेदी

जीव-जन्तुओं के ससार के 50 सदस्यों की रोचक आत्मकथाए, उनकी जबानी सुनिए—

* वे किस जात बिरादरी के हैं?
* उनकी दिनचर्या क्या है?
* वे क्या खाते-पीते हैं? आदि-आदि

बड़े 116 पृष्ठ मूल्य 20/ डाकखर्च 5/

[illegible]

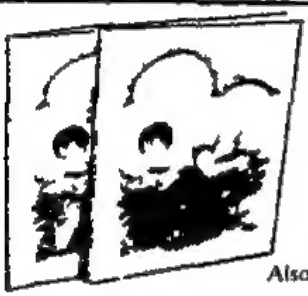

बेबी रिकार्ड एलबम

Also available in English

इसम आप अपने बच्च क ज म से अगल पाच वर्ष तक क सी-दर सीढी विकास (दत अकरण पहली बार बठना व चलना आदि) ज म सबधी विवरणो (ज म तिथि जन्म का वजन, लबाई व कडनी आदि) के रिकाड क साथ ही प्रत्यक अवसर क स्मरणीय फोटो भी सजा सकत हैं।

मूल्य 45/ डाकखर्च 6/-

[illegible]

इगलिश-हिन्दी मॉडर्न लैटरिग

लेखक ए एच हाशमी

- अक्षरा की बनावट का वर्गीकरण तथा बसिक बनावट स्टाक्स लगान क तरीक पन स्टील तथा फ्लट ब्रश द्वारा लेटरिग।
- अक्षराकन क मूल सिद्धात। सभी तरह की अग्रजी हिन्दी लटरिग करन की विधिया तथा सकडा आकषक नमन।

172 पष्ठ मूल्य 36/ डाकखर्च 6/

[illegible]

- सितार सीखिए
- गिटार सीखिए
- वायलिन सीखिए—
- हारमोनियम सीखिए
- मेंडोलिन व बेजो सीखिए
- तबला व कोगो-बोगो सीखिए

मूल्य 22/ डाकखर्च 5/ प्रत्येक

सगीताचार्य श्री रामावतार 'वीर' रचित

युवा पीढ़ी के चहेते वाद्य जिन्हें बिना शिक्षक के सरलता से सीखा जा सकता है और हमारे इन कोर्सों की मदद से आप कछ ही दिनों में फिल्मी व धनें निकालन लगगे।

PUSTAK MAHAL

ORDER FORM

Please send me the following books by V P P My address is given below I promise to pay the amount of V.P P on its presentation I have sent Rs. ..... by M O./Draft No..... Please adjust this amount in the value of books

1 _____

2 _____

3 _____

4 _____

5 _____

- Please note that it is uneconomical for us to send books by V.P.P Ask by V.P.P only when you fail to get locally
- Please do not refuse to accept the V.P.P Honour it and write to us if you have any complaint.
- The V.P.P charges given against each book is subsidised by 20% to 40% in actuals. Besides this we spend Rs. 3/- on each packet on its packing & forwarding

Name & Address

PIN